चैत्र मास शुक्ल पक्ष, 22 वर्ष, अंक 99, पृष्ठ 8, मूल्य 3.00

अखंड भारत संदेश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज | सोमवार 08 मई 2023 | विश्व निर्माण एवं मानव विकास को द्रुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

यह देश की गरिमा की लड़ाई है: बजरंग पुनिया, केंद्र सरकार को दी चेतावनी

पहलवानों को मिला खापों-किसानों का समर्थन

नई दिल्ली: दिल्ली के जंतर-मंतर पर प्रदर्शन कर रहे पहलवानों के साथ एकजुटता दिखाने के लिए विभिन्न राज्यों से किसानों के राष्ट्रीय राजधानी में मार्च करने के बीच स्टार पहलवान और ओलंपियन बजरंग पुनिया ने रविवार को कहा कि उनकी लड़ाई 'देश की गरिमा' के लिए है।

"समर्थन देने वालों का शुक्रगुजार हूं": जंतर-मंतर के पास विरोध स्थल पर पुनिया ने कहा, "जब तक हमें न्याय नहीं मिलता, हम विरोध करेंगे। यह हमारे देश की बेटियों और माताओं के सम्मान और देश की गरिमा की लड़ाई है।" उन्होंने कहा, "हम उन लोगों के शुक्रगुजार हैं, जो समर्थन देने के लिए यहां आ रहे हैं। जो लोग हमारे साथ एकजुटता दिखाने के लिए यहां आ रहे हैं, मैं उनसे कहूंगा कि कृपया शांति सुनिश्चित करें।"

पुलिस प्रशासन ने लोगों को परेशान न करने का किया आग्रह: ओलंपिक कांस्य पदक विजेता ने पुलिस प्रशासन से उन लोगों को परेशान या प्रताड़ित नहीं करने का आग्रह किया, जो प्रदर्शनकारी पहलवानों के साथ खड़े होने के लिए साइट पर आ रहे हैं। उन्होंने कहा, "हमें पूरे देश से समर्थन मिल रहा है। महाराष्ट्र, राजस्थान और इंदौर के लोग हमारे साथ खड़े होने के लिए यहां पहुंच रहे हैं।"

बृजभूषण शरण सिंह को गिरफ्तार करने की मांग: भारत के कुछ शीर्ष पहलवान, जिनमें विनेश फोगट, बजरंग पुनिया और साक्षी मलिक शामिल हैं, यौन उत्पीड़न के आरोपों को लेकर भारतीय कुश्ती महासंघ (डब्ल्यूएफआई) के प्रमुख और भाजपा सांसद बृजभूषण शरण सिंह के खिलाफ विरोध प्रदर्शन कर रहे हैं और उनकी गिरफ्तारी की मांग कर रहे हैं। हालांकि, छह बार के सांसद ने आरोपों से इनकार किया है। सुप्रीम कोर्ट के नोटिस के बाद दिल्ली पुलिस ने 28 अप्रैल को उनके खिलाफ दो प्राथमिकी दर्ज कीं। इस बीच, किसानों के मार्च से पहले जंतर-मंतर के पास पहलवानों के धरना स्थल पर भारी सुरक्षा तैनात की गई थी।

पहलवानों के समर्थन में विरोध प्रदर्शन करेगा संयुक्त किसान मोर्चा: इससे पहले, संयुक्त किसान मोर्चा ने घोषणा की थी कि वे पहलवानों के समर्थन में दिल्ली सहित देश भर में विरोध प्रदर्शन करेंगे। शनिवार को एसकेएम के एक बयान के अनुसार, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली और उत्तर प्रदेश के संगठन के कई नेता रविवार को जंतर-मंतर पर धरना स्थल का दौरा करेंगे और प्रदर्शनकारी पहलवानों को समर्थन देंगे।

"सत्ता में रहने वाले व्यक्ति के खिलाफ खड़ा होना बहुत मुश्किल"

टिकरी बॉर्डर पर भारतीय कुश्ती महासंघ (डब्ल्यूएफआई) के प्रमुख और बीजेपी सांसद बृजभूषण शरण सिंह पर लगे यौन उत्पीड़न के आरोपों पर किसान नेता जोगिंदर सिंह ने कहा, "वे सत्ता में हैं और एक ऐसे व्यक्ति के खिलाफ खड़ा होना बहुत मुश्किल है जो इतने लंबे समय तक अपनी शक्ति और पद का दुरुपयोग कर रहा है, लेकिन हम इसके खिलाफ लड़ेंगे।" बता दें, संयुक्त किसान मोर्चा ने निरस्त कृषि कानूनों के खिलाफ राष्ट्रीय राजधानी की सीमाओं पर किसानों के साल भर के विरोध प्रदर्शन का नेतृत्व किया था।

जरूरत पड़ी तो दोबारा से ट्रैक्टर-ट्रॉली लेकर दिल्ली के लिए रवाना होंगे : टिकैत

बागपत: बागपत जिले के जाट भवन पहुंचे भाकियू राष्ट्रीय अध्यक्ष नरेश टिकैत ने सरकार पर हमला बोला है। उन्होंने कहा कि किसान, मजदूर और पहलवान 2024 के लोकसभा चुनावों में जवाब देने का काम करेंगे। कहा कि हमारे हाथ में अभी भी सबकुछ है। जरूरत पड़ी तो दोबारा से ट्रैक्टर ट्रॉली लेकर दिल्ली के लिए रवाना होने का भी काम करेंगे। कहा है कि सरकार तानाशाह बन चुकी है। दिल्ली में चल रहे पहलवानों के धरने को समझौते के साथ बंद कराना चाहिए, जिससे सभी का सम्मान हो।नरेश टिकैत रविवार को बागपत के दिल्ली सहारनपुर हाईवे पर स्थित जाट भवन में पहुंचे। इस दौरान उन्होंने जाट किसानों के साथ वार्ता की।

दिल्ली जंतर मंतर पर चल रहे धरने को लेकर उन्होंने कहा कि भारत सरकार तानाशाह बन चुकी है। सरकार किसानों, मजदूरों, गरीबों और पहलवानों के साथ गलत तरीके से कार्य कर रही है। सरकार को पहलवानों के बीच बैठकर मामले का समझौता कराना चाहिए। जिस तरह दिल्ली पुलिस ने रात में पहलवानों के साथ मारपीट की है वो दशार्ता है कि भारत सरकार की मंशा क्या है। वार्ता के बाद नरेश टिकैत अपने समर्थकों के साथ दिल्ली के लिए रवाना हो गये।

सूडान से लौटे 210 भारतीयों से मिले पीएम

मोदी ने कहा- दुनिया में अगर कोई भी हिंदुस्तानी फंस जाता है तो हम सोते नहीं हैं

बेंगलुरु: प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रविवार को कर्नाटक में सूडान से आए लोगों से बातचीत की। हक्की पिक्की जनजाति के 210 सदस्यों को ही ऑपरेशन कावेरी के तहत सूडान से शिवमोगा लाया गया। पीएम ने बातचीत करते हुए उनके अनुभवों को सुना। इस दौरान पीएम मोदी ने कहा कि दुनिया में अगर कोई भी हिंदुस्तानी फंस जाता है तो हम सोते नहीं हैं। दरअसल, सूडान में पिछले कई दिनों से मिलिट्री और पैरामिलिट्री के बीच लड़ाई जारी है। इस दौरान वहां कई भारतीय फंस गए। उन्हें वापस लाने के लिए भारत सरकार ने ऑपरेशन कावेरी चलाया। इसके तहत अब तक 4000 से ज्यादा लोगों को लाया जा चुका है।

पीएम का सवाल: सबसे पहले मुझे बताइए, कैसे मुसीबत शुरू हुई? आपको कब पता चला? कहां थे उस समय आप?

जवाब: हम सारे 15 से 20 लोग एक होटल में थे। अचानक तेज धमाका हुआ।

चक्रवाती तूफान 'मोका' का अलर्ट

नई दिल्ली: आईएमडी ने चक्रवाती तूफान 'मोका' को लेकर अलर्ट अंडमान और निकोबार द्वीप समूह में अलर्ट जारी किया है। मौसम विभाग ने बताया है कि 8 से 12 मई के बीच अंडमान और निकोबार द्वीप समूह में भारी बारिश की संभावनाएं हैं।

इस दौरान तेज हवाएं भी चलने की उम्मीद है।

आईएमडी का चक्रवाती तूफान को लेकर अलर्ट: मौसम विभाग ने बताया कि दक्षिण-पूर्व खाड़ी पर एक चक्रवाती प्रसार के असर से अगले कुछ दिनों में एक चक्रवाती तूफान आ सकता है।

2024 की गणतंत्र दिवस परेड में केवल महिलाएं शामिल होंगीं

नई दिल्ली: 26 जनवरी 2024 को कर्तव्य पथ पर होने वाली गणतंत्र दिवस परेड में सिर्फ महिलाओं को शामिल किया जाएगा। परेड के अलावा मार्चिंग दस्ता, झांकी और सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भी सिर्फ महिलाएं ही नजर आएंगीं। रक्षा मंत्रालय ने मिलिट्री फोर्सेस और परेड में शामिल होने वाले अन्य विभागों को चिट्ठी लिखकर इसकी जानकारी दी है।

केंद्र सरकार ने पिछले कुछ साल में आर्म्ड फोर्सेस में जेंडर इक्वैलिटी को बढ़ावा देने के लिए महिलाओं को कमान देने और भविष्य की लीडरशिप के लिए उन्हें तैयार करने के मकसद से कई बड़े फैसले लिए हैं। पिछले महीने 29 अप्रैल को पांच महिला अधिकारियों को आर्टिलरी रेजिमेंट में शामिल किया गया है। इन्हें पाकिस्तान और चीन की सीमा पर नियुक्त किया गया है।

7 फरवरी की बैठक में लिया गया था फैसला: गणतंत्र दिवस परेड में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने का फैसला 7 फरवरी को हुई डी-ब्रीफिंग बैठक में लिया गया था। रक्षा सचिव गिरिधर अरमाने की अध्यक्षता में हुई बैठक में सेना, नौसेना, वायु सेना, गृह मंत्रालय, आवास एवं शहरी मामलों के मंत्रालय, संस्कृति मंत्रालय और शिक्षा मंत्रालय के वरिष्ठ प्रतिनिधियों ने भाग लिया था। विचार-विमर्श के बाद यह निर्णय लिया गया कि गणतंत्र दिवस परेड 2024 में कर्तव्य पथ पर परेड के दौरान होने वाली टुकड़ियों (मार्चिंग और बैंड), झांकी और अन्य प्रदर्शनों में केवल महिला प्रतिभागी शामिल होंगीं। मार्च में रक्षा मंत्रालय ने इस संबंध में लेटर भी भेजा था। भारत ने इस साल 26 जनवरी 2023 को आयोजित 74वें गणतंत्र दिवस परेड में केरल, कर्नाटक, तमिलनाडु, महाराष्ट्र और त्रिपुरा की झांकी में 'नारी शक्ति' प्रमुख थीम रखी थी।

यूपी: एटीएस ने पीएफआई से जुड़े 70 संदिग्धों को हिरासत में लिया

लखनऊ। इस्लामिक कट्टरपंथी संगठन पापुरलर फ्रंट आफ इंडिया (पीएफआई) से जुड़े करीब 70 संदिग्ध लोगों को उत्तर प्रदेश के विभिन्न जिलों से एंटी टेररिस्ट स्क्वायड (एटीएस) की टीमों ने हिरासत में लिया है। देश विरोधी गतिविधि को लेकर हुई इस कार्रवाई की गोपनीयता बनाए रखी गयी है। एटीएफ मुख्यालय से मिली जानकारी के मुताबिक, भारत में वर्ष 2022 में पीएफआई के बैन लगाये जाने के बाद भी उससे जुड़े लोग गतिविधियों को संचालित कर रहे थे। तमाम साक्ष्यों के आधार पर उत्तर प्रदेश के विभिन्न जिलों में पीएफआई से जुड़े 211 संदिग्धों को चिन्हित किया गया। इसके बाद एटीएस के अपर पुलिस अधीक्षक (पूर्वी) नोडल आधिकारी बनाते हुए एटीएस की फील्ड इकाई नोएडा, सहारनपुर, मेरठ, मुरादाबाद, कानपुर, लखनऊ, बहराइच, वाराणसी सहित आजम को सक्रिय कर छापेमारी की गई। इस छापेमारी 30 विशेष टीमों का गठन किया गया था। पूर्व में गिरफ्तार किए गए आठ अभियुक्तों के विरुद्ध की गई कार्रवाई के क्रम में प्रचलित इस गोपनीय अभियान के दौरान 50-50 हजार के दो इनामी अपराधी वाराणसी कमिश्नरेट के थाना लोहता में दर्ज अभियोग में वांछित परवेज अहमद और रईस अहमद को भी गिरफ्तार किया है। अभी तक की गई इस कार्रवाई में संदिग्ध व्यक्तियों से लगभगत 70 व्यक्तियों को पूछताछ के लिए थाने पर लगाया गया है। पूरे प्रदेश में हुई कार्रवाई के दौरान लखनऊ से नौ, गाजियाबाद से 10, वाराणसी से आठ, शामली से 11, बिजनौर में पांच, मेरठ में चार, मुजफ्फरनगर, बाराबंकी,आजमगढ़ से तीन-तीन, देवरिया, बहराइच, कानपुर नगर से दो-दो और सीतापुर, बलरामपुर, बुलंदशहर, सहारनपुर, मुरादाबाद, रामपुर और अमरोहा से एक-एक संदिग्धों को उठाया है।

निकाय चुनाव के दूसरे चरण में मुख्यमंत्री योगी की चल रही धुआंधार रैली

जातिवादी-परिवारवादी दलों ने उप्र को किया बर्बाद : योगी

लखनऊ। उत्तर प्रदेश नगरीय निकाय चुनाव के दूसरे चरण में 11 मई को मतदान होना है। इस चरण में होने वाले नगर निगमों, पंचायतों व पालिका परिषदों में भारतीय जनता पार्टी(भाजपा) की जीत हो और बोर्ड बने, इसके लिए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ धुआंधार प्रचार कर रहे हैं।

रविवार को योगी ने अलीगढ़, बदायूं, शाहजहांपुर व बरेली में चुनाव प्रचार कर भाजपा के कार्यों का उल्लेख किया। साथ ही जनविरोधी कार्यों के लिए वह विपक्षी दलों पर हमलावर भी रहे। उन्होंने कहा कि जातिवादी-परिवारवादी दलों ने उप्र को बर्बाद कर दिया। मुख्यमंत्री योगी ने छह वर्ष में प्रदेश सरकार के कार्यों की बदौलत वोट रूपी हथियार में आमजन का साथ भी मांगा।

अलीगढ़ के तालों का सही इस्तेमाल कर दंगों पर लगाया ताला : अलीगढ़ में मुख्यमंत्री योगी ने कहा कि डबल इंजन की सरकार ने अलीगढ़ के ताले का सही इस्तेमाल करके उत्तर प्रदेश के दंगों पर ताला लगाने का काम किया है। इससे पूरा प्रदेश दंगा मुक्त हो चुका है। अलीगढ़ में हमने जमीन की व्यवस्था करते हुए देश की स्वाधीनता में अग्रणी पंक्ति में चलने वाले महाराजा महेंद्र प्रताप सिंह के नाम पर राज्य विश्वविद्यालय के निर्माण का काम शुरू कर दिया है। अलीगढ़ ताला नगरी के रूप में दुनिया में विख्यात है।

'बजरंग बली का अपमान करने पर तुली है कांग्रेस'

बेलागवी (कर्नाटक): कर्नाटक विधानसभा चुनाव में मतदान से कुछ दिन पहले, केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने रविवार को बेलगावी दक्षिण निर्वाचन क्षेत्र में एक मेगा रोड शो कर रहे हैं। भाजपा समर्थकों की भारी भीड़ ने अमित शाह के वाहन को घेर लिया और जुलूस का साथ दिया। शाह ने हाथ हिलाकर उनका स्वागत करने के लिए सड़क के दोनों ओर कतारबद्ध भीड़ का अभिवादन किया। हुनगुंडा में केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने जनसभा को संबोधित करते हुए कहा कि बीजेपी ने पीएफआई पर प्रतिबंध लगाकर देश की सुरक्षा को मजबूत किया है, लेकिन कांग्रेस पार्टी इसके खिलाफ है... भाजपा राज्य में न तो मुस्लिम आरक्षण देगी और न ही लिंगायत आरक्षण कम होने देगी। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने कर्नाटक के बागलकोट में कहा कि कांग्रेस की तुष्टिकरण की नीति है जिसने सालों तक प्रभु श्री राम को ताले के अंदर बंद करके रखा और अब वो बजरंग बली का अपमान करने पर तुले हैं। इसी तुष्टिकरण की नीति के तहत भाजपा के पीएफआई पर बैन के फैसले को कांग्रेस हजम नहीं कर पा रही है। भाजपा ने पीएफआई को बैन करके ना केवल कर्नाटक बल्कि समग्र देश की आंतरिक सुरक्षा को सुरक्षित करने का काम किया है।

कर्नाटक में राहुल गांधी ने भरी हुंकार

"नफरत की राजनीति के खिलाफ शुरू की थी भारत जोड़ो यात्रा"

बेंगलुरु: कर्नाटक में 10 मई को विधानसभा चुनाव होने वाला है। ऐसे में तमाम राजनीतिक पार्टियों ने अपनी पूरी ताकत झोंक दी है। इसी बीच ग्रैंड ओल्ड पार्टी 'कांग्रेस' की रविवार को अनेकल में एक जनसभा हुई, जहां पर पार्टी नेता राहुल गांधी ने जमकर हुंकार भरी।

"नफरत की राजनीति के खिलाफ शुरू की थी भारत जोड़ो यात्रा": राहुल गांधी ने अपनी जनसभा में मणिपुर हिंसा का भी जिक्र किया। उन्होंने कहा कि मणिपुर में आग लगी हुई है, लोग मारे जा रहे हैं, लेकिन प्रधानमंत्री और गृहमंत्री को इससे कोई लेना देना नहीं है। मणिपुर आज नफरत की राजनीति के कारण जल रहा है। इसी नफरत की राजनीति के खिलाफ हमने 'भारत जोड़ो यात्रा' शुरू की थी और यही हमारी विचारधारा है। उन्होंने कहा कि हमारे रोड शो में सारे नेता एक साथ खड़े दिखते हैं, जबकि मोदी जी के रोड शो में बोम्मई जी, येदियुरप्पा जी गाड़ी से बाहर रहते हैं। मोदी जी गाड़ी में चलते हैं, बाकी नेता सड़क पर चलते हैं।

"चोरी की गई सरकार": कांग्रेस नेता ने कहा कि आपने किसी और को चुना, लेकिन सरकार किसी और की बन गई। विधायकों को खरीदकर सरकार चोरी की गई। उन्होंने कहा कि चोरी से बनने वाली सरकार महज चोरी ही करती है और उसको कुछ और नहीं पता होता है।

इसी बीच उन्होंने कर्नाटक से गुजरने वाली भारत जोड़ो यात्रा के अनुभवों को जिक्र किया। उन्होंने कहा, "मुझसे महिलाओं ने कहा 400 वाला सिलेंडर 1100 रुपये का हो गया। किसानों ने कहा 60 रुपये वाला पेट्रोल 100 रुपये का हो गया, डीजल 56 रुपये से 90 रुपये का हो गया। छोटे व्यापारियों ने कहा नोटबंदी और जीएसटी ने हमें बर्बाद कर दिया।"

पूरे प्रदेश में ऑन ग्राउंड और सोशल मीडिया पर की जा रही खेलों की ब्रांडिंग

खेलो इंडिया यूनिवर्सिटी गेम्स को सफल बनाने में जुटेगी टीम यूपी

लखनऊ। उत्तर प्रदेश में पहली बार होने जा रहे खेलो इंडिया यूनिवर्सिटी गेम्स को सफल बनाने के लिए योगी सरकार बड़े पैमाने पर तैयारियों में जुटी है। सरकार के सभी विभागों से तैयारियों में सहयोग लिया जा रहा है तो पूरे प्रदेश में इसके प्रचार प्रसार के लिए सोशल मीडिया से लेकर जमीनी स्तर पर कार्ययोजना तैयार की गई है। प्रदेश में खेलों को हर स्तर पर बढ़ावा दे रहे सीएम योगी की नजर इन गेम्स का सफल आयोजन करके राष्ट्रीय खेलों की मेजबानी हासिल करने पर है। उल्लेखनीय है कि खेलो इंडिया यूनिवर्सिटी गेम्स (केआईयूजी) जमीनी स्तर के खेलों को बढ़ावा देने और पूरे देश से युवा प्रतिभाओं की पहचान करने के लिए भारत सरकार की पहल खेलो इंडिया का एक हिस्सा है। यह आयोजन एक इंटर यूनिवर्सिटी मीट है जहां देश भर के विभिन्न विश्वविद्यालयों का प्रतिनिधित्व करने वाले एथलीट विभिन्न खेल आयोजनों में पदक के लिए जोर आजमाइश करते हैं।

खेलों की ब्रांडिंग पर जोर: प्राप्त जानकारी के अनुसार खेलो इंडिया यूनिवर्सिटी गेम्स के प्रचार के लिए ब्रांडेड वाहनों का उपयोग किया जाएगा, जिसमें लाउडस्पीकर से सभी चौराहों पर केआईयूजी 2022 का एंथम बजाया जाएगा। केआईयूजी 2022 के बारे में लोगों को जागरूक करने वाले होर्डिंग, प्लेकार्ड, लाउडस्पीकर के माध्यम से इन खेलों की ब्रांडिंग भी की जाएगी। लखनऊ और अन्य जिलों के सभी प्रमुख चौराहों पर भी बिग स्क्रीन लगाए जाएंगे। अपर मुख्य सचिव खेल डॉ नवनीत सहगल ने आयोजन के दौरान दो अलग-अलग काउंटर बनाने के निर्देश दिए हैं।

एक कॉफी-टेबल बुक के लिए और दूसरा ओडीओपी एक्सपो के लिए। यानी इसके माध्यम से प्रदेश के खेल उत्पादों समेत अन्य जिलों के प्रसिद्ध उत्पादों की मार्केटिंग की जाएगी।

केरला स्टोरी का स्टेटस लगाया तो गला काटने की

जोधपुर: जोधपुर में द केरला स्टोरी मूवी का स्टेटस लगाने पर एक युवक के साथ मारपीट का मामला सामने आया है। युवक का गला काटने की भी धमकी दी। मारपीट का शिकार युवक विश्व हिंदू परिषद (विहिप) और बजरंग दल से जुड़ा है। रविवार दोपहर विहिप और बजरंग दल कार्यकताओं उदय मंदिर थाने पर हंगामा किया। विहिप कार्यकताओं ने मारपीट करने वालों के खिलाफ कार्रवाई करने की मांग की। पीड़ित अभिषेक (24) पुत्र राजू सरगरा ने बताया कि वह शुक्रवार को सिनेमा हॉल में केरला स्टोरी मूवी देखकर आया था। उसने अपने वॉट्सऐप पर फिल्म के पोस्टर को लेकर स्टेटस लगा लिया था। उसने कहा कि यह मूवी बहुत अच्छी है। इसे दुनिया की सभी लड़कियों को देखना चाहिए। ताकि लड़कियां धर्मांतरण से बचें और सुरक्षित रहें। युवक के साथ हुई इस घटना के बाद विश्व हिंदू परिषद और बजरंग दल से जुड़े कार्यकर्ता उदय मंदिर थाने पहुंचे और कार्रवाई की मांग की।

युवक के साथ हुई इस घटना के बाद विश्व हिंदू परिषद और बजरंग दल से जुड़े कार्यकर्ता उदय मंदिर थाने पहुंचे और कार्रवाई की मांग की।

अभिषेक ने बताया- शनिवार रात 8.30 से 9 बजे के बीच वह अपने घर जा रहा था। काली टंकी के पास मैन रोड मेड़ती गेट पहुंचा तो पिंटू, अमन और अली ने रास्ता रोक लिया। उसे बोला कि केरला स्टोरी पर तूने क्या स्टेटस लगाया है? तू धर्म को बदनाम करने की कोशिश कर रहा है। मैंने उनको कहा कि मैंने स्टेटस में क्या गलत लगाया है? उस समय मेरा मोबाइल घर पर चार्ज में लगा हुआ था। युवकों ने मोबाइल दिखाने को कहा तो मैं उनके साथ अपने घर पर आया।

खबर संक्षेप

अनियंत्रित टवेरा की टक्कर से अध्यापक घायल, रुपए व मोबाइल लेकर भागे कार सवार

मेजा। मेजा के भटौती कोनिया चौराहे के समीप एक अनियंत्रित टवेरा गाड़ी ने बुजुर्ग को टक्कर मार दी और उनका रुपए व मोबाइल लेकर भाग गए। उनके भाई ने मेजा कोतवाली में तहरीर देकर कार्रवाई की मांग की है। बता दें कि मेजा थाना क्षेत्र के भटौती गांव निवासी शिव प्रसाद तिवारी ने कोतवाली में तहरीर देकर बताया कि शनिवार की शाम करीब सात बजे वह अपने भाई अध्यापक यज्ञलाल तिवारी (48) के साथ पैदल ही भटौती कोनिया चौराहे पर जा रहे थे। रास्ते में शिव प्रसाद लघुशंका करने लगे और यज्ञलाल आगे बढ़ रहे थे, इतने में एक लाल रंग की अनियंत्रित टवेरा गाड़ी ने उन्हें जोरदार टक्कर मार दिया। जिससे वह घायल होकर गिर गए। शिवप्रसाद तिवारी का आरोप है कि इतने टवेरा सवार तीन लोग उतरे और उनका मोबाइल फोन व जेब में रखा बीस हजार रुपए लेकर गाड़ी में बैठकर भागने लगे। उन्होंने शोर मचाया तो उक्त लोग धमकी देते हुए भाग गए। वहीं रविवार को शिवप्रसाद ने पुलिस को तहरीर देकर कार्रवाई की मांग की है।

कलयुगी बेटे ने पिता को उतारा मौत के घाट

पति की जान बचाने के लिए पत्नी करती रही विनती , बहुओं से भी कहा किंतु लड़कों ने एक न सुनी उसे भी क्रूरता से मारा पीटा, मामूली बात को लेकर हुई घटना मां ने दो बेटों के खिलाफ दर्ज कराई एफआईआर

अखंड भारत संदेश

मृतक चेताई कोल की फाइल फोटो

कोरांव। कोरांव थाना क्षेत्र के ग्राम बदौआ कला में बीती रात शनिवार को दो सगे भाइयों ने मिल मामूली विवाद में लाठी से पीट कर हत्या कर दी। लाश को पुलिस ने कब्जे में ले कर पोमां के लिए भेज दिया। हत्यारे फरार हैं। मां ने बेटों के खिलाफ रपट दर्ज कराई। पुलिस हत्यारों की तलाश में जुट गई है। उल्लेखनीय है कि तेजई पुत्र गुलजारी कोल उम्र 65 वर्ष बीती रात्रि करीब सात आठ बजे घर में था लड़कों से सायकिल दुस्रे स्थान पर रखने को कहा इसी बीच बाप बेटों में कहा सुनी हो गई। तीन भाइयों में एक भाई रामनरेस और राम गणेश ने एक भाई बाप को पकड़ लिया और एक भाई लाठी से बाप पर प्रहार करने लगा जिससे वृद्ध पिता की हालत नाजुक हो गई,पड़ोसी लोगों ने 112 नंबर की पुलिस फोर्स को बुलाया पुलिस ने घायल वृद्ध को उपचार हेतु सीएचसी कोरांव भेजा, जहां डाक्टरों ने हालत नाजुक देख प्रयागराज जिला चिकित्सालय रेफर कर दिया। किंतु वह बच नहीं पाया मौत हो गई। पत्नी नचकाई कोल ने अपने कल युगी बेटों के खिलाफ कोरांव थाने में हत्या का केस दर्ज कराया। पुलिस ने लाश कब्जे में ले कर पोस्ट मार्टम के लिए भेज दिया। हत्यारे दोनों बेटों को पुलिस तलाश कर रही है। मां का रो रो कर बुरा हाल है। उक्त घटना से गांव में खलबली मच गई। ग्राम प्रधान ने बताया कि यह बड़ी दुर्भाग्य पूर्ण घटना है। हत्यारों को बख्शा नहीं जाना चाहिए। ग्रामीणों ने बताया कि हत्यारों की पत्नियों ने भी हस्तछेप नहीं किया। किंतु यह कैसा क्रूर कि बेटों ने मां के रोकने विनती करने के बावजूद भी पिता को कलयुगी बेटों ने मौत के घाट उतार दिया, जो चर्चा का विषय है। पति की हत्या देख पत्नी नचकाई लड़कों से लाठी छीन रहीं थी तो उक्त लड़कों ने मान को भी पांच छ लाठी मारा और घायल किया। फिर भी लड़कों को दया नहीं आई और न ही बहुओं को भी दया आई कि लाठी पकड़ कर माना कर दें।

घायल अवस्था में मिला युवक मचा हड़कंप

सिरसा। मांडा थाना क्षेत्र के नगर पंचायत भारतगंज में सड़क के किनारे घायल अवस्था में एक युवक के मिलने से हड़कंप मच गया राहगीरों उसे एंबुलेंस की मदद से हॉस्पिटल भिजवाया। बता दें कि रविवार सुबह नगर पंचायत भारतगंज में सड़क के किनारे एक युवक गंभीर रूप से घायल अवस्था में पाया गया सुबह मॉर्निंग वॉक के लिए निकले युवकों ने देखा तो घायल युवक से पूछा तो उसने अपना नाम विमलेश मेजा बताया इसके बाद वह बेहोश हो गया जिसे मैजिक गाड़ी ने टक्कर मारा था और फरार हो गया स्थानीय लोगों ने आनन-फानन में घायल युवक को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में जा में इलाज के लिए भर्ती कराया गया।

जालसाजो ने एटीएम बदल कर पैतालीस हजार उड़ाए

झूंसी। जालसाजो ने एक युवक का एटीएम कार्ड बदलकर 45 हजार रुपये उड़ा दिए। पीड़ित ने जब सुबह एटीएम देखा तो उसपर किसी और का नाम था। बैंक से शिकायत किया तब पैसे निकलने की जानकारी हुई। मामले की शिकायत झूंसी पुलिस से की पर अभी तक रिपोर्ट दर्ज नही हुई। हवेलिया झूंसी निवासी आशुतोष सिंह शुक्रवार को जीटी रोड पुलिस बूथ के पास एसबीआई के एटीएम से पैसे निकालने गया था। अचानक कार्ड एटीएम मशीन में फस गया तभी पीछे खड़े युवक ने एटीएम निकालने के बहाने कार्ड बदल लिया। पीड़ित जब शनिवार की सुबह फिर एटीएम से पैसे निकालने के लिए अपना एटीएम कार्ड उठाया तो उसपर किसी और का नाम लिया था। आशुतोष ने बैंक के कस्टमर केयर सम्पर्क किया तो पता चला कि एटीएम से 45 हजार रुपये निकाले जा चुके है। घटना के 48 घंटे बाद भी पुलिस ने न तो एफआईआर की न ही एटीएम बूथ की सीसी टीवी फुटेज चेक की। पुलिस बूथ के पास लगे एटीएम बूथ से पहले भी एटीएम बदल कर रुपये निकाले की कई घटना हो चुकी है।

लापरवाही की वजह से चली गई नीलगाय की जान

अखंड भारत संदेश

झूंसी। आजाद नगर में एक नीलगाय शनिवार की सुबह नाले में गिर गया था सुबह टहलने निकले लोगों ने जब नीलगाय को नाले में गिरा देखा तो मामले की सूचना फायर ब्रिगेड को दी गई फायर ब्रिगेड कर्मी मौके पर पहुंचे और नाले से नीलगाय को बाहर निकाला पर वन विभाग की लापरवाही के चलते उसकी जान नही बच पाई। बताया जाता है की नाले में गिरने की वजह से नीलगाय का पीछे का दोनों पिछले पैर टूट गया था। सूचना पर पहुंची फायर ब्रिगेड की गाड़ी ने नीलगाय को किसी तरह नाले से बाहर निकाला और वह चले गए मामले की सूचना नगर निगम वन, वन विभाग व पशु स्वास्थ्य विभाग को दी गई। डॉक्टरों की टीम मौके पर पहुंची और इलाज कर लौट गई। लेकिन नील गाय को नाले के पास से हटाया नहीं जा सका था जिसकी वजह से वह फिर नाले में गिर गया मौके पर पहुंचे वन कर्मियों ने बताया कि हमारे पास कोई ऐसा संसधान नही है

वन विभाग के पास नही था कोई संसाधन

जिससे इसे निकाल कर ले जा सके। स्थानीय लोगों के साथ शिवगंगा आश्रम व प्रभुदत्त ब्रह्मचारी आश्रम के संत भी नीलगाय को बचाने की कवायद में लगे रहे लोग नाले में उतरकर जेसीबी से किसी तरफ से फिर नीलगाय को बाहर निकाला लेकिन उसकी जान नहीं बच पाई।

ट्रैक्टर चालक लड़की लेकर फरार, पुलिस को दी गई तहरीर

कोराव। ग्राम महुली की एक लड़की को अल्हवा ग्राम के एक ट्रैक्टर मालिक का ड्राइवर जो ग्राम बदौआ का है ले कर फरार हो गया है। ग्राम महुली निवासी एक बिंद जो बाहर काम करता है उसकी लड़की को बहला फुसला कर अल्हवा के एक ट्रैक्टर मालिक का चालक गत दिवस भगा ले गया। उसमे तीन लोगों की संलिप्तता बताई जा रही है।

जल जीवन हरियाली मिशन कामयाबी के लिए लिया संकल्प

अखंड भारत संदेश

सहसों। छत्रपति शाहूजी महाराज की 101वीं परिनिर्माण दिवस पर पर्यावरण को प्रदूषण मुक्त बनाने के लिए जल जीवन हरियाली मिशन की कामयाबी के लिए सामाजिक उत्थान संस्थान द्वारा 6 मई दिन शनिवार को संकल्प लिया गया। सहसों गोल चौराहा प्रांगण स्थित छत्रपति शाहूजी महाराज के मूर्ति के सामने प्रबुद्ध जनों, समाजसेवियों, आसपास के नागरिकों सहित सामाजिक उत्थान संस्थान के कार्यकर्ता द्वारा ग्रामसभा सहसों के आसपास गली मोहल्ला को साफ सुथरा एवं हरियाली युक्त बनाने के लिए वृक्षारोपण करके स्वच्छ भारत स्वस्थ भारत के तहत उपस्थित लोगों ने संकल्प लिया। तथा फाफामऊ रोड के तिकोनिया पर पौधरोपण करके सुंदरीकरण के लिए प्रयास किया। कार्यक्रम अध्यक्ष धीरेंद्र सिंह, संचालक/ संयोजक शिक्षक सत्येंद्र सिंह, प्रताप बहादुर, रामानुज सिंह, नरेंद्र सिंह, सुरेंद्र सिंह, इंजीनियर प्रेम सिंह, देवी सिंह, डीबी सिंह, अजीत सिंह, सूर्यभान, पूर्व प्रधान राजेंद्र सिंह, बेला सिंह, चंद्रभान सिंह, कृष्णराज, ओम प्रकाश, सुरेश कुमार सिंह, त्रिवेणी मौर्य, यज्ञ नारायण सिंह , भागीरथी भारतीया, जवाहर लाल प्रजापति, डॉक्टर राजेश, वीरेंद्र सिंह, विमल कुमार एवं गुलाब सिंह सहित आदि लोग उपस्थित रहे।

जल संरक्षण पर ग्रामीणों को किया गया जागरूक

जसरा। क्षेत्र के जसरा, गौहनिया, बुंदावा,बसहरा, चिल्ला इत्यादि जगहों पर रविवार को युवा समाजसेवी अभिषेक सिंह पटेल के नेतृत्व मे ग्रामीणों को जल संरक्षण, वृक्षारोपण, रक्तदान इत्यादि विषयों पर जागरूक किया गया। इस अवसर पर अभिषेक सिंह पटेल नें लोगों को वृक्षारोपण एवम उनके संरक्षण के महत्ता पर जानकारी प्रदान करते हुए बोले कि पेड़ों के बिना जीवन संभव नहीं हैं लोगों को पेड़ों के काटने के स्थान पर उनके संरक्षण पर ध्यान देने की जरूरत हैं आगे उन्होंने यह भी कहा कि पेड़ों से बाढ़, सूखा इत्यादि प्राकृतिक आपदाओं से हद तक बचा जा सकता हैं। पेड़ों से भूगर्भ का जल स्तर भी व्यस्थित किया जा सकता हैं।ग्रामीणों को जागरूक करते हुए अभिषेक सिंह पटेल नें विवाह, जन्मदिन, पुण्यतिथि समेत अनेकों अवसरों पर लोगों से वृक्षारोपण करने की परम्परा को विकसित करने के लिए जागरूक किया गया।कार्यक्रम के समापन मे जल संरक्षण, वृक्षारोपण जागरूकता से सम्बन्धित स्मृति चिन्ह युवाओं को भेंटकर सम्मानित भी किया।उक्त अवसर पर अजय सिंह पटेल नें लोगों से पानी की एक -एक बूंद को बचाने का संकल्प लेने के लिए प्रोत्साहित किये।अजय सिंह, अमन पटेल, विक्रम सिंह, सुशील पटेल, अनिल कुमार समेत अनेकों लोग मौजूद रहे।

पात्र को नहीं मिल रहा है पीएम आवास दर दर भटक रहा है वृद्ध दंपत्ति

आरोप है कि अपात्रों को पैसों के दम पर मिल रहा रेवडियों की तरह आवास

अखंड भारत संदेश

मऊआइमा। मऊआइमा में पीएम आवास के लिए दर दर ठोंकरें खा रहा है वृद्ध दंपती परन्तु कोई सुनवाई नहीं हो रही है। जिससे विवश हो कर पन्नी डाल कर रहने को मजबूर है वृद्ध दंपत्ति । अधिकारियों से आवास दिलवाने की लगाई गुहार। मऊआइमा के ग्रामीण क्षेत्रों में धनादोहन करके आवास अपात्रों को पात्र बता कर आवास देने का आरोप पुराना है। जबकि गरीब असहाय मडहा, पन्नी डाल कर परिजनों को आवास के लिए दर दर ठोंकरें खानी पड रही। परन्तु एक अदद आवास मुहैया नहीं हो पा रहा है। मऊआइमा विकास खंड के ग्राम सभा घीनपुर के वृद्ध दंपत्ति जवाहर लाल बिंद पुत्र स्वर्गीय झुरई के मुताबिकक एक दर्जन अधिकारियों को तहरीर देकर पीएम आवास के लिए गुहार लगा कर थक चुका है। परन्तु आज तक ग्राम प्रधान से लेकर विकास खंड के अधिकारियों एंव जिले के अफसरों ने कोई सुनवाई नहीं की है। जिससे थक हार कर जवाहरलाल पन्नीनुमा मकान में निवास करने को विवश हो गया है।

डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य की दीर्घायु के लिए हुआ हवन पूजन

अखंड भारत संदेश

सहसों। भाजपा किसान मोर्चा गंगापार के कार्यकताओं द्वारा उत्तर प्रदेश सरकार के उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य के जन्मदिन के अवसर पर जिला अध्यक्ष भाजपा किसान मोर्चा गंगापार लक्ष्मी कांत उपाध्याय के नेतृत्व में कार्यकताओं ने परशुराम आश्रम झूंसी के प्रांगण में स्थित यज्ञशाला में विधि विधान से वैदिक मंत्रों द्वारा हवन, यज्ञ, पूजन एवं आरती कर उनके दीघार्यु की कामना करते हुए उप मुख्यमंत्री को जन्मदिन की शुभ कामना के साथ बधाई प्रेषित की गई। इस अवसर पर प्रदेश कार्यसमिति सदस्य विमलेश पटेल, प्रीति तिवारी, राजेन्द्र शुक्ला, गोरखनाथ सिंह, अजीत तिवारी, नरेन्द्र सिंह, रामेन्द्र जी, अंशुमान सिंह सहित आदि लोग शामिल रहे।

दो अलग अलग स्थानों पर चोरी एक में मुकदमा दर्ज दूसरे की हो रही जांच

मऊआइमा। एक गांव में विधालय का ताला तोड़कर चोरी की गई जबकि दूसरे गांव में शादी समारोह से बाइक चोरी हो गई। पुलिस ने एक मामले में चोरी का मुकदमा दर्ज कर लिया है जबकि दूसरे मामले की जांच कर रही है। मऊआइमा थाना क्षेत्र के ग्राम महमदपुर सराय अली निवासी संतलाल मौर्या पुत्र भोलानाथ मौर्या ग्राम सरायबादशाह कुली में प्रधानाध्यापक हैं। बीती रात चोरों ने विद्यालय का ताला तोड़कर चोरों ने मिड डे मिल का सारा सामान गैस सिलेंडर, गेंहू, चावल, बर्तन आदि अज्ञात चोर चोरी कर ले गए। सुबह चोरी की जानकारी मिलने पर वह विद्यालय जा कर देखे तो पता चला। प्रधानाध्यापक संतलाल मौर्या ने मऊआइमा थाने में अज्ञात चोरों के खिलाफ मुकदमा दर्ज करा दिया है ।उधर ग्राम चंडीपटटी निवासी राम सेवक पुत्र द्वारिका प्रसाद का कहना है है वह अपनी बाइक लेकर ग्राम दांदूपुर निमंत्रण में गया था। जब निमंत्रण कर बाइक तलाशने लगा तो बाइक नदारद थी। राम सेवक ने मऊआइमा थाने में अज्ञात चोरों के खिलाफ तहरीर दी है पुलिस तहरीर लेकर चोरी के बाबत पता लगाने में जुटी हुई है।

किला कर्मी को गोली मारने वाला फरार

पांच महीने बाद भी नही हुई गिरफ्तारी, सीसी टीवी फुटेज भी आया सामने

अखंड भारत संदेश

झूंसी। पांच महीने पहले नई झूंसी वार्ड 17 में एक किला कर्मी को दिनदहाड़े उसके साथी ने तमंचे से कमर में गोली मार दी थी। जिसका अब सीसी टीवी फुटेज भी सामने आया है। लेकिन अभी झूंसी पुलिस आरोपी की गिरफ्तारी नही कर सकी है। झूंसी चौकी के कृष्णा नगर कालोनी में रहने वाला यशवंत ठाकुर 50 किला में नाई का काम करता है। जनवरी माह में उसके सहकर्मी ने उसे तमंचे से गोली मार दी थी। गोली उसके कमर में लगी थी। घटना का सीसी टीवी अब सामने आया है जिसमे साफ नजर आ रहा है कि यशवंत ठाकुर एक घर से निकलता है और साइकिल का ताला खोलने लगता है। वहा पहले से मौजूद एक युवक पीछे से आता है और तमंचा सटा कर उसके कमर के नीचे गोली मार देता है आरोपी फिर तमंचा लोड करने लगता है तब तक घायल यशवंत भाग कर एक घर मे घुस जाता है। गोली की आवाज सुन कर पड़ोस का एक युवक बाहर आ कर आरोपी को समझाने लगता है पर डेढ़ मिनट तक आरोपी हाथ मे तमंचा लिए घर के बाहर की खड़ा ललकारता रहता है। उसके जाने के बाद पीड़ित खुद साइकिल चला कर इलाज के लिए कीडगंज के एक अस्पताल जाता है डॉक्टर उसे थाने भेज देते है पहले वह कीडगंज थाने जाता है फिर साइकिल से ही झूंसी थाने तब पुलिस उसे इलाज के लिए ले जाती है। पीड़ित की तहरीर पर पुलिस ने उसके सहकर्मी प्रतापगढ़ के रहने वाले विजय शंकर तिवारी के खिलाफ मामला तो दर्ज कर लिया पर घटना के पांच माह बाद भी पुलिस आरोपी को गिरफ्तार नही कर सकी।

नाबालिग का यौन उत्पीड़न करने के आरोपी को 20 वर्ष की कठोर कैद, 12 हजार जुर्माना भी लगाया

प्रयागराज। जिला न्यायालय ने शनिवार को नाबालिग बालिका के अपहरण और यौन उत्पीड़न मामले में दोषी करार दिए गए इसरार मियां उर्फ एतराज अहमद को 20 वर्ष के कठोर कारावास की सजा सुनाई। कोर्ट ने 12 हजार रुपये का जुमार्ना भी लगाया। यह आदेश विशेष न्यायाधीश (पाक्सो एक्ट द्वितीय) अंजनी कुमार ने आरोपी के वकील और सहायक शासकीय अधिवक्ता मनोज पांडेय व विशेष लोक आयुक्त सविता पाठक के तर्कों को सुनकर दिया।पीड़िता के पिता की ओर से थाने में दर्ज कराई गई प्राथमिकी में कहा गया था कि, इसरार मियां 16 मई 2021 को उसकी नाबालिग बेटी को बहला-फुसलाकर भगा ले गया था। परिवार के लोगों ने बहुत खोजबीन की, लेकिन कुछ पता नहीं चला। बचाव पक्ष के अधिवक्ता ने कोर्ट से याचना की कि आरोपी के माता-पिता बूढ़े हैं और जीविकोपार्जन का एक मात्र सराहा उनका बेटा ही है।इस कारण उसे कम से कम सजी दी जाए। जबकि अभियोजन पक्ष ने इसका कड़ा विरोध करते हुए तर्क दिया कि आरोपी ने नाबालिग बालिका के साथ संगीन अपराध किया है। तथ्यों व अपराध की गंभीर प्रकृति को देखकर अदालत ने आरोपी को 20 वर्ष के कठोर कारावास की सजा सुनाई।

महिला पहलवानों के समर्थन में सहसों में हुआ प्रदर्शन

अखंड भारत संदेश

दिल्ली के जंतर मंतर पर चल रहे धरने के समर्थन में आरोपित कुश्ती संघ के अध्यक्ष ब्रज भूषण शरण सिंह को गिरफ्तार करने की मांग को लेकर सहसों चौराहे पर किया प्रदर्शन

सहसों। सेन्टर ऑफ इंडियन ट्रेड यूनियन अखिल भारतीय किसान सभा, स्टूडेंट्स फेडरेशन ऑफ इण्डिया (एसएफआई) के संयुक्त तत्वाधान में के तहत आज दिनांक 7 मई को जंतर-मंतर पर चल रहे महिला पहलवानों के धरने के समर्थन में आरोपित कुश्ती संघ के अध्यक्ष व उ०प्र० से भाजपा सांसद ब्रजभूषण शरण सिंह को गिरफ्तार करने की मांग पर सहसों चौराहे पर प्रदर्शन किया गया। प्रदर्शन में मौजूद वक्ताओं ने कहा कि यह बेहद शर्मनाक है कि देश का सम्मान बढ़ाने वाली महिला कुश्ती पहलवानों को अपने सम्मान की रक्षा करने के लिए लगातार संघर्ष करना पड़ रहा है। कुश्ती संघ के अध्यक्ष व भाजपा सांसद द्वारा महिला पहलवानों का यौन उत्पीड़न करते हैं और सरकार ऐसे अपराधियों का संरक्षण करती नजर आ रही है। उत्पीड़न मामले में महिला पहलवानों ने जंतर- मंतर पर धरना दे कर उनके गिरफ्तारी की मांग की थी किंतु गिरफ्तारी नहीं हुई । प्रदर्शन में कहा गया कि खिलाड़ियों एवं पहलवानों को जिस तरह से शोषण किया जा रहा है। देश के किसानों, मजदूरों, छात्रों, नौजवानों का उनको समर्थन निरंतर मिलता रहेगा क भाजपा सरकार में कुलदीप सिंह सेंगर, चिन्मयानन्द, अजय मिश्रा टेनी, बृजभूषण सिंह जैसे अपराधियों को मिलने वाला सरकारी संरक्षण यह दिखाता है कि भाजपा नेता कानून से ऊपर हैं तथा महिला विरोधी हैं। प्रदर्शन में प्रमुख रूप से किसान सभा के जिला अध्यक्ष मुन्नी लाल यादव, भोलाशंकर, आशीष, ईशू रिचा, रिया, ऋषि, रणजीत, प्रमोद, यशवंत सिंह, सर्वेश, नरेंद्र, धर्म सिंह, सोनू, विकास स्वरूप, रमाकांत, संजय सम्राट, लाल आदि रहे।

गंगा को लेकर चल रहे जागरूकता अभियान को जन-जन तक पहुचाने का लिया गया निर्णय

गंगा महासभा की बैठक सम्पन्न

अखंड भारत संदेश

नैनी। गंगा महासभा प्रयागराज जिला कार्यकारिणी की बैठक देवरख बंधारोड स्थित मदन वाटिका में रविवार को संपन्न हुई। बैठक की अध्यक्षता जिला अध्यक्ष भगवती प्रसाद पांडे ने किया। बैठक में लिए गए निर्णय के अनुसार गंगा की निर्मलता व अविरलता को लेकर चलाए जा रहे जन जागरूकता अभियान के तहत माँ गंगा के प्रति उपेक्षात्मक रवैया को जन-जन तक पहुचाने का निर्णय लिया गया। बैठक में देवेंद्र तिवारी, एन पी मिश्रा, सौभिक सरकार ,शक्ति कृष्ण त्रिपाठी, देवेंद्र वर्मा, सुधाकर दुबे, बच्चा विश्वकर्मा, विन्दू राठौर, प्रवीण तिवारी, सुनील श्रीवास्तव, सुनील साहनी, अनिल मिश्रा, विजय कुमार आदि की सक्रिय सहभागिता रही।

खबर संक्षेप

दर्द से कराह रही महिला के लिए कंडक्टर ने रुकवाई ट्रेन

प्रयागराज। प्रयागराज की तरफ आ रही जयनगर गरीब रथ एक्सप्रेस में दर्द से कराह रही एक महिला यात्री की मदद के लिए कंडक्टर ने ट्रेन को रुकवा दिया। महिला को मेडिकल सुविधा उपलब्ध करवाई गई। जिसके बाद महिला ने रेल प्रशासन व चेकिंग स्टाफ को धन्यवाद भी दिया। उधर रेलवे प्रशासन ने भी कोच कंडक्टर की सूझबूझ की सराहना की।गरीब रथ एक्सप्रेस के जी-12 कोच की बर्थ नंबर 65 पर हामिया खातून नाम की महिला सफर कर रही थी। पंडित दीन दयाल उपाध्याय जंक्शन के बाद महिला को अचानक स्टोन (पथरी) का दर्द होने लगा। इस दौरान यात्रा कर रहे यात्रियों ने ट्रेन में कार्यरत चेकिंग स्टाफ को सूचना दी। सूचना मिलते ही ट्रेन के कंडक्टर देवेंद्र सिंह ने प्रयागराज मंडल के कंट्रोल ऑफिस को पूरी स्थिति से अवगत कराया।इसके बाद ट्रेन का स्टॉपेज न होते हुए भी ट्रेन को मिजार्पुर स्टेशन पर रोके जाने का मैसेज कंट्रोल रूम ने दिया। इसके बाद रात करीब दो बजे मिजार्पुर स्टेशन पर ट्रेन पहुंचने पर महिला को डॉ. वीके सिंह ने मेडिकल ट्रीटमेंट दिया। ट्रीटमेंट मिलने पर महिला ने रेल प्रशासन व चेकिंग स्टाफ को धन्यवाद दिया।

खेत की रखवाली कर रही महिला की हत्या का खुलासा

पुलिस आरोपी को किया गिरफ्तार, सिंचाई का पैसा मांगने पर युवक ने महिला की कुल्हाड़ी से की थी हत्या

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। प्रयागराज पुलिस कमिश्नरेट के फाफामऊ थाना क्षेत्र में रंगपुरा गांव के गंगा कछार में 2 मई को खेत की रखवाली कर रही महिला की हत्या का पुलिस ने खुलासा कर दिया है। हत्या उसी के गांव के एक लड़के ने की थी।पुलिस के अनुसार खेत में महिला के पति ने ट्यूबवेल लगा रखा है। जिससे वह खेतों की सिंचाई करती है। आरोपी के खेतों की पहले महिला ने सिंचाई की थी। जिसका पैसा आरोपी ने नहीं दिया था। दोबारा वह अपना चरी का खेत सींचने के लिए महिला से कह रहा था। महिला ने इंकार कर दिया, तो गुस्से में आकर उसने कुल्हाड़ी और खुरपी से वार करके महिला को मौत के घाट उतार दिया। पुलिस ने आरोपी की गिरफ्तारी के साथ ही आला कत्ल भी बरामद कर लिया है।

गंगा पुल के समीप से श्याम को पुलिस की गिरफ्तार : गंगापार के फाफामऊ थाने की पुलिस ने बताया कि बीती रात फाफामऊ गंगा पुल के समीप से श्याम यादव पुत्र स्व. राजदेव यादव निवासी रंगपुरा फाफामऊ को गिरफ्तार किया गया। उसकी निशानदेही पर वृद्ध महिला की हत्या में प्रयुक्त कुल्हाड़ी और खुरपी बरामद की गई।

श्याम ने कुल्हाड़ी और खुरपी से महिला का किया हत्या : मृतका कीशलली पत्नी राम अधार यादव निवासिनी रंगपुरा दो मई को खेत मे लगे ट्यूबेल व खेत की देखरेख करने गई थी। लोगों के खेतों में सिंचाई के पैसे का लेनदेन कीशलली करती थी। उसी गांव के श्याम यादव ने पूर्व में महिला के ट्यूबेल से अपने खेतों की सिंचाई कराई थी। लेकिन पैसा नहीं दिया था। 2 मई को श्याम यादव दोबारा चरी के खेत की सिंचाई के लिए कह रहा था। किन्तु कीशलली ने पूर्व का पैसा न मिलने के कारण खेत की सिंचाई से मना कर दियाथा। 2 मई को श्याम यादव दोबारा चरी के खेत की सिंचाई के लिए कह रहा था। किन्तु कीशलली ने पूर्व का पैसा न मिलने के कारण खेत की सिंचाई से मना कर दिया था। जिस कारण श्याम यादव गुस्से में आ गया था। उस वक्त कीशलली अकेली थी। गुस्साए श्याम यादव ने पास में रखी कुल्हाड़ी और खुरपी से कीशलली पर हमला कर हत्या कर दिया। फिर वहां से फरार हो गया।

विवेचना में आया था श्याम यादव का नाम : मृतका के बेटे राकेश कुमार यादव पुत्र राम अधार यादव ने फाफामऊ थाने में अज्ञात के खिलाफ एफआईआर दर्ज कराया था। विवेचना के बाद श्याम यादव का नाम आया। उसे गिरफ्तार कर पूछताछ की गई, तो उसने सच्चाई बताया। इसके बाद घटना का खुलासा हो गया।वहीं गिरफ्तारी करने वाली पुलिस टीम में थानाध्यक्ष आशीष सिंह के अलावा एसआई विश्वेंद्र कुमार यादव, एसआई वरुण कांत प्रताप सिंह, एसआई बृजेश कुमार यादव, हेड कांस्टेबल अखिलेश कुमार, का. सुशील कुमार और संजय कुमार यादव शामिल थे।

घर का ताला-तोड़कर चोरों ने किया हाथ साफ

अखंड भारत संदेश

दो लाख रुपए नकदी समेत सोने-चांदी के जेवरात चोर लेकर हुए फरार, शादी समारोह में गया था परिवार

प्रयागराज। शहर में चोरी की घटनाएं थमने का नाम नहीं ले रही है। सूनसान मकान में ताला तोड़कर वर्षों की गाढ़ी कमाई चोर लेकर चंपत हो जा रहे हैं। पुलिस एफआईआर दर्ज कर मौन साध ले रही है।बीती रात धूमनगंज थाना क्षेत्र के पीपल गांव में चोरों ने एक बंद मकान का ताला तोड़कर दो लाख रुपए नकदी समेत सोने-चांदी के जेवरात पार कर दिए। मकान मालिक अपनी पत्नी और बच्चों के साथ एक शादी समारोह में शामिल होने के लिए फूलपुर गए हुए थे। वापस लौटने के बाद घटना की जानकारी हुई, तो पुलिस को सूचना दी। धूमनगंज थाना अंतर्गत पीपल गांव उर्फ शाहपुर निवासी देवेश मणि त्रिपाठी पुत्र स्वर्गीय शंकर त्रिपाठी एक बिस्किट कंपनी में कार्यरत हैं। वह बीती रात अपनी पत्नी और दो बच्चों के साथ फूलपुर इलाके में एक कार्यक्रम में शामिल होने चले गए थे। भोर में 5:00 बजे करीब जब वह वापस आए तो उनके मेन दरवाजे का ताला टूटा मिला। अंदर कमरे की अलमारी का लाक टूटा हुआ था। उसमें रखे सोने-चांदी के जेवरात और दो लाख नकद गायब थे। पूरे कमरे में सामान बिखरा हुआ था। उन्होंने धूमनगंज पुलिस को सूचना दी। पुलिस मौके पर पहुंची पुलिस छानबीन के दौरान उनकी गेट के बगल की दीवार पर एक पेचकस और एक कटर बरामद हुआ। पीड़ित के तहरीर पर पुलिस अज्ञात चोरों के खिलाफ एफआईआर दर्ज की है। चोरों का भी कुछ पता नहीं चल पाया है। वहीं इससे पहले 5 मई की रात में नैनी कोतवाली क्षेत्र के मडौका गांव में लोहा कारोबारी के बंद मकान का ताला तोड़कर चोरों ने 9.40 लाख रुपए नकद और 16 तोले सोने के जेवरात उड़ा दिए थे। लोहा कारोबारी अपनी बहन की शादी के लिए परिवार समेत गेस्ट हाउस गया हुआ था। बहन की विदाई के बाद जब सुबह वापस लौटा तो घटना की जानकारी हुई थी।

अज्ञात वाहन ने साइकिल सवार को मारी जोरदार टक्कर, मौत

अखंड भारत संदेश

घर से इफको फूलपुर की तरफ सब्जी लेने निकला था युवक

प्रयागराज। जिले में रविवार को सुबह घर से साइकिल लेकर सब्जी खरीदने निकला युवक सड़क दुर्घटना में गंभीर रूप से घायल हो गया। सूचना पर पहुंची पुलिस ने 108 एम्बुलेंस से घायल युवक को स्वरूपरानी नेहरू चिकित्सालय में भर्ती कराया। जहां इलाज के दौरान दोपहर में उसकी मौत हो गई।पुलिस ने परिवार को सूचना दी गई। परिवार के लोग पोस्टमार्टम हाउस पहुंचकर मृतक की पहचान की। उसके बाद शव को पोस्टमार्टम के लिए रख दिया गया।

सब्जी लेने के लिए बाजार गया था युवक : गंगापार के फूलपुर कोतवाली क्षेत्र में हेमापुर गांव निवासी राजकुमार भारती पुत्र तुलसीराम भारती खेती किसानी एवं मजदूरी करके परिवार का पालन पोषण करता था। उसकी पत्नी प्रभावती देवी ने बताया कि एक बेटा और एक बेटी है। 7 मई को सुबह राजकुमार अपनी साइकिल लेकर इफको फूलपुर की तरफ सब्जी लेने के लिए गया था। वहां से वापस नहीं लौटा। दोपहर में पुलिस के जरिए सूचना मिली कि वह इफको के समीप अज्ञात वाहन की चपेट में आकर घायल हो गया है। उसका स्वरूपरानी नेहरू चिकित्सालय में इलाज चल रहा है। परिवार के लोग स्वरूपरानी नेहरू चिकित्सालय पहुंचे तो वहां पता चला कि उसकी मौत हो चुकी है।

आद्य पत्रकार देवर्षि नारद की जयंती भूमंडलीय विश्व पत्रकारिता दिवस के रूप में मनाई

प्रयागराज। भारतीय राष्ट्रीय पत्रकार महासंघ प्रयागराज के तत्वावधान में पत्रकार, साहित्यकार, कवि व लेखकों ने आद्य पत्रकार देवर्षि नारद जी की जयंती (जेष्ठ मास कृष्ण पक्ष द्वितीया) में उन्हें नारद जी खबर लाए हैं को याद करके इस धरती पर भूमंडलीय विश्व पत्रकारिता दिवस के रूप में कार्यालय पत्रकार भवन ताशकंद मार्ग सिविल लाइंस प्रयागराज में धूमधाम से मनाई गई जिसमें मुख्य अतिथि के तौर पर डॉक्टर भगवान प्रसाद उपाध्याय राष्ट्रीय संयोजक महासंघ उपस्थित रहे, अध्यक्षता श्याम सुंदर सिंह पटेल राष्ट्रीय महासचिव कार्यालय महासंघ व संचालन रश्मि मिश्रा ने किया कार्यक्रम का शुभारंभ देवर्षि नारद जी के चित्र पर माल्यार्पण कर उन्हें नमन करते हुए गायत्री महामंत्र व सरस्वती वंदना से हुआ तत्पश्चात सभी का स्वागत पंकज गुप्ता ने किया। इस अवसर पर सभी ने अपने विचार रखे तथा गीत, स्वागत गीत व रचनाएं पढ़ी गई जो देवर्षि नारद जी के आदर्शों के गुणगान में था। कार्यक्रम में प्रमुख लोगों में डॉक्टर भगवान प्रसाद उपाध्याय ,श्याम सुंदर सिंह पटेल ,पंकज गुप्ता ,प्रमोद कुमार सिंह ,रश्मि मिश्रा आदि कई लोग शामिल रहे अंत में सभी का धन्यवाद ज्ञापन श्याम सुंदर सिंह पटेल ने किया व प्रसाद वितरण कर जलपान नाश्ता के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ।

डिप्टी सीएम के जन्मदिन पर की गंगा आरती, बेणी माधव में किया शंखनाद, हनुमान चालीसा पाठ

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य का जन्मदिन रविवार को भाजपा की ओर से धूमधाम से मनाया गया। भाजपा की ओर से गंगा तट पर जहां मां गंगा की आरती की गई तो वहीं दारागंज स्थित बेणी माधव मंदिर में पूजन पाठ के बाद शंखनाद भी किया गया। तमाम स्थानों पर पार्टी नेताओं की ओर से केक भी काटा गया। इस अवसर पर गरीबों में फल का भी वितरण किया गया।भाजपा प्रीतमनगर मंडल की ओर से फल का वितरण करने के दौरान राकेश जेन, शिवाकांत शर्मा, निरंकार आदि मौजूद रहे। इसी क्रम में काशी प्रांत उपाध्यक्ष अवधेश चंद्र गुप्ता ने डिप्टी सीएम की लंबी आयु एवं स्वस्थ रहने की कामना करने के साथ गंगा आरती की। इसके बाद वहां प्रसाद का भी वितरण किया गया। भाजपा पिछड़ा वर्ग मोर्चा की ओर से पार्टी कार्यालय में हनुमान चालीसा का पाठ महानगर अध्यक्ष मनोज कुमार कुशवाहा के नेतृत्व में किया गया। चालीसा पाठ के बाद वहां मिठाई बांटी गई और केक काटा गया। इस अवसर पर गौरी शंकर वर्मा, सतीश प्रजापति, घनश्याम मौर्य, भोला यादव, अंगद निषाद आदि मौजूद रहे। वहीं भाजपा सांस्कृतिक प्रकोष्ठ की ओर से दारागंज स्थित वेणी माधव मंदिर में महानगर संयोजक तीर्थराज पाण्डेय बच्चा भैया की मौजूदगी में पूजन अर्चन कर डिप्टी सीएम की लंबी आयु की कामना की गई। यहां मंदिर में शंखनाद भी किया गया। इस असर पर अनुपमा पांडेय, केसी पांडेय, मृत्युंजय तिवारी, राजेश गुप्ता, कमलेश सिंह ,गोलू चौरसिया, पलक निषाद आदि की मौजूदगी रही।

अधिवक्ताओं ने भी मनाया जन्मदिन : डिप्टी सीएम का जन्मदिन रविवार को अधिवक्ताओं ने भी मनाया। हाईकोर्ट बार एसोसिएशन के उपाध्यक्ष आशुतोष पांडेयकके नेतृत्व में अधिवक्ताओं ने केक काटा। इस अवसर पर एक दूसरे का मुंह भी मीठा कराया गया। जन्मदिन मनाए जाने के दौरान अरविंद श्रीवास्तव, शक्ति सिंह, विनोद राय, आशुतोष मिश्रा, सर्वेश चतुर्वेदी, इम्तियाज अली आदि मौजूद रहे।

निरंजन रेलवे डाट पुल के विस्तारीकरण के लिए डीएम ने दी अनुमति

अखंड भारत संदेश

आवाजाही बंद कर दी जाएगी, जो अगले 100 दिन तक बंद रहेगी

प्रयागराज। निरंजन रेलवे डॉट पुल रास्ते को ब्लॉक करने की तैयारी 9 मई से होगा बंद जिले के नए और पुराने शहर को जोड़ने वाले निरंजन रेलवे डॉट पुल से गुजरने वालों की मुसीबत बढ़ने वाली है। रेलवे ने इस डॉट पुल के विस्तारीकरण के लिए डीएम प्रयागराज से अनुमति ले ली है 9 मई दिन मंगलवार से इस रूट पर वाहनों की आवाजाही बंद कर दी जाएगी, जो अगले 100 दिन तक बंद रहेगी। निरंजन रेलवे डॉट पुल रास्ते को ब्लॉक करने की तैयारी निरंजन रेलवे डॉट पुल पर रेलवे विभाग एक ओर रेलवे ट्रैक बिछाने जा रहा है। जिसकी वजह से इस रास्ते को ब्लॉक करने की तैयारी की गई है। जिला प्रशासन की ओर से रेलवे को इस संबंध में अनुमति दे दी गई है इस रास्ते के ब्लॉक होने की वजह से अब चौक से सिविल लाइन की तरफ सीधे आने जाने वाले लोगों को प्रयागराज जंक्शन और रामबाग की तरफ से घूम कर आना जाना पड़ेगा उत्तर मध्य रेलवे प्रयागराज मंडल का रेल ब्रिज संख्या-38 (निरंजन रेल अंडर ब्रिज) के ऊपर वर्त्तमान में पांच रेल लाइन बिछी है। रेलवे इसी पर एक और रेल ट्रैक बिछाने जा रहा है। जिसके पीछे की वजह झूंसी से प्रयागराज जंक्शन तक रेल ट्रैक का दोहरीकरण है। जिसके लिए एक पिलर का निर्माण व आरसीसी के गर्डर लगाया जाना है। इसे 109 दिनों में जरूरत के मुताबिक कुछ घंटे के लिए ट्रेनों का संचालन भी रोका जाएगा। चलाई जा सकती हैं वाया ईस्टर्न डेडीकेटेड फ्रेट कॉरिडोर के रास्ते एनसीआर की तरफ से जारी सूचना के मुताबिक ब्लॉक अवधि में कुछ ट्रेन वाया ईस्टर्न डेरडीकेटेड फ्रेट कॉरिडोर के रास्ते भी चलाई जा सकती हैं। ऐसे में इन ट्रेनों का ठहराव रेलवे प्रयागराज छिवकी रेलवे स्टेशन पर होगा।

9 मई से निरंजन पुल का काम शुरू होने से छात्र-छात्राओं व आम लोगों को खुसरोबाग रेल ओवर ब्रिज, रामबाग ओवर ब्रिज या सीएमपी रेल अंडर ब्रिज वाले रास्ते से घूमकर आना जाना होगा। निरंजन रेल ब्रिज पर आरसीसी गार्डर लगाने के लिए वर्ष 2016 में भी ब्लॉक लिया गया था प्रयागराज एनसीआर के सीनियर पीआरओ डॉ. अमित मालवीय ने बताया कि अधिकारियों ने साइट का निरीक्षण कर लिया है। विभिन्न विभागों की एनओसी के बाद जिला प्रशासन ने भी कार्य करने की मंजूरी दे दी है 9 मई से अंडर ब्रिज को कम पूरा होने तक ब्लाक कर दिया जाएगा। जो लगभग 100 दिन का होगा।

एक बार फिर किसी को बहुमत के आसार नहीं, निर्दलियों की बढ़ेगी भूमिका

अखंड भारत संदेश

कांग्रेस को मिल सकता है सपा से जनता की नाराजकी का फायदा

पिछली बार कांग्रेस के 11 पार्षद चुने गए थे और संख्या बल के हिसाब से वह तीसरे स्थान पर रही। इनमें से नौ निवर्तमान पार्षदों या उनके परिजनों को कांग्रेस ने दोबारा मैदान में उतारा है। मुकुंद तिवारी की पत्नी, तसलिमुद्दीन, मुमताज, नफीस अनवर समेत कई इस बार भी मुख्य लड़ाई में हैं। इसके अलावा कांग्रेस को मुस्लिमों की सपा से नाराजगी का भी कुछ फायदा हो सकता है, लेकिन 50 पार्षदों का आंकड़ा कांग्रेस से भी दूर ही दिखाई दे रहा है। यही स्थिति पिछले चुनाव में तीन वार्ड में जीत हासिल करने वाली बसपा की भी दिख रही है।इसके विपरीत पिछले चुनाव में कमलेश सिंह, आनंद धिल्डियाल, अखिलेश सिंह, अमरजीत यादव, दिलीप कुमार, रमेश मिश्र, शिवकुमार, जयेंद्र कुमार समेत 18 निर्दलीय पार्षद चुनकर सदन में पहुंचे थे। इसके अलावा डेढ़ दर्जन से अधिक सीटों पर निर्दलीय उम्मीदवार दूसरे स्थान पर रहे थे। इनमें से ज्यादातर इस बाद भी मैदान में हैं और मुख्य मुकाबले में हैं। ऐसे में इस बार भी सदन में निर्दलीयों की भूमिका बढ़ती दिख रही है।

प्रयागराज। सदन में महापौर के चुनाव में उम्मीदवारों के सामने चुनौती बढ़ती दिख रही है। पिछली बार की तरह इस बार भी किसी दल के 50 से अधिक पार्षद चुने जाने की उम्मीद कम है। ऐसे में निर्दलीय उम्मीदवारों की भूमिका बढ़ती दिख रही है। 2017 के चुनाव में सपा के सबसे अधिक 24 पार्षद चुने गए थे। ज्यादा पार्षद मुस्लिम बहुल वार्ड से निर्वाचित हुए थे। सपा ने इस बार भी उन पर दांव लगाया है। इनके अलावा 20 से अधिक वार्ड में सपा दूसरे स्थान पर रही। खास बात यह है कि मुस्लिमों में अखिलेश यादव के प्रति नाराजगी दिखी और उसका असर महापौर के चुनाव में देखने को मिल सकता है।हालांकि, अतहर रजा, आजम, नेम यादव, पुलकित यादव समेत सपा के कई पार्षदों पर मतदाताओं का भरोसा अब भी बना हुआ है। इसके अलावा सपा को विस्तारित क्षेत्र, खासतौर पर गंगापार की 15 सीटों पर भी भरोसा है। ऐसे में मुस्लिमों की नाराजगी के बावजूद इस बार भी सपा के सबसे अधिक पार्षद सदन में पहुंचते हैं तो अचरज नहीं होगा, लेकिन 50 पार्षदों का आंकड़ा दूर दिख रहा है।पिछले चुनाव में भाजपा के 22 पार्षद निर्वाचित हुए थे, तो करीब तीन दर्जन सीटों पर वह दूसरे स्थान पर रही। भाजपा इसी प्रदर्शन तथा मुस्लिम मतों के बिखराव के आधार पर 50 से अधिक वार्ड में जीत का दावा कर रही है, लेकिन ओमप्रकाश सभासद, झूलेलाल नगर, नैनी भदरी समेत कई वार्डों में भाजपा को अपने ही लोगों के विरोध का सामना करना पड़ रहा है। ऐसे में भाजपा का यह दावा कितना सच हो पाएगा यह 13 मई को ही पता चलेगा।

न्यायिक आयोग ने दर्ज किए धूमनगंज इंस्पेक्टर के बयान, दूसरे जारी रही हत्याकांड की जांच

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। पुलिस अभिरक्षा में अतीक-अशरफ हत्याकांड की जांच के लिए गठित न्यायिक आयोग ने शनिवार को भी जांच जारी रखी। आयोग के सदस्यों ने सर्किट हाउस में धूमनगंज इंस्पेक्टर राजेश कुमार मौर्य के बयान दर्ज किए। इसके बाद पांच घंटे तक चली बैठक में बिंदुवार घटना की जानकारी ली, जिसमें पुलिस के सभी आला अफसर मौजूद रहे।सेवानिवृत्त मुख्य न्यायाधीश डीबी भोसले की अध्यक्षता में गठित पांच सदस्यीय आयोग ने एक दिन पहले कॉल्विन अस्पताल स्थित घटनास्थल का दौरा किया था। शनिवार सुबह नौ बजे के करीब पुलिस के सभी आला अफसरों को सर्किट हाउस बुलाकर बातचीत शुरू की गई। घटना के बाबत एक-एक बिंदु की जानकारी ली गई। मौके पर कब क्या कैसे हुआ, इसे अधिकारियों की जुबानी जाना गया और बाकायदा अंकित भी किया गया। यही नहीं, मामले में अब तक क्या कार्रवाई पुलिस की ओर से की गई, इससे संबंधित सूचनाएं भी एकत्र की गईं।प्रकरण से जुड़े सभी अफसरों से एक-एक कर आयोग के सदस्यों ने बात की और जानकारी ली। सुबह नौ बजे शुरू हुई बैठक दोपहर दो बजे तक चली। इससे पहले अतीक-अशरफ को पुलिस अभिरक्षा में लेने वाले उमेश पाल हत्याकांड के विवेचक इंस्पेक्टर राजेश कुमार मौर्य को भी बुलाया गया। अफसरों की मौजूदगी में आयोग के अन्य सदस्यों सेवानिवृत्त मुख्य न्यायाधीश वीरेंद्र सिंह, सेवानिवृत्त न्यायमूर्ति अरविंद कुमार त्रिपाठी, सेवानिवृत्त जिला जज बृजेश कुमार सोनी व सेवानिवृत्त पुलिस महानिदेशक सुवेश कुमार सिंह ने इंस्पेक्टर से घटना के बाबत एक-एक कर सवाल पूछे और उनके बयान दर्ज किए। बैठक खत्म होने के बाद आयोग के सदस्य वापस चले गए।

एसआईटी अफसर भी रहे मौजूद : बैठक में आला अफसरों संग अतीक-अशरफ हत्याकांड की विवेचना कर रहे विशेष जांच दल (एसआईटी) में शामिल अफसर भी मौजूद रहे। इनमें एसआईटी अध्यक्ष एडीसीपी अपराध सतीश चंद्र के अलावा सदस्य एसीपी सत्येंद्र प्रसाद तिवारी व इंस्पेक्टर ओमप्रकाश शामिल रहे।

अस्थाई कार्यालय खोल सकता है आयोग : सूत्रों का कहना है कि न्यायिक आयोग के सदस्य फिलहाल भले ही वापस चले गए हों, लेकिन जांच के क्रम में जल्द ही वह फिर आ सकते हैं। यही नहीं, इस बात की भी संभावना है कि आयोग के सदस्य फिर कुछ दिनों तक यहां कैंप करें। इस दौरान अस्थाई कार्यालय बनाकर जांच की कार्रवाई को आगे बढ़ाया जा सकता है।

दो महीने में देनी है रिपोर्ट, 21 दिन बीते : न्यायिक आयोग को दो महीने में जांच रिपोर्ट शासन को सौंपनी है। आयोग का गठन अतीक-अशरफ हत्याकांड के अगले दिन यानी 16 अप्रैल को किया गया था। इस तरह 21 दिन बीत चुके हैं, जिस दौरान दो बार आयोग के सदस्य घटनास्थल का दौरा कर चुके हैं। टेक्निकल टीम की ओर से क्राइम सीन की मैपिंग भी हो चुकी है।

परिवारिक झगड़े से आजिज युवक ने खाया जहरीला पदार्थ, हालत गंभीर

उरुवा। पारिवारिक झगड़े से आजिज आकर युवक ने जहरीला पदार्थ खाकर जान देने की कोशिश की। जानकारी होते ही घरवालों के द्वारा आनन-फानन में युवक को इलाज के लिए सीएचसी रामनगर ले जाया गया। जहां पर इलाज के दौरान जहरीला पदार्थ खाये युवक की हालत बिगड़ती देख अस्पताल के डॉक्टरों ने प्राथमिक उपचार कर जिला अस्पताल के लिए रेफर कर दिया। मेजा थाना क्षेत्र के उंचडीह तिवारी का पूरा निवासी नंदलाल उपाध्याय का 45 वर्षीय बेटा गुड्डू उपाध्याय घर में हो रहे झगड़े से आजिज आकर जान देने की नियत से जहरीला पदार्थ खा लिया। जैसे ही घरवालों को जानकारी हुई घरवाले आनन फानन में बेहोश गुड्डू को लेकर इलाज के लिए सीएचसी रामनगर पहुंचे।

दिव्यांगो को बांटे निःशुल्क कृत्रिम अंग

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। केसर भवन, पन्ना लाल रोड, कंपनी बाग के गेट नंबर 5 के पास नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर, राजस्थान एवं रोटरी इलाहाबाद मिडटाउन के सह आयोजन से दिव्यांग जनों को निःशुल्क कृत्रिम अंग शिविर लगाकर बांटे। रविवार को प्रातः 10 बजे से सायं 4 बजे तक दिव्यांग जनों को वितरण किया गया। जिसमें दिव्यांगजनों के हाथ (कन्धें एवं कोहनी से) एवं पैरों (जांघ से नीचे) के नारायण क्रित्रिम अंग (लिम्ब) 316 लोगों को नारायण सेवा संस्थान के द्वारा संस्थान के निदेशक प्रशान्त की प्रेरणा से हरि प्रसाद नड्डा के निर्देशन में लगाये गये एवं उन्हे ठीक ढंग से इस्तेमाल करने का प्रशिक्षण भी दिया गया। दिव्यांगजनों एवं उनके सहयोगियों को खाने के पैकेट एवं पानी की व्यवस्था रोटरी क्लब की तरफ की गई थी। कार्यक्रम की अध्यक्षता रोटेरियन शिव शंकर सिंह जी ने की एवं संयोजक संजय गुप्ता रहे। कार्यक्रम में रोटेरियन सतपाल गुलाटी, संजय गुप्ता अंकिता माहेश्वरी विनय संजीव जैन जी एवं रोटरी इलाहाबाद मिडटाउन की पूरी टीम तकरीबन 50 वॉल्न्टियर्स ने कार्यक्रम में पूरा सहयोग किया। जिला दिव्यांग अधिकारी कार्यालय का भी पूरा सहयोग कार्यक्रम में रहा। यह कार्यक्रम प्रयागराज एवं अंचलों के दिव्यांगजनों के लिए वरदान की तरह है। क्रित्रिम अंग लगने से वे अपने जीवन को सुचारु रूप से चला सकेंगे व सामान्य व्यक्ति की तरह जीवन जी सकेंगें। रोटरी क्लब मिडटाउन प्रयागराज वासियों की तरफ से नारायण सेवा संस्थान के फाउण्डर वैष्टलाश अग्रवाल एवं निदेशक प्रशान्त अग्रवाल का बहुत धन्यवाद करता है एवं अभिनन्दन करता है कि नारायण सेवा संस्थान ने प्रयागराज एवं अंचलों के दिव्यांगजनो को क्रित्रिम अंग प्रदान कर अपने नाम नारायण सेवा को चरितार्थ किया है। रोटरी इलाहाबाद मिडटाउन विश्व हिन्दू परिषद के काशी प्रांत के अध्यक्ष के.पी. सिंह जी के प्रति भी अपनी कृतज्ञता प्रकट करता है कि उन्होने परिसर को सहर्ष इस महान कार्य के लिए उपलब्ध कराया एवं विश्व हिन्दू परिषद कार्यालय के आवासीय सदस्यों का इस कार्य में पूर्ण सहयोग किया। रोटरी क्लब मिडटाउन प्रयागराज ने संकल्प लिया कि अगले वर्ष पुनः दिव्यांगों के लिए शिविर का आयोजन किया जायेगा ताकि उन्हें अधिक से अधिक लाभ मिल सके।

यह मुल्क हमारा अच्छा लगता है जैसे मां को अपना बच्चा अच्छा लगता है....

हण्डौर में 22वें राष्ट्रीय कवि सम्मेलन में प्रेम व सद्भाव की बंधी समा

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। हण्डौर स्थित आंचल पब्लिक स्कूल के समीप बाग में शनिवार की रात 22वें राष्ट्रीय कवि सम्मेलन एवं मुशायरे में कवियों और शायरों ने अपनी शानदार रचनाओं से प्रेम व सद्भाव के माहौल की रंगत को परवान चढ़ाया। सावित्री शैक्षिक एवं समाज कल्याण समिति के बैनर तले हुए कवि सम्मेलन में रचनाकारों ने विभिन्न विधाओं के सुर को आगाज देकर श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया।

इसके पूर्व कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि भाजपा नेता एवं लक्ष्मणपुर ब्लाक प्रमुख के प्रतिनिधि राकेश सिंह तथा समाजसेवी आरएल चतुर्वेदी ने मां सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण व

कवि सम्मेलन में काव्यपाठ करती कवयित्री।

दीप प्रज्जवलन कर किया। कवयत्री रूचि द्विवेदी की मां सरस्वती की आराधना से शुरू हुए काव्य पाठ का आगाज देर रात तक बड़ी संख्या में मौजूद सुधी श्रोताओं को अपने आगोश में लिए दिखा। गजेंद्र सिंह विकट की गजल कुछ यूं पढ़ी बेटियां ही हमारी लहर की तरह, यह तो पावन है जैसे गंगाजल की तरहह्यह्य पर जमकर तालियां बजीं। हाथरस जिले के ओज कवि मुनि राणा प्रताप सिंह ने वतन परस्ती का जोश भरा। कवयत्री अर्चना सिंह की रचना पुण्य कर्मों का शुभ परिणाम है बेटी ने बेटी बचाओ के सामाजिक सरोकार को दिशा दी। रूचि द्विवेदी की गजल जिन्दगी भर का साथ कब मांगाह्यह्य को भी सराहा गया। शायर मखदूम फूलपुरी की शायरी यह मुल्क हमारा अच्छा लगता है जैसे मां को अपना बच्चा अच्छा लगता है पर पूरा वातावरण वतन जिन्दाबाद से गूंज उठा। मुसव्विर फूलपुरी की शायरी भी मुशायरे को बेहतरीन आगाज दे गयी। हास्य कवि मधुप श्रीवास्तव की रचना भी लोगों को हंसी से गुदगुदाती दिखी। कवि सम्मेलन में डॉ. नागेंद्र अनुज, इं. चंद्रकांत त्रिपाठी, हरिवंश शुक्ला शौर्य, राधेश पांडेय, कल्पना तिवारी व लक्ष्मीकान्त कमलनयन ने भी रचनाओं से देश के माहौल पर सटीक प्रस्तुतिओं की दाद हासिल की। मुख्य अतिथि बीजेपी नेता राकेश सिंह ने कविता व शायरी को सद्भावना के माहौल को बनाए रखने में अप्रतिम ठहराया। ग्राम प्रधान नीतेश सिंह वीरू ने स्वागत तथा कार्यक्रम के संयोजक अनूप त्रिपाठी ने कवि सम्मेलन व मुशायरे के ध्येय पर प्रकाश डाला। साहित्यकार संजय शुक्ला एवं सांसद प्रमोद तिवारी के मीडिया प्रभारी ज्ञानप्रकाश शुक्ल व वरिष्ठ अधिवक्ता देवी प्रसाद मिश्र एवं देशसेवक डब्बू ने अपने उद्बोधन में साहित्य के जरिए सामाजिक सरोकार की मजबूती पर प्रकाश डाला। इस मौके पर संयुक्त अधिवक्ता संघ के अध्यक्ष अनिल त्रिपाठी महेश, डॉ. बच्चा बाबू वर्मा, आलोक कुशवाहा, राजेश मिश्र, जयसिंह, इंद्रजीत सिंह, प्रकाश त्रिपाठी, शिवम त्रिपाठी, आलोक त्रिपाठी आदि मौजूद रहे।

पट्टी नगर में लगे वाटर एटीएम बने है शोपीस, गर्मी में लोग परेशान

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। आम जनमानस की सुविधा तथा नगर वासियों को स्वच्छ तथा सुलभ जल देने के उद्देश्य से पट्टी नगर में स्थापित किए गए कई वाटर एटीएम का हाल बेहाल है। लाखों की लागत से बना हुआ एटीएम शोपीस बन गया है जिसके कारण लोगों में असंतोष है वही जिम्मेदार इस तरफ कोई भी ध्यान नहीं दे रहे हैं।

पट्टी नगर में नगर वासियों तथा वादकारियों तथा आम जनमानस को चिलचिलाती हुई भीषण गर्मी में पानी की सुविधा प्रदान करने के लिए शासन की तरफ से 10 साल पहले वाटर कई एटीएम स्थापित किया गया था। सरकार की महत्वकांक्षी इस योजना के शुरूआती दिनों में ऐसा प्रतीत हुआ कि लोगों को पानी पीने की किल्लत अब महसूस नहीं होगी लेकिन पट्टी चमन चैक तहसील गेट के बगल तथा ढकवा मोड़ पर लगा हुआ वाटर एटीएम पूरी तरीके से बेकार हो चुका है। जिससे वहां पर आने जाने वाले लोग अपनी प्यास बुझाने के लिए

शोपीस पड़ा वाटर एटीएम।

भटकते हुए नजर आते हैं, लेकिन उन्हें स्वच्छता व सुलभ जल उपलब्ध नहीं हो पाता है। नगर पंचायत अध्यक्ष रहे जुग्गीलाल जायसवाल के कार्यकाल में यह वाटर एटीएम स्थापित किया गया था लेकिन अब वाटर एटीएम सिर्फ शो पीस बना हुआ है इस संबंध में कई बार शिकायत करने तथा अधिकारियों की नजर वाटर एटीएम पर पड़ने पर भी वे उसे नजरअंदाज करते हैं अब देखना यह होगा कि कब वाटर एटीएम ठीक होकर लोगों को स्वच्छ तथा सुलग जल्द प्रदान करता है।

चोरी का वांछित अभियुक्त गिरफ्तार

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। पुलिस अधीक्षक सतपाल अंतिल के निर्देशन में जनपद के थाना नवाबगंज उ0नि0 अनूप कुमार यादव अपने हमराही के साथ क्षेत्र भ्रमण के दौरान वांछित, वारण्टी अभियुक्त थाना नवाबगंज के मु0अ0सं0 43/23 धारा 457, 380, 511 भादवि में वांछित अभियुक्त आशीष कुमार सरोज पुत्र अशोक कुमार सरोज नि0ग्राम गंगश्री थाना उंचाहार जनपद रायबरेली को थाना क्षेत्र नवाबगंज के परियावां स्टेशन के पास से गिरफ्तार कर लिखा पढ़ी करके न्यायालय भेजा।

पागल कुत्ते के काटने से साँड हुआ पागल, बना लोगो के लिए खतरा

पट्टी, प्रतापगढ़। पागल कुत्ते के काटने से साड़ पागल हो गया है, जिससे वह लोगों की जान के लिए आफत बन गया है। आते जाते हुए लोगों को दौड़ा लेता है तथा लोग वहां से भागते हुए नजर आते हैं। पट्टी नगर में एक दिन से एक पागल कुत्ते के हमले से साड़ जख्मी हो गया। इलाज न होने के अभाव में वह भी पागल हो गया है जिससे किसी व्यक्ति को देखकर वह दौड़ा लेता है और मारने लगता है। लोग उससे भागते हुए नजर आते हैं। वही पैदल जाते हुए स्कूली बच्चे के लिए भी वह खतरा बना हुआ है। इस संबंध में जब वन विभाग को फोन किया गया तो वह अपनी जिम्मेदारी से पल्ला झाड़ते हुए जवाब दिए कि पशु विभाग का मामला है। पशु विभाग के अधिकारियों को फोन लगाने पर उनका मोबाइल नंबर बंद आया।

जागरूकता आउटरीच कार्यक्रम का आयोजन आज

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। आयकर अधिकारी बृज किशोर दूबे ने अवगत कराया है कि प्रधान आयकर आयुक्त गोरखपुर एवं संयुक्त आयकर आयुक्त रेंज फैजाबाद से प्राप्त दिशा निर्देश के अनुसार 08 मई 2023 को पूर्वान्ह 11.30 बजे कलेक्ट्रेट सभागार में एक जागरूकता आउटरीच कार्यक्रम का आयोजन किया जायेगा।

उन्होने बताया है कि भारत सरकार के वित्त मंत्रालय के आयकर विभाग द्वारा एक ई-वेरिफिकेशन स्कीम 2021 प्रारम्भ की गयी है। योजना के अनुसार सभी करदाताओं/निर्धारितियों इत्यादि को अपना आयकर रिटर्न भरने के पूर्व उक्त योजना द्वारा उपलब्ध उनके विरूद्ध सभी वित्तीय लेन देन (उच्च बैंक जमा राशि, उच्च बैंक निकासी, बैंक ब्याज, स्टॉक एक्सचेंज/म्यूच्यूअल फण्ड के द्वारा निवेश, अचल सम्पत्ति की खरीद बेंच इत्यादि) की सूचनाओं को ई-वेरिफिकेशन द्वारा सत्यापन करने के पश्चात सही विवरण आयकर विवरणी में दर्शार्ना एवं सही टैक्स की अदायगी करना सुनिश्चित करने उद्देश्य से उच्च कर देयता वाले करदाताओं, बार एसोसिएशन, चार्टर्ड एकाउंटेंट्स, व्यापारिक संगठन, अन्य प्रोफेशनल्स तथा क्षेत्रीय एवं स्थानीय मीडिया के बीच जागरूकता अभियान का आयोजन किया गया है जिसका उद्देश्य करदाताओं/निर्धारितियों के अपने विरूद्ध आयकर विभाग के पास उपलब्ध विभिन्न लेन देन की सूचनाओं को उनसे साझा करना तथा उनके द्वारा सही विवरण आयकर विवरणी में दर्शित करने हेतु स्वैच्छिक अनुपालन को बढ़ावा देना है ताकि सही विवरणों को कम प्रदर्शित किया जाना, न प्रदर्शित किया जाना, कर अपवंचना तथा कर विभाग की दखलंदाजी इत्यादि मामलों को अत्यधिक कम किया जा सके।

भक्ति भाव से आराधना से मिला करता है नारायण का दर्शनः बाल व्यास

श्रीमद् भागवत कथा ज्ञानयज्ञ में बही भक्ति रसधार

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। नगर के घुइसरनाथ रोड छोटी नहर के समीप हो रही श्रीमद् भागवत कथा ज्ञानयज्ञ में रविवार को श्रद्धालुओं का जमघट दिखा। कथा व्यास श्रीधाम वृन्दावन से पधारे बाल व्यास नयन कृष्ण महराज ने कहा कि ईश्वर की भक्ति सदैव भक्ति भाव से करनी चाहिए।

प्रहलाद एवं ध्रुव की भगवान के प्रति निष्छल भक्ति भावना का उदाहरण रखते हुए उन्होने कहा कि सच्चे मन से भगवान के प्रति समर्पित भक्ति को नारायण स्वयं एक दिन दर्शन दिया करते हैं। बाल व्यास

नगर में भागवत कथा सुनाते बाल व्यास नयनकृष्ण।

नयन कृष्ण जी ने कहा कि भागवत कथा हमारी नयी पीढ़ी के चरित्र निर्माण तथा उनमें धर्म के पथ के प्रदर्शन का सबसे सुगम व सरल मार्गदर्शिका भी है। कथा व्यास ने कहा कि द्वारिकाधीश ने अपने लोक अवतरण में धर्म की रक्षा के लिए सत्य को सबसे बड़ा जीवन का कवच निरूपित किया है। कथा के दौरान भजन संकीर्तन में भी श्रद्धालुओं को मंत्रमुग्ध देखा गया। शिक्षक अजय सिंह तथा अभिनव मिश्रा, प्रधानाचार्य एसएन त्रिपाठी, आदित्य त्रिपाठी व रिंकू शुक्ला ने कथा व्यास का श्री अभिषेक किया। सिद्धार्थ त्रिपाठी व शुभम मिश्र, सूरज गुप्ता, अजय उपाध्याय, रमेश सोनी, विकास पटवा, मिथिलेश श्रीवास्तव ने सामूहिक कथा आयोजन समिति की ओर से श्रद्धालुओं का रोली तिलक किया। संयोजक मंडल के रामनायक मिश्र, छविश्याम पांडेय, सुशील पांडेय, हर्षित तिवारी का सामूहिक कथा के आयोजन में सराहनीय योगदान दिखा। इस मौके पर ब्लाक प्रमुख अमित सिंह पकंज, चेयरपर्सन प्रतिनिधि संतोष दुबे, पं. देवानन्द मिश्र, शिक्षक नेता राजेश पांडेय, बृजेश पांडेय, चिन्तामणि तिवारी, श्रीकृष्ण शुक्ल, जयंत शंकर प्रसाद, जीतेन्द्र मिश्र, अभिषेक मिश्र, विवेक पांडेय, रजनीश मिश्र, मृडाल शुक्ल आदि रहे।

बास्केटबाल प्रतियोगिता में शहर के दो स्कूल ने मचाया धमाल

आइंस्टीन स्कूल एवं आत्रेय एकेडमी के बच्चों ने दिखाए हुनर

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। प्रयागराज में मंडल स्तरीय बास्केटबाल प्रतियोगिता संपन्न हुई जिसमें प्रतापगढ़ की टीम ने पहले राउंड में बांदा को 45,-3 से पराजित कर सेमीफाइनल में प्रवेश किया। सेमीफाइनल में कौशांबी को 25-5 से हराकर ,फाइनल में प्रवेश कर प्रयागराज से 22 -18 से पराजित होकर द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

बास्केटबॉल प्रतियोगिता में प्रतापगढ़ को द्वितीय स्थान प्राप्त होने पर जिला बास्केटबॉल एसोसिएशन के अध्यक्ष आरएन त्रिपाठी एवं डॉ आशुतोष त्रिपाठी पूर्व प्रत्याशी सदर विधानसभा प्रतापगढ़ ने सभी खिलाड़ियों को बधाई देते हुए कहा कि बुलंदशहर में आयोजित अंडर 16 बास्केटबॉल प्रतियोगिता बुलंदशहर में आयोजित की गई है। टीम 8 मई 2023 को बुलंदशहर के लिए प्रस्थान करेगी सभी खिलाड़ियों को तथा टीम कोच को बधाई देते हुए टीम के उज्जवल भविष्य की कामना की। यह जानकारी बास्केटबाल कोच रघु ने दी।

बास्केट प्रतियोगिता में भाग लेते प्रतिभागी।

बारात से लौट रही स्कॉर्पियो पलटी, दो घायल

पट्टी, प्रतापगढ़। बारात से वापस लौट रही स्कॉर्पियो अनियंत्रित होकर नहर में पलट गई जिसमें दो लोग गंभीर रूप से जख्मी हो गए मौके पर पुलिस पहुंची तो घायलों को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पट्टी में इलाज के लिए भेजा। पट्टी तहसील क्षेत्र में एक बारात शनिवार की रात आई हुई थी। लगभग 12 बजे स्कॉर्पियो में बाराती आ रहे थे तभी गजरिया नहर के समीप स्कॉर्पियो नहर में पलट गई जिससे दो लोग गंभीर रूप से जख्मी हो गए। शोर शराबा पर आसपास के लोग दौड़े तो स्थानीय पुलिस को इसकी सूचना दी गई। पुलिस आई है और दोनों गंभीर रूप से घायलों को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पट्टी में इलाज के लिए भेजा। घायलों का नाम अभी तक स्पष्ट नहीं हो सका है।

कर्नाटक में चुनावी फिजा तैयार करने में उत्साहित हुए कांग्रेसी

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। कर्नाटक विधानसभा चुनाव में बेल्हा के सियासी रसूख को लेकर इधर कांग्रेसी खासे उत्साहित व मगन देखे जा रहे हैं। जिले के दिग्गज कांग्रेसी नेता प्रमोद तिवारी राज्यसभा में विपक्ष के उपनेता के रूप में पिछले तीन दिनों से कर्नाटक में विधानसभा चुनाव को लेकर पार्टी प्रत्याशियों के पक्ष में प्रचार के लिए जुटे हुए हैं।

सोनिया गांधी तथा प्रियंका गांधी व राहुल गांधी एवं कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे के कर्नाटक में चुनाव प्रचार को पार्टी के लिए मुकाम तक पहुंचाने के लिए राज्यसभा सदस्य प्रमोद तिवारी भी वहां एडीचोटी का जोर लगाए हुए हैं।

रविवार को यहां मीडिया प्रभारी ज्ञानप्रकाश शुक्ल ने बताया कि प्रमोद तिवारी कर्नाटक के दौरे में राज्य की जनता से भाजपा के मुख्यमंत्री समेत सत्ता के जरिए व्यापक भ्रष्टाचार के खिलाफ जनता से कांग्रेस के पक्ष में जनादेश की मजबूत अपील की है। बैंगलूर समेत कई बड़े शहरों में यूपी से वहां रहने वाले लोगों से भी प्रमोद तिवारी ने कांग्रेस के पक्ष में भावनात्मक संवाद के जरिए यह भरोसा जताया है कि कर्नाटक में भाजपा के सफाए के साथ कांग्रेस इस बार पूर्ण बहुमत की सरकार बनाएगी। इधर कर्नाटक विधानसभा चुनाव में भी अपने नेता के बढ़े सियासी कद को देखसुन स्थानीय कांग्रेसियों व प्रमोद तथा मोना के समर्थकों के चेहरे खिले हुए भी दिख रहे हैं। कैंप कार्यालय पर रविवार को जुटे कांग्रेसियों में राज्यसभा में विपक्ष के उपनेता के रूप में प्रमोद तिवारी की राष्ट्रीय छवि को मिल रही मजबूती की भी खुशनुमा चर्चा देखी सुनी गयी।

हत्या के अभियोग में वांछित अभियुक्त गिरफ्तार, आला कत्ल पिस्टल व कारतूस बरामद

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। थाना क्षेत्र लीलापुर के ग्राम घरौरा के पास 27 अप्रैल को एक व्यक्ति को कुछ लोगों द्वारा गोली मारकर घायल कर दिया था जिससे उसकी इलाज के दौरान मृत्यु हो जाने संबंधी प्रकरण में तहरीर के आधार पर थाना लीलापुर में मु0अ0सं0 120/2023 धारा 147, 148, 149, 302 भादवि बनाम 04 नामजद व कुछ अज्ञात व्यक्ति का अभियोग पंजीकृत किया गया था।

पुलिस अधीक्षक सतपाल अंतिल के द्वारा उक्त अभियोग से संबंधित अभियुक्तो की गिरफ्तारी हेतु टीमे गठित कर संबंधित को कड़े निर्देश दिये गये थे। इसी क्रम में थाना लीलापुर के प्र0नि0 सुभाष कुमार यादव मय हमराह द्वारा देखभाल क्षेत्र/तलाश वांछित, वारण्टी अभियुक्त/विवेचना के दौरान मुखबिर की सूचना पर थाना क्षेत्र लीलापुर के बाबूगंज रोड पुलिया के पास से अभियोग उपरोक्त से संबंधित वांछित अभियुक्त समरजीत वर्मा पुत्र छोटेलाल वर्मा नि0ग्राम घरौरा थाना लीलापुर जनपद प्रतापगढ़ को एक यामाहा एफजेड़ मोटर साइकिल नं0 यूपी 72 एबी 7080 के साथ गिरफ्तार किया गया तथा गिरफ्तार अभियुक्त के पास से एक अदद अवैध पिस्टल 32 बोर व 02 अदद जिन्दा कारतूस 32 बोर बरामद किया गया। उक्त बरामदगी के सम्बन्ध में अभियोग उपरोक्त में धारा 3/25 आर्म्स एक्ट की बढ़ोत्तरी की गई। मोटर साइकिल को धारा 207 एमवी एक्ट में सीज किया गया। पूछताछ में गिरफ्तार अभियुक्त ने बताया कि मृतक के साथ उसकी पुरानी रंजिश/जमीनी विवाद चल रहा था। उसी रंजिश के कारण 27 अप्रैल 2023 को मैने तथा मेरे साथियों ने मिलकर मृतक को गोली से मारकर घायल कर दिया था जिसके कारण उसकी मृत्यु हो गई थी।

जिला चिकित्सालय में रक्तदान शिविर का आयोजन आज

प्रतापगढ़। मुख्य चिकित्साधिकारी/उपाध्यक्ष इण्डियन रेडक्रॉस सोसायटी ने अवगत कराया है कि 08 मई 2023 को विश्व रेड क्रॉस दिवस के अवसर पर जिला चिकित्सालय प्रतापगढ़ में एक रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया है। उन्होने जनपद के समस्त स्वैच्छिक रक्तदाताओं से अनुरोध किया है कि रक्तदान शिविर में पधारकर रक्तदान हेतु अपना नामांकन करते हुये रक्तदान करें जिससे आवश्यकता पड़ने पर जरूरतमंदों की सहायता समय पर की जा सके। इस सम्बन्ध में विस्तृत जानकारी अथवा रेड क्रॉस सोसायटी के सदस्य बनने हेतु डा0 सुधाकर सिंह सचिव इण्डियन रेडक्रॉस सोसायटी प्रतापगढ़ कार्यालय पर सम्पर्क कर सकते है।

ताला तोड़कर चोरों ने की लाखों की चोरी, लुटेरों ने मोबाइल व रुपये लूटे

अखंड भारत संदेश

जेठवारा, प्रतापगढ़। बीती रात थाना क्षेत्र के बगिया पुर में घर के बाहर सपरिवार सो रहे गृह स्वामी जीत लाल यादव के यहां पिछले दरवाजे से घर में घुसे चोरों ने कमरो व बॉक्स का ताला तोड़ कर उसमें रखे दो तोले सोने का हार, एक तोला सोने की चैन, एक तोले का छुमका, डेढ़ तोले कि दो अंगूठी, तीन ग्राम में बनी माथ बेंदी, एक किलोग्राम चांदी की करधन, एक दर्जन चांदी का लच्छा, एक नग चांदी की हँसुली समेत तकरीबन पांच लाख रुपये के सोने चांदी के आभूषण चुरा ले गए।सुबह जानकारी होने पर पीड़ित ने थाने पर अज्ञात चोरों के खिलाफ तहरीर दी जिस पर पुलिस जांच कर रही है। इसी क्रम में शनिवार को दिन दहाड़े बाइक सवार बदमाशों ने गाड़ी की किस्त भरने जा रहे थाना क्षेत्र के मनेहुँ निवासी विक्रम कुमार को चमरुपुर पठान के करीब रोक कर उसे मारा पीटा व उसके जेब मे रखे मोबाइल व किस्त के चैतीस सौ रुपये लूट कर भाग निकले। पीड़ित ने थाने पर एक नाम जद व पांच अज्ञात लोगों के खिलाफ तहरीर देकर मुकदमा दर्ज किए जाने की मांग की है।

मां के जयकारों के साथ निकली विंध्यवासिनी धाम के लिये निःशुल्क बस यात्रा

आशुतोष एवं उनकी पत्नी नित्या ने मां का पताका दिखाकर बस को किया रवाना

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। निशुल्क जगत जननी मां विंध्यवासिनी दर्शन यात्रा की पांचवी यात्रा रविवार को भंगवा चुंगी स्थित डॉ आशुतोष त्रिपाठी के जनसंपर्क कार्यालय से प्रस्थान की। जगत जननी मां विंध्यवासिनी दर्शन यात्रा को बहुजन समाज पार्टी सदर विधानसभा से पूर्व प्रत्याशी डॉ आशुतोष त्रिपाठी तथा उनकी धर्मपत्नी एवं समाज सेविका नित्या त्रिपाठी द्वारा संयुक्त रूप से माता रानी की ध्वजा पताका दिखाकर तथा मां के जयकारे लगाकर मां विंध्यवासिनी धाम को प्रस्थान कराया।

रास्ते पर समस्त दर्शनार्थी मां विंध्यवासिनी माता की जयकारा लगाते हुए प्रस्थान किए। कार्यक्रम में प्रमुख रूप से सुशील कुमार श्रीवास्तव गुड्डू लाला, डॉ आशुतोष

बस को मां का पताका दिखाकर रवाना करतीं आशुतोष व नित्या त्रिपाठी।

त्रिपाठी के प्रतिनिधि सुशील मेहरोत्रा, बेबी सिंह, रंजना विश्वकर्मा, संजय सोनी, ओपी त्रिपाठी, अजय कुमार सोनी, देवदत्त त्रिपाठी दिवारी, प्रेम नारायण पांडे, दिवाकर त्रिपाठी, नेहा सिंह आदि उपस्थित थे। बता दें कि प्रतापगढ़ शहर से मां विंध्यवासिनी दर्षन के लिये पहली बार निषुल्क व्यवस्था किसी प्राइवेट संस्था द्वारा की गई है। इसमें शहर के लोग बढ़-चढ़कर हिस्सा ले रहे हैं।

चिकित्सा संस्थान संचालक कराएं पंजीकरण

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। नोडल अधिकारी/उप मुख्य चिकित्सा अधिकारी ने अवगत कराया है कि संचालक निजी चिकित्सालय/नर्सिंग होम/पैथोलाजी/पाली क्लीनिक/क्लीनिक जिन्होनें नवीनीकरण हेतु अपना आवेदन 30 अप्रैल 2023 तक नहीं किये है उनका पंजीयन स्वतः निरस्त हो गया है, ऐसे चिकित्सा संस्थान संचालक अपने चिकित्सा संस्थान का पंजीकरण हेतु आवेदन वेबसाइट पर आनलाइन कराकर अविलम्ब अपने संस्थान का पंजीकरण करा लें, अन्यथा बिना पंजीकरण के चिकित्सा संस्थान संचालित करते पाये जाने पर मेडिकल क्लीनिकल स्टेबलिस्मेंट एक्ट के तहत नियमानुसार समुचित कार्यवाही की जायेगी।

खबर संक्षेप

दुष्कर्म का वांछित अभियुक्त गिरफ्तार

कौशाम्बी। जनपद में अपराध एवं अपराधियों के विरुद्ध चलाये जा रहे अभियान के क्रम में थाना सैनी पुलिस बल द्वारा पॉक्सो एक्ट से सम्बन्धित वांछित अभियुक्त सुनील पुत्र छेदु निवासी गुलामीपुर गनपा थाना सैनी को कमासिन चौराहा के पास से गिरफ्तार कर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्त को न्यायालय भेज दिया है।

बाल अपचारी को नियमानुसार पुलिस अभिरक्षा में लेकर की गई कार्यवाही

कौशाम्बी। थाना सराय अकिल पुलिस बल द्वारा पॉक्सो एक्ट से सम्बन्धित दो बाल अपचारी को नियमानुसार पुलिस अभिरक्षा में लेकर विधिक कार्यवाही के पश्चात न्यायालय किशोर न्याय बोर्ड भेज दिया है।

शराब के साथ गिरफ्तार

कौशाम्बी। जनपद में अवैध शराब के निर्माण एवं तस्करी के विरुद्ध चलाये जा रहे अभियान में थाना पश्चिम शरीरा पुलिस बल द्वारा अभियुक्त बुस्सू पुत्र भूरेलाल निवासी ग्राम व थाना पश्चिम शरीरा को गिरफ्तार कर कब्जे से 08 लीटर अवैध शराब बरामद कर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्त का चालान न्यायालय कर दिया है।

आर्थिक तंगी से परेशान युवक ने फांसी के फंदे से झूलकर की आत्महत्या

अखंड भारत संदेश

घटना के बाद परिजनो में मचा कोहराम

युवक की मौत के बाद घर पर लगी भीड़

कौशाम्बी। जिले के कोखराज थाना क्षेत्र में आर्थिक तंगी से परेशान एक युवक ने फांसी के फंदे से झूलकर आत्महत्या कर ली,काफी देर तक दरवाजा नही खोलने पर पत्नी ने चीख पुकार मचाई तो पड़ोस के लोगो ने दरवाजा तोड़कर देखा तो वह फंदे से लटक रहा था,युवक की मौत से परिजनों में कोहराम मच गया।ग्रामीणों की सूचना पर पहुंची स्थानीय पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया और जांच में जुट गई। घटना कोखराज थाना क्षेत्र के नगर पालिका परिषद भरवारी के चंदीपुर की है जहा सुनील सरोज उम्र 35 वर्ष पुत्र राम स्वरूप मजदूर था,वह ईंट भट्ठे पर काम करता था ,उसकी आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी।सुनील के चार बच्चे है,उसके एक बच्चे को बोन टीवी है,जिसके इलाज के लिए वह कई लोगो से कर्ज ले चुका था और कर्ज को चुकता नही कर पा रहा था,जिससे वह कई दिनों से परेशान रहता था।वही सुनील को कभी सरकार द्वारा कोई भी योजना का लाभ मिला है। सुनील की पत्नी रीना रविवार की दोपहर बच्चे की दवा लेने भरवारी आई हुई थी,और सभी बच्चे बाहर खेल रहा थे,तभी अचानक सुनील कमरे के अंदर गया और दरवाजा बंद कर लिया और गमछा के सहारे छत के चुल्ले से लटककर आत्महत्या कर ली।सुनील की मौत से परिजनों में कोहराम मच गया,घटना की सूचना पर पहुंची कोखराज थाना की भरवारी चौकी पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया और जांच में जुट गई।

महारानियां सहित कई बालू घाटों का खनन अधिकारी ने किया निरीक्षण

कौशाम्बी। खनन अधिकारी अजीत पांडेय ने रविवार को चायल क्षेत्र के आधा दर्जन बालू घाटों का निरीक्षण किया जांच टीम को निरीक्षण में कई खामियां दिखी है। इस पर उन्होंने नाराजगी जताई है। साथ ही ओवर लोड में आठ ट्रको का चालान भी किया है। चायल इलाके में कौशाम्बी के साथ ही प्रयागराज के दो घाटों का परिवाहन हो रहा है। आरोप है कि प्रयागराज के यमुना घाटों के संचालन का टेंडर लेकर रेत माफिया चोरी से बोट से यमुना की बीच धारा से खनन कर कौशाम्बी चायल क्षेत्र से परिवाहन कर रहें है। इसकी शिकायत अफसरों से हुई थी। रविवार को खनन अधिकारी अजीत पांडेय ने अपने टीम के साथ घाटो का निरीक्षण किया है। चर्चा है कि निरीक्षण में कई खमिया मिली हैं। अब देखना है कि कार्रवाई होती है या ऑल इज ओके बता कर मामले को टरका दिया जाएगा। इस बाबत खनन अधिकारी अजीत पांडेय का कहना है कि रोटिन निरीक्षण था। कुछ खामियां नजर आई है जांच के बाद विभागीय कार्रवाई की जायेगी।

महिलाओं को जागरूक करती महिला सिपाही

मिशन शक्ति अभियान के तहत किया गया जागरूक

कौशाम्बी। महिलाओं की सुरक्षा व सम्मान के लिए चलाए जा रहे मिशन शक्ति अभियान के अंतर्गत पुलिस टीम द्वारा क्षेत्र में भ्रमण कर महिलाओ बालिकाओ को नारी सुरक्षा स्वावलंबन एंव नारी सम्मान की दिशा में चलाए जा रहे महिला सुरक्षा संबंधी विभिन्न हेल्पलाइन नम्बरो के बारे में जानकारी दी गई। किसी भी व्यक्ति द्वारा छेड़खानी, सोशल मीडिया से परेशान करना या अनजान व्यक्ति पर किसी प्रकार का संदेह होने पर तत्काल 1090 व 112 सहित अन्य मोबाइल नंबरों पर फोन करके सूचना दे सकती हैं। पुलिस को सूचना देने वाले का नाम भी गोपनीय रखा जाएगा। थाने पर महिला हेल्पलाइन बनाया गया है, जिस पर महिला पुलिस अधिकारी व कर्मचारी हमेशा मौजूद रहती हैं थाने पर जाकर अपनी समस्या से अवगत करा सकती हैं कहा कि जरूरत पड़ने पर सरकार द्वारा टोल फ्री नंबर 112, 1090, 1076, 1073 अन्य नंबर जारी किए गए हैं। इन नंबरों पर छात्रा या महिला छेड़छाड़ या किसी तरह की मुश्किल होने पर शिकायत कर सकती है। शिकायतकर्ता अगर चाहे तो उसका नाम गुप्त रखा जाएगा। थाने पर महिला हेल्प डेस्क बनाया गया है। महिला पुलिस अधिकारी हमेशा मौजूद रहती हैं।

डिप्टी सीएम का जन्मदिन मनाते पार्टी पदाधिकारी

धूमधाम से मनाया गया डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य का जन्मदिन

भाजपा कार्यकताओं पदाधिकारियों ने डिप्टी सीएम के जन्मदिन पर एक दूसरे को खिलाई मिठाई

अझुवा कौशांबी। उत्तर प्रदेश सरकार के उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य का जन्मदिन भारतीय जनता पार्टी कार्यालय अझुवा में बड़े ही धूमधाम से मनाया गया है कार्यकताओं ने उनके जन्मदिन पर केक काटकर और एक दूसरे को मिठाई खिला कर डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य के लंबी आयु की कामना प्रभु से की है इस अवसर पर भारतीय जनता पार्टी के जिला उपाध्यक्ष धर्मराज मौर्य, शिव प्रताप मौर्य, करन सिंह, प्रशांत केसरवानी ओमप्रकाश कुशवाहा, गुलाब लोधी, राम बाबू मोदनवाल, चन्द्र पाल सिंह, उमेशचन्द्र विश्वकर्मा सहित दर्जनों पदाधिकारी, कार्यकर्ता मौजूद रहे।

अपराध व अपराधियों पर करें सख्त कार्यवाही हीलाहवाली बर्दास्त नहीं : क्षेत्राधिकारी

अखंड भारत संदेश

सीओ चायल ने माफियाओं और अवैध खनन सहित तमाम कृत कार्यवाही की समीक्षा की, सीओ चायल योगेन्द्र कृष्ण नारायण ने सर्किल के सभी थाना व चौकी प्रभारियों के साथ की गोष्ठी

कौशाम्बी। क्षेत्राधिकारी चायल योगेंद्र कृष्ण नारायण द्वारा अपराध पर लगाम लगाने के लिए सर्किल चायल के सभी थाना प्रभारियों/ थानाध्यक्षों/ चौकी प्रभारियों के साथ गोष्ठी की गई। उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा की अपराध और अपराधियों पर सख्त कार्यवाही करें, हीलाहवाली बर्दास्त नहीं की जाएगी गोष्ठी में सीओ चायल द्वारा निरोधात्मक कार्यवाही, विवेचनाओं के गुणवत्तापरक और समयबद्ध निस्तारण, गैंगस्टर एक्ट के तहत 14(1) के तहत जब्तीकरण, माफियाओं और अवैध खनन के संबंध में कृत कार्यवाही की समीक्षा की गई। गोष्ठी में सीओ द्वारा सभी अधिकारियो को उच्चाधिकारियों के निदेशों से अवगत कराया गया, रात्रि चेकिंग को प्रभावी बनाए रखने चोरी नकबजनी के सफल अनावरण, अवैध टैक्सी स्टैंड और मानक के विपरीत लगे लाउडस्पीकरों, अवैध, जहरीली शराब के विरुद्ध अभियान के संबंध में वार्ता कर संबंधित को आवश्यक निर्देश दिए गए।

न्यूज झरोखा : चुनाव

रिजवी कॉलेज में आयोजित हुई नीट की परीक्षा

करारी कौशाम्बी। रविवार को यूपी नीट 2023 परीक्षा का सेंटर कौशांबी के करारी रिजवी स्प्रिंग फील्ड स्कूल मे बनाया गया जहां सुबह समय 11:30 से 1:50 तक परीक्षा में छात्रों को विद्यालय में प्रवेश कराया गया 2 बजे से नीट की परीक्षा प्रारंभ हुई परीक्षा शांतिपूर्ण तरीके से संपन्न हुई परीक्षा के दौरान करारी पुलिस पूरी तरह से सुरक्षा मे सख्ती से कानून और अनुशासन का पालन कराती रही नीट परीक्षा की व्यवस्था में करारी थानाध्यक्ष गणेश प्रसाद सिंह करारी कस्बा हल्का उपनिरीक्षक विप्लेश उप निरीषक विश्वनाथ पाल कांस्टेबल बृजेश सिंह शिवपूजन , द्विवेदी नितेश गौतम, मुकेश कुमार राम सागर तिवारी, हरिश्चंद्र शर्मा महिला कांस्टेबल, गुड्डीय सिंह पूजा पल आदि लोग मौजूद रहे।

गांजा के साथ दो अभियुक्त गिरफ्तार

कौशाम्बी। जनपद में अपराध एवं अपराधियों के विरुद्ध चलाए जा रहे अभियान के क्रम में थाना सदीपनघाट पुलिस बल द्वारा वाहन चेकिंग के दौरान दो अभियुक्तों राहुल यादव पुत्र धर्मपाल निवासी हुसैनमई गौसपुर थाना संदीपनघाट व अंकित कुमार पुत्र पप्पू सरोज निवासी चिटकहना कशियापूर्व थाना संदीपनघाट को मेला मूरतगंज के पास से 500-500 (1 किलोग्राम) ग्राम नाजायज गोजा के साथ गिरफ्तार कर गिरफ्तारी व बरामदगी के आधार पर थाना स्थानीय पर मुकदमा पंजीकृत कर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्त को न्यायालय भेज दिया है।

तमंचा कारतूस के साथ अभियुक्त गिरफ्तार

कौशाम्बी। जनपद में अपराध एवं अपराधियों के विरुद्ध चलाए जा रहे अभियान के क्रम में थाना मोहब्बतपुर पइन्सा पुलिस बल द्वारा मुखबिर की सूचना पर अभियुक्त वीरेन्द्र सिंह पुत्र धरम सिंह निवासी थोन थाना मोहब्बतपुर पइन्सा को हकीमपुर से थोन जाने वाले रास्ते से एक अदद तमंचा 315 बोर व दो अदद जिन्दा कारतूस 315 बोर के साथ गिरफ्तार कर गिरफ्तारी व बरामदगी के आधार पर थाना स्थानीय पर मुकदमा पंजीकृत कर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्त को न्यायालय भेज दिया है।

कौशांबी के ज्योतिषी राम सियाशन शास्त्री का जबलपुर में सम्मान

टेढ़ी मोड़ कौशांबी। सिराथू तहसील के अंतर्गत कड़ा ब्लॉक के अहिरारा गांव के मूल निवासी राम सियाशन शास्त्री का शुरू से ही ज्योतिषी में खास लगाव रहा है 25 वर्षों से वह ज्योतिष के क्षेत्र में सक्रिय हैं इसी काम को देखते हुए उन्हें मध्यप्रदेश के जबलपुर में स्थित रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय ने शुक्रवार को इंटरनेशनल कांफ्रेंस के दौरान डॉक्टरेट की मानद उपाधि देकर सम्मानित किया यही उत्तर प्रदेश की कुल 18 विभूतियों को यह सम्मान मिला वहीं शास्त्री जी के मित्रों को सोशल मीडिया के माध्यम से जैसे ही उनको सम्मानित किए जाने की सूचना लगी कि कौशांबी के राम सियाशन शास्त्री जी का सम्मानित किया गया है कौशांबी वासियों ने उन्हें बधाई दी वहीं राम सियासत शास्त्री ने कौशांबी का भी ज्योतिष के क्षेत्र में नाम रोशन किया।

बेटे का इलाज कराने निकली महिला लापता

कौशांबी। चरवा थाना क्षेत्र के एक गांव में शनिवार की भोर बीमार बेटे का इलाज कराने के लिए निकली महिला अचानक लापता हो गई है खोज बीन के बाद भी जब उसका कोई सुराग नहीं लगा तो परिजनों ने पुलिस को तहरीर देकर मदद की गुहार लगाई है। चरवा क्षेत्र के एक गांव निवासी व्यक्ति दिल्ली शहर में रहकर प्राइवेट नौकरी करते हैं। उनकी पत्नी तीन बच्चों के साथ घर पर रहती हैं। युवक के मुताबिक शनिवार की भोर उनके दो वर्षीय बेटे को बुखार आया तो पत्नी ने पति को फोन से सूचना करते हुए दो बच्चों को घर पर ही छोड़ कर बीमार बच्चे का इलाज कराने के लिए पड़ोसी से 35 हजार रुपये उधारी और घर में रखे पंद्रह हजार सहित पचास हजार रुपये लेकर गांव के ही युवक के साथ निकली। इस बीच वह सभी संदिग्ध परिस्थितियों में लापता हो गयी देर सुबह तक वह घर नहीं पहुँची तो परिजनों को अनहोनी की आशंका हुई। दोपहर तक पति घर पहुंचा और उसकी तलाश शुरू किया तो पत्नी का मोबाइल भी बंद आने लगा। खोज बीन के बाद भी जब उसका कोई सुराग नहीं लगा तो रविवार को मामले में पुलिस की मदद मांगी है। तहरीर मिलने के बाद पुलिस ने जांच शुरू किया है ।

रंजिशन युवक को चलती बाइक से गिराया, जमकर की पिटाई

कौशाम्बी। करारी कोतवाली क्षेत्र के तियरा जमालपुर गांव के पास शनिवार की रात एक कार्यक्रम में शरीक होने जा रहे एक युवक को कुछ लोगों ने बाइक से गिरा कर जमकर पिटाई किया। चचेरे भाई ने बीच बचाव किया तो उसकी भी पिटाई की गई। मारपीट में दोनों को काफी चोटे आई। शिकायत पर पुलिस घटना की जांच कर रही है। कौशाम्बी कोतवाली के बिदाव गांव का मोहित पुत्र बबलू साहू अपने चचेरे भाई मुकेश के साथ बाइक से तियरा जमालपुर में एक कार्यक्रम में शामिल होने जा रहे थे। जैसे ही वह तियरा जमालपुर गांव के पास पहुंचा। पुरानी रंजिश को लेकर चरवा कोतवाली के छोटी मौली गांव के करीब आधा दर्जन लोगों ने चलती बाइक में डंडा मारकर गिरा दिया। इसके बाद उसे डंडे से जमकर पीटने लगे। बीच बचाव को मुकेश आया तो उसे भी पीटा गया। मामले की शिकायत पर पुलिस जांच कर रही है।

क्या हुआ जब पिता की डांट से नाराज होकर 25 साल पहले घर छोड़कर गया बेटा वापस आया अपने घर

अखंड भारत संदेश

25 साल बाद घर लौटे बेटे से बात करते लोग

कौशाम्बी। जिले के भरवारी कस्बे में पिता की डांट से नाराज होकर चला गया बेटा वापस आया तो बूढ़े पिता की आंखों में खुशी की चमक कुछ अलग ही बयां कर रही थी। वापस आया बेटा तो परिजन समेत मोहल्ले के लोगो की भीड़ जमा हो गई। मोहल्ले के दोस्त,बूढ़े बुजुर्ग सभी उससे मिलने और बात कर हाल जानने के लिए लालायित दिखे। बहरहाल बेटे के वापस आ जाने की खुशी में पिता की आंखों से आंसू रुकने का नाम ही नही ले रहे थे। मामला भरवारी कस्बे के खलीलाबाद मोहल्ले का है जहां के रहने वाले होरी लाल केसरवानी ने अपने 20 वर्षीय बेटे संजय को किसी बात पर क्रोधित होकर डांट दिया था जिससे आहत होकर संजय अपने परिजनों को छोड़कर कही चला गया,और शनिवार को 25 साल बाद अपने घर लौटा तो पिता होरी लाल सहित सभी घरवालों और मोहल्ले के लोगो की आंखों में आसूं ही आंसू दिखाई पड़ रहे थे। सभी लोग संजय को रुंधी हुई आंखों से निहारकर कुछ कहना चाह रहे थे कि अब तक कहा थे तुम संजय। 25 साल बाद अपने घर लौटे संजय ने बताया कि पिता जी की डांट से वह नाराज था और घर छोड़कर चला गया था,सबसे पहले वह राजस्थान गया था जहां उसने होटल में नौकरी की, कई सालो तक वह राजस्थान में रहने के बाद पंजाब गया जहां उसने होटल में नौकरी के दौरान एक महिला जो कि सरकारी अध्यापिका थी उससे शादी की और उनके तीन बच्चे भी हुए। इस दौरान कुछ सालो पहले आपसी मनमुटाव के बाद याने पत्नी और बच्चों से नाता तोड़ लिया और एक अपने मित्र के नए होटल में काम करने के लिए पंजाब से बिहार के औरंगाबाद आ गया जहां उसने होटल में नौकरी शुरू कर दी। काफी दिनों के बाद उसने झारखंड के देवघर में जाकर भोलेनाथ का दर्शन किया जिसके बाद उसे घर की याद आई और उसने अपने पिता को एक पत्र लिखा, पत्र पाकर पिता होरी लाल को अपने बेटे को देखने की ललक लगी और पत्र के लिफाफे में लिखे हुए मोबाइल नंबर पर उन्होंने बात की। पिता से बात कर और क्षमा मांगकर संजय ने घर आने की बात की तो पिता होरी लाल ने उसे तुरंत घर आने के लिए कहा। जिसके बाद संजय शनिवार की शाम को 6 बजे अपने घर पर पहुंचा तो पिता होरी लाल,परिजनो और मोहल्ले के लोगो की भीड़ जमा हो गई। लोग संजय से उसका हाल जानने के लिए उत्सुक दिखे और संजय ने सभी से एक एक कर मुलाकात की और अपने दुख दर्द और अनुभव को साझा किया।

करोड़ों खर्च के बाद दुर्दशा का शिकार नगर पालिका भरवारी

अखंड भारत संदेश

टूटी नाली सड़कों पर बहता गंदा पानी बनी नगर पालिका परिषद भरवारी की पहचान

नगर पालिका भरवारी में फैली गंदगी

हर्रायपुर कौशांबी। भ्रष्टाचार मुक्त सरकार की बात करने वाली योगी सरकार में चारों ओर भ्रष्टाचार चरम पर व्याप्त है जिससे आम जनमानस को नारकीय जीवन जीने को विवश होना पड़ रहा है सरकारी योजनाएं केवल अभिलेखों में संचालित कर अधिकारी और ठेकेदार कमीशन खोरी में लिप्त है नगर पालिका परिषद भरवारी में बीते 4 वर्षों के बीच विकास कार्यों के बहाने सैकड़ों करोड़ रुपए का बजट योगी सरकार ने खर्च कर दिया लेकिन नगर पालिका परिषद भरवारी में विकास नहीं पूर्ण हो सका सरकारी योजनाओं से कराए गए विकास कार्यों की टीम बनाकर जांच कराए जाने की जरूरत है विकास कार्यों की यदि उच्च स्तरीय जांच हुई तो नगर पालिका परिषद भरवारी के भ्रष्टाचार का खुलासा होना तय है लेकिन उसके बाद भी आला अधिकारियों ने नगर पालिका परिषद भरवारी में व्याप्त भ्रष्टाचार की अभी तक जांच नहीं कराई है जिससे उनकी भी लापरवाही और संलिप्तता से इंकार नहीं किया जा सकता। नगर पालिका परिषद भरवारी के वार्ड नंबर 25 मूरतगंज कस्बे के जिल्ला पर चिटकाना मोहल्ले की नालियां टूट गई है गलियों में कीचड़ युक्त गंदा पानी बह रहा है पूरी सड़क जगह-जगह पर टूटी हुई है सड़कों पर वाहन निकलने पर नालियों के गंदा पानी की छीटे आम जनमानस के शरीर पर पड़ रहा है सड़को पर पैदल चलने लायक नहीं है लोगों को आने जाने में दिक्कतें होती हैं यह पूरा मोहल्ला दुर्दशा का शिकार है कई बार अधिकारियों को मोहल्ले के लोगों द्वारा शिकायती पत्र देकर स्थिति से अवगत कराया गया लेकिन अधिकारियों ने हमेशा इस मोहल्ले के लोगों के साथ पक्षपात का रवैया अपनाया है इस मोहल्ले में सफाई की भी व्यवस्था ठीक नही है सफाई कर्मी भी नाली की ठीक से सफाई कर दे तो आधी दुर्दशा कम हो सकती है लेकिन सफाई कर्मी भी सफाई में लापरवाही कर रहा है जिससे इस मोहल्ले की गंदगी कोढ़ में खाज का काम कर रही है आखिर सैकड़ों करोड़ रुपए का बजट विकास के नाम पर नगर पालिका भरवारी ने कहां खर्च किया है जिससे नगरपालिका के तमाम वार्डो का विकास नहीं हो सका है जिन मोहल्लों में ज्यादा अव्यवस्था थी वहां विकास कार्य नहीं कराए गए हैं जिससे नगर पालिका के अधिकारियों के पक्षपात का भी अंदाजा लगाया जा सकता है क्षेत्र के लोगों ने टूटी नाली को पुनः बनाए जाने सड़क की मरम्मत कराए जाने के साथ-साथ दोषियों के कारनामों की जांच करा कर दंडित किए जाने की मांग की है।

भरवारी रेलवे क्रासिंग पर रेल लाइन बदलने का कार्य शुरू, आवागमन बंद

कौशाम्बी। जिले ।के व्यस्ततम रेलवे क्रॉसिंग भरवारी का रेलवे फाटक पूर्व निर्धारित आदेश के अनुसार रविवार से चार दिनों के लिए बंद कर दिया गया है,भरवारी रेलवे क्रासिंग पर रेल लाइन बदलने का कार्य शुरू हो गया है,रेल कर्मचारी रेल लाइन बदलने का कार्य तेजी से कर रहे है जिसके चलते आवागमन पूरी तरह से बंद कर दिया गया है।वही पैदल और साइकिल से जाने वाले राहगीर किसी प्रकार रेलवे क्रॉसिंग को पार कर रहे है। रेलवे विभाग द्वारा रविवार की सुबह 6.30 से 10 मई तक चार दिनों के लिए भरवारी रेलवे फाटक को पूरी तरह से बंद कर दिया है,इस बीच रेल कर्मचारी रेल लाइन बदलने में जोर शोर से जुटे हुए है,रेलवे लाइन को बदलने के दौरान लोगो का आवागमन पूरी तरह से बंद कर दिया गया है,वही पैदल चलने वाले लोग और साइकिल से आने जाने वाले राहगीर किसी तरह से रेलवे क्रॉसिंग को पार कर रहे है।

खेत में काम कर रही महिला से दुष्कर्म का प्रयास

कौशाम्बी। जिले के पिपरी थाना क्षेत्र में खेत में काम कर रही एक महिला से दुष्कर्म के प्रयास का मामला सामने आया है,पीड़िता ने इसकी शिकायत पुलिस से की है ,पुलिस ने पीड़िता की शिकायत पर आरोपी युवक के खिलाफ छेड़खानी समेत मारपीट की धाराओं में केस दर्ज कर आरोपी युवक की तलाश शुरू कर दी है एफआईआर में आरोपी युवक के साथ उसके मां-बाप को भी शामिल किया गया है। जानकारी के मुताबिक पिपरी थाना क्षेत्र के एक गांव की महिला रोज की तरह गांव के बाहर खेत मे बैगन के पेड़ो पर मिट्टी चढ़ाने का काम कर रही थी, तभी अचानक पीछे से किसी आदमी ने उसे पकड़ लिया, पलट कर देखा तो वह गांव का युवक सत्यम था, आरोप है कि उसने उसे पकड़ कर जमीन पर गिरा दिया और दुष्कर्म करने का प्रयास करने लगा, पीड़िता ने शोर मचा कर लोगों को एकत्रित करने की कोशिश की, लेकिन दोपहर का समय होने के चलते खेत में आसपास कोई नहीं था जो उसे बचाने आता। बड़ी मुश्किल से आरोपी के चंगुल से छूटकर वह अपने घर भागते हुए पहुंची और पति को सारी बात बताई। पीड़ित व उसका पति आरोपी सत्यम के मा-बाप के पास पहुचे। बेटे की करतूत बताकर उसे समझाने की बात कही, इस पर आरोपी के पिता ने उन्हें भगा दिया।

घूस की रकम लेने के बाद भी लेखपाल ने नहीं कराई वरासत

बेनीराम कटरा कौशाम्बी। चायल तहसील क्षेत्र के आइमा पुर के बृजेश कुमार का कहना है कि उसके पिता गुलाबचंद की मौत हो चुकी है और मौत के बाद वह पिता की संपत्ति में वरासत कराने के लिए परेशान है शिकायतकर्ता बृजेश कुमार ने लेखपाल पर आरोप लगाया कि उसके पिता की संपत्ति का वरासत करने के नाम पर लेखपाल ने आठ महीने पहले चार हजार रुपए की रकम को ले ली लेकिन रकम लेने के बाद भी उसके पिता की संपत्ति में उसका नाम वारिस के स्थान पर नहीं दर्ज हुआ है उसका कहना है कि उसने पैसा देने के बाद कई बार लेखपाल से बारासत करने के लिए कहा लेकिन लेखपाल लगातार वरासत करने में बहानेबाजी कर रहा है शिकायतकर्ता का कहना है कि लेखपाल उसे रकम भी नहीं दे रहा है और उसके पिता की संपत्ति का वरासत भी नहीं कर रहा है पीड़ित ने आला अधिकारियों का ध्यान आकृष्ट कराते हुए पिता की जमीन का वरासत कराए जाने की मांग की है।

जन संपादकीय

सुलगता मणिपुर

पूर्वोत्तर राज्य मणिपुर में इस वक्त हालात बिगड़े हुए हैं। मेइती समुदाय को अनुसूचित जनजाति का दर्जा देने के विरोध में राज्य में बड़े पैमाने पर प्रदर्शन हुए, जिसके बाद हिंसा भी भड़क उठी। बुधवार को ऑल ट्राइबल स्टूडेंट्स यूनियन ने 'आदिवासी एकजुटता मार्च' बुलाया था, जिसमें हजारों लोग शामिल हुए। अशांत मणिपुर में हालात काबू में करने के लिए सेना का फ्लैग मार्च कराया गया। बड़ी रैलियों पर प्रतिबंध के साथ कई जिलों में रात को कर्फ्यू लगाया गया है और अगले पांच दिनों के लिए पूरे राज्य में इंटरनेट को बंद कर दिया गया है। भाजपा सरकार के लिए विरोध-प्रदर्शनों पर नियंत्रण का यह सबसे आसान हथियार बन गया है कि इंटरनेट बंद कर दो। कश्मीर में एक लंबे वक्त तक सरकार ने यही किया, अब मणिपुर की बारी है। अच्छा है कि इंटरनेट बंद होने से पहले ही राज्यसभा सांसद, ओलंपिक विजेता और मुक्केबाजी की विश्वचैंपियन रह चुकी एम सी मैरीकॉम ने बुधवार की आधी रात को ट्वीट किया कि मेरा राज्य मणिपुर जल रहा है, मदद कीजिए। इस ट्वीट में उन्होंने प्रधानमंत्री, गृहमंत्री और प्रधानमंत्री कार्यालय को टैग किया है। मैरीकॉम को अंदाजा नहीं होगा कि प्रधानमंत्री मोदी और गृहमंत्री अमित शाह इस वक्त कर्नाटक चुनाव में कितने व्यस्त हैं। जब वे दिल्ली में जंतर-मंतर तक नहीं आ पा रहे तो मणिपुर तो दूर है। वैसे पिछले साल जब मणिपुर में चुनाव होने थे, तो प्रधानमंत्री ने वहां दौरे करने का वक्त निकाल लिया था। एक चुनावी सभा में उन्होंने कहा था कि ये चुनाव मणिपुर के आने वाले 25 साल को निर्धारित करने वाला है। स्थिरता और शांति की जो प्रक्रिया इन पांच सालों में शुरू हुई है उसे अब हमें स्थायी बनाना है इसलिए भाजपा की सरकार यहां बहुमत से बनना जरूरी है। श्री मोदी ने ये भी कहा था कि बंद और ब्लॉकेड से मणिपुर का शहर हो या गांव, हर क्षेत्र को राहत मिली है। वरना कांग्रेस सरकार ने तो बंद और ब्लॉकेड को ही मणिपुर का भाग्य बना दिया था। चुनावी नतीजे भाजपा के पक्ष में ही आए और सरकार फिर से भाजपा की बनी, लेकिन साल भर बीतते ही सरकार की अक्षमता का नमूना भी सामने आ गया। एक ऐसे विवाद ने पूरे राज्य में अशांति का माहौल बना दिया, जो संवेदनशीलता और दूरदर्शिता के साथ संभाला जा सकता था। मणिपुर में मैतेई, नागा और कुकी, ये तीन प्रमुख समुदाय है। इनमें नागा और कुकी आदिवासी हैं, जिन्हें अनुसूचित जनजाति का दर्जा मिला हुआ है, इन दोनों समुदायों के ज्यादातर लोग ईसाई धर्म को मानने वाले हैं। जबकि मैतई हिंदुओं की आबादी वाला समुदाय है, जो अब तक गैरआदिवासी माना जाता था, लेकिन बीते मार्च महीने में मणिपुर हाईकोर्ट ने मैतई समुदाय को भी अनुसूचित जनजाति का दर्जा देने का आदेश दिया। यह आदेश 19 अप्रैल को हाईकोर्ट की वेबसाइट पर अपलोड हुआ। इसके बाद से यहां असंतोष की चिंगारी सुलगने लगी जो अब आग का रूप ले चुकी है। क्योंकि अब इस राज्य में आदिवासी और गैरआदिवासियों के बीच जमीन और अन्य सुविधाओं के अधिकार का सवाल खड़ा हो गया है। लगभग साढ़े 22 हजार वर्ग किमी में फैले मणिपुर में लगभग 10 इलाका घाटी का है और शेष 90 प्रतिशत पहाड़ी इलाका है। राज्य के कानून के मुताबिक पहाड़ी इलाके में केवल आदिवासी ही बस सकते हैं, जबकि घाटी गैरआदिवासियों के लिए है और आदिवासी चाहें तो यहां भी रह सकते हैं। इस तरह 53 प्रतिशत आबादी वाले मैतेई समुदाय के लिए अब तक घाटी का ही इलाका था, लेकिन अब अजजा दर्जे के बाद वे पहाड़ी इलाके में भी जा सकेंगे। इतना ही नहीं आदिवासियों के लिए आरक्षित नौकरियों और शैक्षणिक संस्थानों में भी अब मैतेई समुदाय का हिस्सा होगा, जिसे लेकर राज्य के आदिवासी सशंकित है। मैतेई लोन या मणिपुरी भाषा को केन्द्रीय सशस्त्र पुलिस बल की परीक्षा में स्वीकृति मिली हुई है, संविधान की आठवीं अनुसूची में भी मैतेई भाषा को शामिल किया गया है। इन सब वजहों से यह धारणा बनी हुई है कि मैतेई समुदाय के लोग नागा और कुकी समुदाय की अपेक्षा अधिक प्रभावशाली हैं, और अब उन्हें आदिवासियों के अधिकारों में भी हिस्सा मिल जाएगा। इसी वजह से आदिवासी छात्र संगठनों ने इस फैसले का व्यापक विरोध किया। मणिपुर में यह अनावश्यक टकराव टाला जा सकता था, बशर्ते ऐसा कोई भी कदम उठाने से पहले सभी संबंधित पक्षों को विश्वास में लेकर चर्चा की जाती।

किसी समुदाय को अनुसूचित जनजाति का दर्जा दिया जाना चाहिए या नहीं, यह सवाल इतना सरल नहीं है कि आज खाने में लौकी बनाई जाए या गोभी। बल्कि यह एक गंभीर मसला है, खासकर ऐसे राज्य के लिए जहां पहले से आदिवासियों और गैरआदिवासियों के बीच हितों के टकराव चलते रहे हों। लेकिन इतने गंभीर मसले को सीधे अदालती कार्रवाई के लिए भेज दिया गया। क्या इस पर राज्य सरकार ने या जनजातीय मामले और पहाड़ी विभाग ने विभिन्न पक्षों को लेकर कोई चर्चा की या केंद्र और राज्य सरकारों ने इस पर विमर्श किया। डबल इंजन की सरकार केवल चुनावी रेल खींचने के लिए तो नहीं होनी चाहिए। बिना विचार-विमर्श के फैसले थोप देने का नतीजा देश पहले भी भुगत चुका है। नोटबंदी से लेकर कृषि कानून तक हर बार यही देखा गया कि जब संबंधित पक्षों को भरोसे में लिए बिना आदेश दिया गया तो उसका नकारात्मक असर हुआ। देश में कहीं न कहीं असंतोष और आपसी मनमुटाव की आग सुलग ही रही है, इसे बुझाना जरूरी है।

झूठ और कपट से भरी है फिल्म केरल स्टोरी

विनय विश्वम

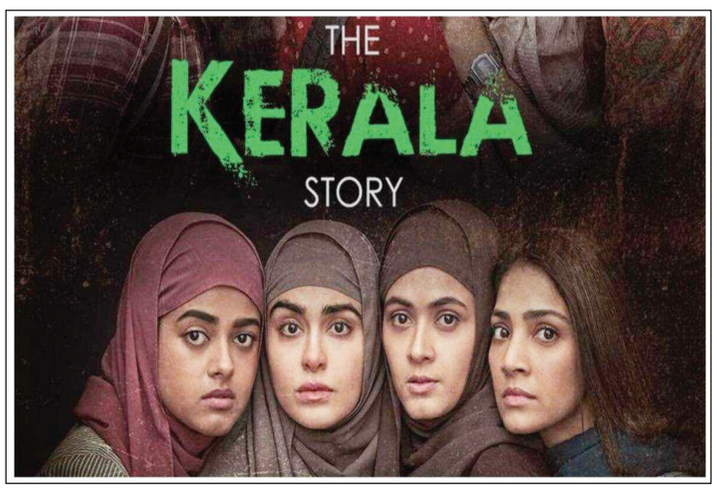

लोगों तक तथ्यों के साथ पहुंचना चाहिए और राजनीतिक प्रचार और सच्चाई के बीच अंतर करने के लिए शिक्षित किया जाना चाहिए। लोगों के बीच आपसी संबंधों को मजबूत किया जाना चाहिए ताकि प्रचार और द्वेषपूर्ण कल्पना की कोई भी मात्रा उनके बीच एक खाई पैदा न कर सके। आरएसएस की झूठ की फैक्टरी के खिलाफ शिक्षा और एकजुटता सबसे कारगर हथियार है। दिन-ब-दिन आरएसएस परिवार फासीवादी प्रचार के कौशल में खुद को उत्कृष्ट बनाता जा रहा है। मुसोलिनी और हिटलर से सबक सीखते हुए, बदलते समय और जगह अनुकूल उन्हें परिष्कृत करते हुए, वे कभी-कभी अपने आकाओं को भी मात दे देते हैं। 1937 में, एक फिल्म निर्माण इकाई का उद्घाटन करते हुए, बेनिटोमुसोलिनी ने आदर्श वाक्य दिया-'सिनेमा सबसे शक्तिशाली हथियार है।' उनके कदमों का अनुसरण करते हुए, एडॉल्फ हिटलर और उनके प्रचार मंत्री जोसेफ गोएबल्स ने भी फिल्म निमार्ताओं को उनके स्वाद और धुन के सिनेमा का निर्माण करने के लिए राजी करने का प्रयास किया।

आरएसएस-भाजपा शासन के शुरूआती दिनों से, भारतीय नेतृत्व अपने राजनीतिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए कला और साहित्य की संभावनाओं का उपयोग करने के लिए ठोस कदम उठा रहा है। एफटीआईआई, पुणे की घटनाओं ने देश को दिखा दिया कि संस्कृति के क्षितिज को प्रदूषित करने के लिए वे कितने हठी और सुनियोजित हैं।कला और संस्कृति को दूषित करने के लिए सांप्रदायिक रूप से प्रेरित कृत्यों की एक लंबी श्रृंखला के बाद नाटक में 'नाथूराम गोडसे बोल्तॉय' आया। इन सबके पीछे का उद्देश्य कला या सौंदर्यशास्त्र को बढ़ावा देना नहीं था, बल्कि कलह और घृणा के बीज बोना था। द कश्मीर फाइल्स में जहरीला वर्णन सिनेमा के माध्यम से लोगों के दिमाग को जीतने के लिए इस युद्ध का हिस्सा था। इस तरह के कारनामों से स्नातक होने के बाद, अब वे 'द केरला स्टोरी' लेकर आये हैं, जो इस श्रृंखला की सबसे जहरीली कहानी है। उनकी केरल की कहानी केरल की असली कहानी नहीं है। असली केरल कहानी प्यार और सम्मान से बुनी है, जिसे विभिन्न धर्मों के केरल के लोगों ने पीढ़ियों से आत्मसात किया है। रियल केरल स्टोरी ने राज्य को सभी मानव विकास सूचकांकों में शीर्ष रैंकिंग पदों पर पहुंचा दिया है। केरल के लोग, जो वास्तविक केरल कहानी के निमार्ता हैं, ने हमेशा धर्म और जाति के बावजूद सामंजस्यपूर्ण अंतसंर्बंधों को बनाये रखा है। उन महान लोगों ने हमेशा धार्मिक उग्रवाद की ताकतों को, चाहे हिंदू, मुस्लिम या ईसाई हों, अपने दैनिक जीवन से दूर रखा है। उन लोगों ने कभी भी अपने राजनीतिक दलों के लिए न्यूनतम स्थान भी उपलब्ध नहीं कराया है। यही कारण है कि आरएसएस-बीजेपी ने अपने लोगों के प्रति प्रतिशोध के साथ एक अवास्तविक केरल को चित्रित करने के लिए केरल स्टोरी का आयोजन किया। केरल स्टोरी फिल्म पूरी तरह से निराधार दावों, फर्जी खबरों और इस्लामोफोबिक प्रचार पर आधारित है, जिसका उद्देश्य वास्तविक केरल की छवि खराब करना और लोगों को धार्मिक कट्टरता के आधार पर विभाजित करना है। फिल्म के निमार्ताओं ने पहले 32,000 मुस्लिम महिलाओं की कहानी का पता लगाने का दावा किया था, जो कथित रूप से जबरन या लालच देकर धर्मांतरण के बाद केरल में लापता हो गयीं और बाद में आईएसआईएस में शामिल हो गयीं। जब लोग और सच्चाई के प्रेमी उनकी हास्यास्पद रूप से बढ़ा-चढ़ाकर की गयी संख्या पर सवाल उठाने के लिए सामने आये, तो उन्हें 32,000 की संख्या को घटाकर मात्र तीन करने में कोई हिचकिचाहट नहीं हुई। यह खुद केरल स्टोरी के आरएसएस ब्रांड के खोखलेपन को दशार्ता है। ट्रेलर जानबूझकर केरल के दो पूर्व मुख्यमंत्रियों के बयानों को गलत तरीके से उद्धृत करता है और गलत व्याख्या करता है। वी एस अच्युतानंदन द्वारा दिये गये बयान का गलत तरीके से मलयालम से अनुवाद किया गया है और फिर मुस्लिम समुदाय को बदनाम करने के लिए इस्तेमाल किया गया है। इसके अलावा, ओमन चांडी ने कभी भी धर्मांतरण के किसी भी वार्षिक आंकड़े का उल्लेख नहीं किया और न ही उन्होंने महिलाओं के आईएसआईएस में शामिल होने या जबरन धर्मांतरण का उल्लेख किया। जाहिर है कि फिल्म कुछविश्वसनीयता हासिल करने और लोगों को गुमराह करने के लिए दोनों मुख्यमंत्रियों के बयानों को गलत तरीके से पेश कर रही है। आरएसएस के पे-रोल पर कई मीडिया और यूट्यूब चैनलों ने भी केरल के खिलाफ इसी तरह का अभियान शुरू किया है। सामान्य तौर पर केरल के लोगों ने एकजुट स्वर में राज्य को बदनाम करने के इस राजनीतिक रूप से प्रेरित प्रयास का विरोध किया है। फिल्म इन महिलाओं को इस्लाम में परिवर्तित करने के लिए तथाकथित 'लव जिहाद' का उपयोग करने की कोशिश कर रही है। हालांकि, 'लव जिहाद' ध्रुवीकरण के उद्देश्य से एक निराधार इस्लामोफोबिक साजिश सिद्धांत बना हुआ है और जो लोग इस हौवा को उठाते हैं, वे कभी भी सबूतों के साथ भी इसका समर्थन नहीं कर पाये हैं। अमित शाह के नेतृत्व वाले केंद्रीय गृह मंत्रालय ने गृहराज्य मंत्री जी किशन रेड्डी के माध्यम से 5 फरवरी, 2020 को संसद को बताया था कि 'लव जिहाद' का कोई मामला दर्ज नहीं किया गया है। इस सिद्धांत को भाजपा सरकार द्वारा संसद में खारिज करने के बावजूद, झूठ का कारखाना आरएसएस लोगों को इस बदनाम थ्योरी में विश्वास दिलाने के लिए ओवरटाइम काम कर रहा है। इसी तरह, सरकार और सामरिक सूत्रों के अनुसार, आईएसआईएस में लड़ाकों के रूप में शामिल होने वाले भारतीयों की संख्या 200 से अधिक नहीं है। यह स्पष्ट है कि 'द केरला स्टोरी' द्वारा प्रचारित किया जा रहा आख्यान स्पष्ट रूप से झूठ और तोड़-मरोड़ कर पेश किये गये तथ्यों पर आधारित है और इसका उद्देश्य नफरत को बढ़ावा देना है। यह विशेष रूप से केरल और सामान्य रूप से देश में सांप्रदायिक सद्भाव के लिए खतरनाक रूप से हानिकारक है। यहां जिम्मेदारी का महत्वपूर्ण सवाल आता है। यदि कल्पना को तथ्य के रूप में प्रस्तुत किया जाता है तो कौन जिम्मेदार होगा? अगर झूठ, सच्चाई का स्वांग रचने से कलह और दंगे होते हैं तो इसके लिए कौन जिम्मेदार होगा? यह सच है कि आरएसएस द्वारा नियंत्रित वर्तमान सरकार को हमारे संविधान और उसमें निहित मूल्यों के प्रति कोई सम्मान नहीं है। इसके अलावा, उसे सच्चाई के लिए भी कोई नैतिक चिंता नहीं है। फिर भी, लोकतांत्रिक व्यवस्था में एक सरकार को हमारे संविधान के धर्मनिरपेक्ष लोकाचार पर लोगों को शिक्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभानी होती है और यह जागरूकता पैदा करने के लिए भी जिम्मेदार होती है ताकि नकली समाचार और घृणित प्रचार को सच्चाई के रूप में नहीं लिया जाये। यदि भाजपा सरकार इस उत्तरदायित्व से पल्ला झाड़ रही है तो जाहिर है कि उसकी निष्ठा आरएसएस की विचारधारा के प्रति है, न कि भारत के संविधान के प्रति। हमारे देश का संकट यह है कि सरकार पूरी तरह से भाजपा की चुनाव मशीनरी में बदल गयी है, जिसके लिए केरल स्टोरी कर्नाटक चुनाव से पहले लोगों के ध्रुवीकरण का एक और मुद्दा है। यह देश के लिए खतरनाक स्थिति है। कप्तान जहाज को डुबाने के लिए अथक प्रयास कर रहा है। जब राज्य अपने संवैधानिक शासनादेश से भाग रहा हो तो हमें क्या करना चाहिए? फिर हमारे सामने यह बात आती है कि तथ्यों और वैज्ञानिक जांच की भावना के माध्यम से लोगों को इन विषयों पर संवेदनशील बनाया जाना चाहिए। बहुत से लोगों ने फिल्म पर प्रतिबंध लगाने की मांग की है क्योंकि यह भयावह डिजाइन का प्रतिनिधित्व करता है। हालांकि, लोगों के विभिन्न वर्गों ने कहा है कि इस समय इस मामले में प्रतिबंध उचित कदम नहीं हो सकता है। परिवार की ताकतें इसे भाषण और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के बारे में हो-हल्ला मचाने के अवसर के रूप में इस्तेमाल कर सकती हैं। फिर भी लोगों तक तथ्यों के साथ पहुंचना चाहिए और राजनीतिक प्रचार और सच्चाई के बीच अंतर करने के लिए शिक्षित किया जाना चाहिए। लोगों के बीच आपसी संबंधों को मजबूत किया जाना चाहिए ताकि प्रचार और द्वेषपूर्ण कल्पना की कोई भी मात्रा उनके बीच एक खाई पैदा न कर सके। आरएसएस की झूठ की फैक्टरी के खिलाफ शिक्षा और एकजुटता सबसे कारगर हथियार है। अगर सत्य को जिताना है तो लोगों को एकजुट होकर उठना होगा।

चिंताजनक है बच्चों की देखभाल में सरकार की दखलंदाजी

लेखा रत्तनानी

केंद्र सरकार विशेष रूप से नॉर्डिक और यूरोपीय देशों में भारतीय दूतावासों के माध्यम से परामर्श और सहायता प्रदान करके हस्तक्षेप करती है तो इस कानून के आधार पर विदेश में काम करने वाले परिवारों के मामले में मदद मिल सकती है। भारतीय माता-पिता के लिए दूतावासों में एक प्रकार का पारिवारिक लोकपाल एक मार्गदर्शक तथा रेफरल बिंदु हो सकता है।

पिछले महीने भारतीय सिनेमाघरों में एक फिल्म रिलीज हुई थी जिसमें अपने बच्चों की कस्टडी वापस पाने के लिए एक अप्रवासी भारतीय मां के संघर्ष को बताया गया है। यह मां नॉर्वे की फोस्टर केयर सिस्टम से लड़ रही है। भारत में इस फिल्म का बॉक्स ऑफिस रिटर्न इतना उत्साहजनक नहीं रहा लेकिन यह नॉर्वे में सबसे अधिक देखी जाने वाली दक्षिण एशियाई फिल्म है। इस फिल्म में नॉर्डिक और यूरोपीय देशों में चाइल्ड केयर सेवाओं के खिलाफ ज्यादातर आप्रवासी पालकों के संघर्ष को दिखाया गया है। भारत स्थित नॉर्वे दूतावास ने सागरिका चक्रवर्ती की 2022 की किताब 'दी जर्नी ऑफ ए मदर' पर आधारित फिल्म को 'काल्पनिक प्रतिनिधित्व' बताकर खारिज कर दिया है। इस मामले को एक दशक पहले भारतीय अधिकारियों के हस्तक्षेप के बाद सुलझा लिया गया था। दूतावास का कहना था कि 'बच्चों को वैकल्पिक देखरेख में रखने का कारण केवल तभी बनता है जब उनके साथ उपेक्षा, हिंसा या विभिन्न तरीके से दुर्व्यवहार किया जाता है।' दर्शकों की उदासीनता के बावजूद 'श्रीमती चटर्जी बनाम नॉर्वे' फिल्म ने माता-पिता और चाइल्ड केयर सेवाओं के बीच चल रही कई कस्टडी लड़ाइयों की ओर ध्यान आकर्षित किया है। उनमें से एक बर्लिन चाइल्ड सर्विसेस और शाह परिवार के बीच वर्तमान टकराव है। विदेश मंत्री एस जयशंकर ने अपनी जर्मन समकक्ष अन्नालेना बेयरबॉक के साथ चर्चा के दौरान दिसंबर, 2022 में यह मामला उठाया था। जयशंकर ने कहा-'हमें चिंता है कि बच्ची को उसके भाषायी, धार्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक माहौल में होना चाहिए। यह उसका अधिकार है। हमारा दूतावास जर्मन अधिकारियों के सामने इस मामले को रख रहा है लेकिन यह एक ऐसा विषय भी था जिसे मैंने मंत्री के साथ चर्चा में उठाया था।' सरकार के घरों में घुसने और बच्चों को दूर ले जाने के कारणों में से एक कारण बच्चों की परवरिश में सांस्कृतिक अंतर प्रतीत होता है। शाह बनाम जर्मनी मामले में यह मुद्दा उठाया गया है। जर्मनी से अपनी बेटी को वापस लाने के लिए संघर्ष कर रहे बच्ची के माता-पिता की ओर से दायर एक ऑनलाइन याचिका 'सेव अरिहा' में कहा गया है- 'जर्मन बाल सेवाएं बच्ची की सांस्कृतिक और धार्मिक पहचान के प्रति पूरी तरह असंवेदनशील हैं। यह बच्ची एक कट्टर जैन परिवार से आती है। अरिहा शाह की उम्र दो साल से थोड़ी अधिक हैं। जर्मन चाइल्ड सर्विसेस उस पर मांसाहार के लिए जोर दे रही हैं। बच्ची ने अपनी उम्र का अधिकांश समय बर्लिन चाइल्ड सर्विसेस की निगरानी में बिताया है। जर्मन चाइल्ड सर्विसेस ने पिछले महीने अरिहा के माता-पिता धारा व भावेश शाह के माता-पिता के अधिकारों (पैरन्टल राईट्स) को समाप्त करने के लिए सिविल हिरासत का मामला दायर किया था। अरिहा को यौन शोषण के संदेह में संरक्षण में लिया गया था। परिवार का कहना है कि उसकी दादी की देखभाल के दौरान अरिहा को आकस्मिक चोट आई थी। उसे इलाज के लिए डॉक्टरों के पास भेजा गया था जिन्होंने चाइल्ड सर्विसेस को बुला लिया था। चिंतित माता-पिता ने ऑनलाइन याचिका में कहा है कि जर्मनी में कानून के 'निरंतरता सिद्धांत' का लाभ उठाते हुए चाईल्ड केयर इस मुकदमे को दो या तीन साल तक चला सकती है। इस सिद्धांत के तहत यदि किसी बच्चे ने राज्य द्वारा नियुक्त देखभालकर्ता के साथ महत्वपूर्ण समय बिताया है तो कहा जाता है कि बच्चे को वहां बसाया जाए और उसे माता-पिता के पास वापस स्थानांतरित नहीं किया जाना चाहिए। भले ही वे पालन-पोषण करने के लिए योग्य पाए जाएं। जर्मन राष्ट्रीय सांख्यिकी एजेंसी डेस्टैटिस के आंकड़े बताते हैं कि 2015-16 में 77645 बच्चे और युवा राज्य देखभाल में थे। 83 लाख से अधिक की आबादी वाले जर्मनी में 50364 बच्चे और युवा फैमिली फोस्टर केयर में रहते हैं। नॉर्वे में सरकार की निगरानी में 12000 बच्चे रहते हैं जो 55 लाख से अधिक की आबादी वाले देश के लिए एक बड़ा आंकड़ा है। बच्चों के अधिकारों को सबसे ऊपर रखने की नीति के कारण ये आंकड़े कई चिंताओं को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। यूनिसेफ की एक नई रिपोर्ट के अनुसार 31 अमीर देशों के बीच स्वीडन, नॉर्वे, आइसलैंड, एस्टोनिया और पुर्तगाल अपनी राष्ट्रीय परिवार के अनुकूल नीतियों के आधार पर सबसे बेहतर सेवाएं प्रदान करते हैं। यह रिपोर्ट दो प्रमुख नीतियों पर केंद्रित है- माता-पिता के लिए चाइल्ड केयर लीव और स्कूल जाने के पूर्व बच्चों के लिए प्रारंभिक बचपन की शिक्षा व देखभाल। यह आर्थिक सहयोग और विकास संगठन (ओईसीडी) तथा यूरोपीय संघ (ईयू) के घटक 41 उच्च एवं मध्यम आय वाले देशों में इन नीतियों की समीक्षा करता है। सबसे अधिक परिवार अनुकूल देशों में नॉर्वे ऐसा देश है जिसने 1981 में बच्चे के अधिकारों की रक्षा के लिए 'बाल लोकपाल' नियुक्त किया था। फिर भी नॉर्वे को बाल कल्याण के मामलों की एक बड़ी संख्या का सामना करना पड़ता है और उनमें से अधिकांश माता-पिता द्वारा दायर किए गए हैं। इन पालकों ने अपना विरोध दर्शाने के लिए यूरोपीय मानवाधिकार न्यायालय का रास्ता खोज लिया है। न्यायालय ने मानवाधिकार सम्मेलन के केंद्रीय अनुच्छेद 8 का आधार लिया है जो निजी और पारिवारिक जीवन के लिए सम्मान के अधिकार को कवर करता है। हाल के वर्षों में यूरोपियन कोर्ट ऑफ ह्यूमन राईट्स ने नॉर्वेजियन बाल कल्याण सेवाओं से जुड़े 39 मामलों को सुनवाई के लिए मंजूर किया है। कोर्ट ने जिन नौ मामलों पर फैसला सुनाया है उनमें से सात मामलों में पारिवारिक जीवन के अधिकार का उल्लंघन पाया गया है। अदालत के इतिहास में नॉर्वे के खिलाफ कुल 52 फैसले पारित किए गए हैं। फैसलों की इतनी बड़ी संख्या बाल कल्याण मामलों में पारिवारिक जीवन के अधिकार की रक्षा करने में नार्वे की विफलता को दशार्ती है। बीबीसी के अनुसार नॉर्वेजियन मीडिया एक ऐसी स्टोरी की जांच कर रहा है जिसे उसने अनदेखा कर दिया है। मीडिया ने यह पाया है कि नॉर्वे में अन्य बच्चों की तुलना में एक विदेशी माता के बच्चों को उनके परिवारों से जबरन ले जाने की संभावना चार गुना अधिक है। सरकार ने नॉर्वे-चीन के एक दंपति पर अपने बच्चे की परवरिश को लेकर सवाल उठाए हैं जिसमें बच्चे के जन्म के बाद अपनी चीनी नानी के साथ बिताए गए समय को भी शामिल किया गया है। एशियाई देशों में बच्चों का अपने नाना-नानी या दादा-दादी के साथ समय गुजारना एक आम बात है। आलोचकों का कहना है कि नॉर्वेजियन चाइल्ड वेलफेयर सर्विसेस एजेंसी बार्नेवरनेट, आप्रवासियों के बच्चों को कस्टडी में लेने के लिए बहुत जल्दी में रहता है। 2011 में यौन शोषण के आरोपों के कारण एक चेक माता-पिता से दो बच्चों को एजेंसी ने अपने नियंत्रण में ले लिया था। इस प्रकरण में माता-पिता को अंततः दोषमुक्त कर दिया गया था, लेकिन सरकार ने बच्चों को वापस करने से इनकार कर दिया और अब उनके पालकत्व के अधिकारों को समाप्त कर दिया है।

नॉर्वे में बाल कल्याण के कामकाज की चेकोस्लोवाकिया के पूर्व राष्ट्रपति मिलोस जेमन ने कड़ी आलोचना की। पोलैंड और रोमानिया के राष्ट्राध्यक्षों ने भी अपने नागरिकों से जुड़े मामलों में अपनी नाराजगी जाहिर की है।

बजरंग दल में संघ का विकल्प तलाश रहे हैं मोदी?

पुष्परंजन

बजरंग दल के नेता शरण पंपवेल ने एक साक्षात्कार में कहा था कि मुस्लिम दुकानदार और मॉल मालिकों का सबसे अधिक भरोसा हम पर है। अर्थात, 'ईश्वरी मैन पावर सोल्यूशन लिमिटेड' की सेवाएं यदि दुकानदार नहीं लेते, तो उनकी सुरक्षा की कोई गारंटी नहीं है। 'सेवा, सुरक्षा और संस्कार' का स्लोगन देने वाले बजरंग दल को सही से समझना हो, तो मंगलुरू चले जाइये। किसलिए प्रधानमंत्री मोदी बजरंग दल को प्रोमोट कर रहे हैं? दशकों से चुनावी रणनीति तय करता रहा है, आरएसएस। 2014 के बाद सरकार के काम करने के तौर-तरी$के पर निगरानी के लिए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने हर शोबे में अपने लोगों को लगा रखा है। बड़े फैसले उनकी हामी के बाद लिये जाते हैं। कर्नाटक चुनाव क्या उसकी प्रयोगशाला है, जहां बजरंग दल को फ्रंट लाइन पर रखकर रण जीतने का प्रयास स्वयं प्रधानमंत्री कर रहे हैं? यदि इस प्रयोगशाला में पीएम मोदी को सफलता हाथ लगती है, तो यकीन मानिये 2024 वाली चुनावी जमीन पर बजरंग दल और आक्रामक रूप से उतरेगा। लेकिन क्यों? क्या पीएम मोदी मोहन भागवत को यह बताना चाहते हैं कि आप ही आज के महाभारत के मास्टर प्लानर नहीं हो? इसमें कोई संदेह नहीं कि लगभग 50 लाख एक्टिव मेंबर और देशभर में 50 हजार से अधिक शाखाओं का संचालन करने वाला राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ एक ऐसे विराट वट वृक्ष की तरह खड़ा है, जिसके नीचे किसी दूसरे पेड़ का पनपना कोई मजाक नहीं है। आरएसएस से अभिभूत लोग सवाल कर सकते हैं कि संघ के आगे विश्व हिंदू परिषद से जुड़ा बजरंग दल है क्या? 11-12 लाख के लगभग एक्टिव मेंबर। मगर इतना जरूर है, कि देशभर के सभी 938 जिलों में बजरंग दल ने अपनी पहचान बना ली है। उस आधार पर बजरंग दल ने संघ के विकल्प के रूप में आगे आने का सपना संजो लिया है। यों, जोखिम लेना मोदी के स्वभाव में है। 'लिव डेंजरसली', नीत्से ने 'जोखिम के साथ जीयो' का जो मंत्र दिया था, उसे दुनिया के कुछ अधिनायक समय-समय पर आत्मसात करते रहे हैं। कर्नाटक चुनाव में बाहर से तो यही लगता है कि कांग्रेस ने बजरंग दल और पीएफ आई को बैन करने वाला जो बॉल फेंका है, उसे मोदी ने कैच कर लिया, और उससे ही आखिरी समय तक खेलेंगे। लेकिन इस खेल का साइड इफेक्ट क्या आरएसएस पर नहीं पड़ेगा? इसपर भी विचार कीजिए। यह संघ की ही योजना थी कि कर्नाटक चुनाव में इस बार पन्ना प्रमुख नहीं, बीजेपी कार्यकताओं के 6500 शक्ति केंद्र बनाये जाएं। पांच बूथों पर एक शक्ति केंद्र, और 10 शक्ति केंद्रों को नियंत्रित करने के वास्ते एक 'महाशक्ति केंद्र'। संघ के कार्यकताओं को इन शक्ति केंद्रों से समन्वय स्थापित करके चुनाव लड़ना था। इस बीच चुनाव प्रचार को उन्माद में बदल देने की समरनीति को मोदी ने जिस तरह से पलटा है, उससे संघ के द्रोणाचार्य असहज महसूस करने लगे हैं। 'प्लान ए' में पहले यह तय हुआ था कि कर्नाटक चुनाव की 'कवर फायरिंग' तेजस्वी सूर्या जैसे फायर ब्रांड नेता से कराई जाएगी। माहौल उन्मादी बनेगा, उससे शक्ति केंद्रों को मदद मिलेगी। मगर, अंतिम समय सब कुछ बदल गया। बंगलुरू साउथ से बीजेपी सांसद, भारतीय जनता युवा मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष तेजस्वी सूर्या को सीन से बाहर कर देने का निर्णय किसके इशारे पर हुआ है? संघ के रणनीतिकार इस सवाल पर चुप हैं। 16 नवंबर 2023 को तेजस्वी सूर्या 33 साल के हो जाएंगे। उनकी ग्रुमिंग आरएसएस का अनुषंगी संगठन, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद की गोद में हुई थी। 9 दिसंबर 2022 को तेजस्वी सूर्या ने बयान दिया था कि सिफ आरएसएस ही है, जो भारतीय विचारधारा की बुनियाद पर खड़ा दीखता है।

इसका मतलब यही बताना था कि कर्नाटक क्या, देश में हिन्दुत्व वाला चुनावी माहौल संघ के कार्यकर्ताओं के कारण है।

भ्रष्टाचारियों पर कार्रवाई करने में गंभीरता दिखानी होगी

किशन भावनानी

भ्रष्टाचार को जड़ से समाप्त करने के लिए करीब करीब हर राजनीतिक दल गंभीरता से जनता जनार्दन से हर जनसभा में दावा करते हैं कि, उनकी सरकार आई तो भ्रष्टाचार को पूरी तरह समाप्त कर जीरो टॉलरेंस कर देंगे। परंतु मेरा मानना है कि उन दलों को अपने दल की सरकार जिन राज्यों में है वहां भी अति गंभीर कढ़ाई बरतना चाहिए, ताकि प्रतिशत या परसेंट या फिर कमीशन रिपोर्ट कार्ड की नौबत ही पैदा ना हो। भारत में 10 मई 2023 को एक राज्य में चुनाव है जिसके नतीजे 13 मई 2023 को आने हैं वहां चुनावी दंगल में 40 परसेंट बनाम 85 परसेंट का जिक्र हर जनसभा में वक्ताओं द्वारा किया जाता है और एक विपक्षी पार्टी द्वारा मीडिया में विज्ञापन से कमीशन रेट कार्ड भी छपाया है, जिसका संज्ञान लेकर पक्ष पार्टी ने चुनाव आयोग में शिकायत दर्ज की थी। चूंकि चुनाव आयोग द्वारा विज्ञापन देने वाली पार्टी की राज्य इकाई के अध्यक्ष को नोटिस जारी कर 7 मई 2023 को शाम 7 बजे तक जवाब दाखिल करने की ताकीद की गई है, अन्यथा कार्यवाही की बात कही है, इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे, चुनावी दंगल- 40 - 85 परसेंट से लेकर करप्शन रेट कार्ड तक हर राजनीतिक दल द्वारा स्वतः संज्ञान लेकर भ्रष्टाचारियों पर कार्रवाई करने में गंभीरता दिखानी होगी। साथियों बात अगर हम 6 मई 2023 को देर शाम चुनाव आयोग द्वारा नोटिस जारी करने और 7 मई को शाम 7 बजे तक जवाब मांगने की करें तो, विपक्षी पार्टी ने पक्ष सरकार को निशाना बनाते हुए अखबारों में करप्शन रेट कार्ड नाम से विज्ञापन प्रकाशित करवाया था, इस मामले में चुनाव आयोग ने पार्टी को नोटिस जारी किया है और रविवार शाम तक आरोपों को साबित करने के लिए साक्ष्य मांगे हैं। बात यह है कि10 मई को होने वाले विधानसभा चुनाव से पहले, विपक्षी पार्टी ने 2019 और 2023 के बीच राज्य में भ्रष्टाचार दर को सूचीबद्ध करते हुए पोस्टर और विज्ञापन जारी किए और पक्ष सरकार को ट्रबल इंजन करार दिया। निर्वाचन आयोग ने अपने नोटिस में कहा, यह एक उचित धारणा है कि पार्टी के पास सामग्री/अनुभवजन्य/सत्यापन योग्य साक्ष्य हैं, जिसके आधार पर ये विशिष्ट/स्पष्ट तथ्य प्रकाशित किए गए हैं।

चारों निकाय सीटों की तस्वीर साफ-फिर भी धुंधली

-11 मई को होगा मतदान, 13 को होगा फैसला -फिलहाल सभी दमखम से ठोंक रहे छाती

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। जिले की चारों नगर निकाय सीटों पर राजनैतिक विश्लेषकों ने पैनी नजर टिका दी है। सर्वे में माहिर लोगों के अनुसार चारों सीटों के नतीजे तकरीबन साफतौर पर सामने दिखने लगे हैं।

11 मई को सवेरे सात बजे से नगर निकाय की जिले की चारों सीटों पर मतदान की प्रक्रिया शुरू होगी, जो शाम पांच बजे तक चलेगी। 13 मई को मतगणना होगी, लेकिन राजनैतिक विशेषज्ञों के अनुसार चुनाव परिणाम कुछ यूं होने के आसार हैं। कर्वी नगर पालिका सीट पर अध्यक्ष पद को किस्मत आजमा रहे 11 प्रत्याशियों में चुनाव सभी प्रत्याशी भाजपा प्रत्याशी नरेन्द्र गुप्ता से लड़ते नजर आ रहे हैं। ऐसे में सभी के लिए केन्द्र बिन्दु भाजपा प्रत्याशी नरेन्द्र गुप्ता ही बताये गये। भाजपा प्रत्याशी को पछाड़ने को सपा प्रत्याशी जागेश्वर प्रसाद यादव व निर्दल प्रत्याशी निशी सोनी भी कोई कोर कसर बाकी नहीं रख रहे हैं। राजनीतिज्ञों का मानना है कि बसपा प्रत्याशी यदि रामलखन निषाद बनते तो अच्छी फाइट होने के आसार थे, लेकिन बसपा नीति नियंताओं ने कुशल सिंह पटेल को प्रत्याशी बनाया है। ऐसे में वे कहीं भी फाइट में नजर नहीं आ रहे।

राजापुर नगर पंचायत अध्यक्ष पद में सर्वाधिक मुकाबला भाजपा प्रत्याशी संजीव मिश्रा व निर्दल श्रीमती आदर्श द्विवेदी पत्नी मनोज द्विवेदी के गदा के बीच माना जा रहा है। कोई करिश्मा होने पर अन्य भी मुकाबले पर आ सकता है। सर्वाधिक रोचक एवं रोमांचक चुनाव मानिकपुर नगर पंचायत सीट पर है। ये सीट इस बार अनुसूचित जाति महिला के लिए आरक्षित है। यहां तकरीबन 16 हजार मतदाताओं को अपने पाले में करने को चुनावी समर में 12 प्रत्याशी हैं। इनमें सर्वाधिक मुकाबला निर्दल रानी देवी कोल के भगौना व निर्दल ऊषा भारती पत्नी सुन्दरलाल भारती के सैनिक के बीच माना जा रहा है। यहां किसी तरह का कोई करिश्मा करने की स्थिति में अन्य प्रत्याशी नहीं हैं। सर्वे दौरान अन्य प्रत्याशियों ने भी इस बात को बुझे मन से माना है, लेकिन किसी करिश्मा के इंतजार में वे अन्तिम दौर तक चुनावी समर में अपना दमखम ठोंक रहे हैं। रानी देवी कोल के पक्ष में विनोद द्विवेदी विपक्षियों को खुलेतौर पर चुनौती देते दिख रहे हैं। विनोद ने चुनावी समर में उतरकर अच्छे-अच्छों के समीकरण बिगाड़ने का खेल शुरू कर दिया है। मऊ सीट में बसपा प्रत्याशी जमुना प्रसाद केशरवानी व सपा प्रत्याशी सचिन रस्तोदी व भाजपा प्रत्याशी अमित द्विवेदी के साथ निर्दल संदीप त्रिपाठी का फसल काटता किसान के बीच तगडी लडाई मानी जा रही है। इनमें अमित द्विवेदी से लडते सभी प्रत्याशी नजर आ रहे हैं। इन सभी प्रत्याशियों का भाग्य बैलेट बाक्स में 11 मई को कैद हो जायेगा, जो 13 मई को खुलेगा। ऐसे में देखना है कि राजनैतिक विशेषज्ञों का ये सर्वे कहां तक हकीकत की कसौटी पर खरा उतरेगा।

छह के खिलाफ गुण्डा एक्ट से मची खलबली

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। पुलिस अधीक्षक श्रीमती वृंदा शुक्ला के निर्देश पर नगर निकाय चुनाव को सकुशल सम्पन्न कराने को अपराधियो के खिलाफ जारी कार्यवाही के क्रम में पुलिस ने छह लोगों के खिलाफ श्री यूपी गुण्डा एक्ट की कार्यवाही की है। इससे अपराधियों में खलबली मची है।

रविवार को प्रभारी निरीक्षक कोतवाली कर्वी गुलाब त्रिपाठी ने भोली-भाली जनता में भय-आतंक फैलाकर गुण्डा गर्दी करने वाले कल्लू सोनी पुत्र कुन्नू सोनी निवासी शंकर बाजार, नरेन्द्र पुत्र धनी निवासी कच्ची छावनी, फेरन पुत्र रजा निवासी बन्धोइन, अरुण पटेल पुत्र भगवानदीन उर्फ बंगा निवासी मैनहाई, साढूभाई उर्फ पंचमलाल पुत्र सतनवा निवासी कंठीपुर के खिलाफ श्री यूपी गुण्डा एक्ट के तहत कार्यवाही की है। इससे अपराधी तत्वों मे खलबली मची है।

प्रभारी निरीक्षक पहाड़ी नागेन्द्र कुमार नागर ने भोली भाली जनता में भय-आतंक फैलाकर गुण्डा गर्दी करने वाले कल्लू यादव पुत्र राजनारायण पुत्र मइयादीन यादव निवासी बक्टा बुजुर्ग के खिलाफ श्री यूपी गुण्डा एक्ट के तहत कार्यवाही की है।

एक तमंचा व दूसरा जिला बदर दबोचा

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। पुलिस अधीक्षक श्रीमती वृंदा शुक्ला के निर्देश पर नगर निकाय चुनाव को सकुशल सम्पन्न कराने को अपराधियो के खिलाफ जारी कार्यवाही के क्रम में प्रभारी निरीक्षक कोतवाली कर्वी गुलाब त्रिपाठी की अगुवाई में दरोगा श्यामदेव सिंह चैकी प्रभारी जिला कारागार की टीम ने दीपक वाजपेई पुत्र रामनरेश निवासी सब्जी मंडी कस्बा राजापुर के कब्जे से तमंचा व कारतूस बरामद कर गिरफ्तार किया। उसके खिलाफ शस्त्र अधिनियम के तहत मामला दर्ज किया है। टीम में दरोगा श्याम देव सिंह, सिपाही शिव पूजन यादव शामिल रहे।

इसी क्रम में प्रभारी निरीक्षक मऊ राजीव कुमार सिंह की अगुवाई में दरोगा बालकिशुन की टीम ने जिला बदर सुरेश सिंह पुत्र स्व वशीकरण निवासी गढ़वा को गिरफ्तार किया। जिलाधिकारी के जिला बदर के आदेश का उल्लंघन करने पर उसके खिलाफ थाने में 10 यूपी गुण्डा एक्ट के तहत कार्यवाही की है। जिला बदर सुरेश पर विभिन्न अपराधों के दस मामले विभिन्न थानों में दर्ज हैं। टीम में दरोगा बालकिशुन, सिपाही रविन्द्र कुमार शामिल रहे।

ग्राम भूतपुरी में गौशाला में गुलदार देखने पर दहशत का माहौल

बिजनौर। जानकारी के अनुसार ग्राम भूतपुरी क्षेत्र में बनी गौशाला में गौशाला टेकर को गुलदार दिखने पर ग्रामीणों में दहशत का माहौल है। भूतपुरी में बनी गौशाला में बाउंड्री भी नहीं है जिससे कई गुलदार कई बार गौशाला में आ चुका है। हालांकि सूचना पर पहुंची वन विभाग की टीम ने वहां पिंजरा लगा दिया है।

गौशाला महशनपुर, मच्छीमार, शाहपुर जमाल के समीप है वहा पर बड़े हादसे भी हो चुके हैं और लगातार गोदारा देखा जा रहा है। लगातार गुलदार देखे जाने पर ग्रामीण जंगल जाते हुए भी घबरा रहे हैं। हालांकि वन विभाग की टीम पिछले कई हफ्तों से लगातार गुलदार पकड़ने का प्रयास कर रहे हैं। लेकिन वह गुलदार पकड़ने में सफल नहीं हो पा रहे हैं। जिससे क्षेत्रीय ग्रामीणों में भारी रोष है।

कानपुर में महिला प्रिंसिपल की कार से एक की मौत, दामाद समेत दो गंभीर

कानपुर। यहां जिले में तेज रफ्तार वाहनों द्वारा लोगों को असमय ही मौत के मुंह में झोंकने का सिलसिला लगातार जारी है।

इसी क्रम में आज शनिवार सुबह एक निजी स्कूल की महिला प्रधानाचार्य की तेज रफ्तार कार द्वारा मोटरसाइकिल में टक्कर मारी जाने से एक व्यक्ति की मौत हो गई जबकि उसके दामाद समेत दो लोग गंभीर रूप से घायल हो गए । उन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया है फिलहाल पुलिस घटना की रिपोर्ट दर्ज कर वाहन चालक की तलाश कर रही है।

आज शनिवार की सुबह यह घटना बिधनू में हुई

यहां निजी स्कूल की प्रधानाचार्य की तेज रफ्तार कार ने बाइक सवारों को टक्कर मार दी। टक्कर इतनी जोरदार थी कि बाइक सवार ससुर की मौके पर मौत हो गई। वहीं, दामाद और पड़ोसी गंभीर रूप से घायल हो गए। इस दौरान दुर्घटना की खबर मिलने के बाद पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर जांच शुरू की है। घायलों को एम्बुलेंस की मदद से अस्पताल में भर्ती कराया गया है। साढ़ थाना क्षेत्र के निवासी मजदूर धर्मपाल पासवान (45) सचेंडी निवासी दामाद मिंटू पासवान और पड़ोसी विजय के साथ बाइक से मजदूरी करने कानपुर जा रहे थे।

पुलिस ने बताया कि इस दौरान बिधनू कस्बा में पार्किंग के पास घाटमपुर जा रही चीना पब्लिक स्कूल की प्रधानाचार्य शुभांगी सिंह की कार ने बाइक में जोरदार टक्कर मार दी।

टक्कर इतनी तेज थी कि तीनों बाइक समेत पार्किंग में खड़े डंपर से जा भिड़े। इसमें धर्मपाल की मौके पर मौत हो गई।

कार को कब्जे में लेकर हो रही है कार्रवाई

वहीं,

दामाद मिंटू और पड़ोसी विजय गंभीर रूप से घायल हो गए।

लुटेरी व्यवस्था को बदलने को जरूरी है मार्क्सवादः अमित यादव

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। भाकपा जिला सचिव का अमित यादव एड ने कार्ल मार्क्स की 205वीं जयंती पांच मई के मौके पर कहा कि कम्युनिस्ट पार्टियों की लोग आलोचना करते हैं। अब कम्युनिस्ट पार्टी सत्ता में नहीं हैं, वो कहीं नजर नहीं आती। एक केरल में कोने में बैठे हैं, फिर भी वो विचारधारा खतरनाक है।

भाजपा जिला सचिव का अमित यादव ने कार्ल मार्क्स की जयंती पर कहा कि लोकतान्त्रिक देश में लोकतान्त्रिक प्रक्रिया से चुनकर आये सत्ता शिखर पर विराजमान व्यक्ति ने आजादी के बाद पहली बार कम्युनिस्टों और उनके सिद्धांत के बारे में इस तरह के विचार व्यक्त किए हैं। यह स्वतः गंभीर विचार का विषय बन जाता है। वक्ता की नीयत और इरादों पर भी सवाल खड़े करता है। हमारी विचारधारा खतरनाक है, क्योंकि एकमात्र वही सिद्धांत है जिसे मानने वालों ने ओढ़े गए धर्म-संस्कृति और आस्था के चोगे को उघाड़ कर देश-दुनिया और जनता के सामने ला दिया। सिर्फ और सिर्फ शोषक पूंजीवाद, जो आज कारपोरेट राज बन चुका है, उसके दुमछल्ले मात्र हैं। अपने इस कुरूप पर पर्दा डालने को ही आपने यह धर्म- संप्रदाय-जाति का लबादा ओढा हुआ है। संविधान और लोकतंत्र की नींवों को खोखला कर देश अब एक फासीवादी निजाम की ओर बढ़ेगा, वही हुआ भी।

यह दृष्टि हमें किसी अन्य से नहीं विश्व के मेहनतकशों के मसीहा और समाजवाद के स्वप्न को हकीकत में ढालने वाले महा मनीषी कार्ल मार्क्स से मिली है। आज हम तुम पर नहीं, महान मार्क्स और उनके दर्शन और कृतित्व पर चर्चा की जायेगी।

कामदगिरि स्वच्छता समिति का 68वां अभियान

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। स्वच्छ भारत मिशन के तहत कामतानाथ परिक्रमा में लगातार स्वच्छता अभियान चलाया जा रहा है। कामतानाथ परिक्रमा मार्ग में कामदगिरि स्वच्छता समिति के अध्यक्ष/ब्रांड एम्बेसडर राकेश केसरवानी ने बताया कि स्वच्छ भारत अभियान को पीएम नरेंद्र मोदी ने राष्ट्रव्यापी सफाई अभियान के बतौर शुरू किया था।

रविवार को कामदगिरि स्वच्छता अभियान के तहत समिति के अध्यक्ष/ब्रांड एम्बेसडर राकेश केशरवानी ने बताया कि स्वच्छ भारत की कल्पना की दृष्टि से स्वच्छ भारत का सपना गांधी ने

देखा था। पूरे भारत का स्वच्छ होना महात्मा गांधी जी ने स्वच्छ भारत मिशन को पूरा करने को बहुत प्रयत्न किये, लेकिन उस समय लोगों को स्वच्छ भारत मिशन में कोई दिलचस्पी नहीं थी। इससे गांधी का सपना पूरा नहीं हुआ। भारत सरकार ने गांधी जयंती पर महात्मा गांधी के स्वच्छ भारत के सपने के पूरा करने को स्वच्छ भारत अभियान की घोषणा की। स्वच्छ भारत अभियान को गांधी की 145वीं जयंती पर दो अक्टूबर 2014 को शुरू किया था। स्वच्छ भारत अभियान को सफल बनाने को बहुत से सामाजिक संगठनों/नेताओं ने अभियान की शुरूआत की।

इस अभियान में अंजू वर्मा, राजेंद्र त्रिपाठी, जितेंद्र केसरवानी, कृष्णा शुक्ला, मोनू विनोद सिंह, राजेश कुमार, राजेश, जालंधर सिंह, नगर पालिका के कर्मचारी मौजूद रहे।

पुलिस ने दबोचे पांच वारंटी

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। पुलिस अधीक्षक श्रीमती वृंदा शुक्ला के निर्देश पर वांछित/वारंटी की गिरफ्तारी को जारी अभियान के क्रम में थानाध्यक्ष भरतकूप सूबेदार बिन्द की अगुवाई में पुलिस ने पांच वारंटियों को गिरफ्तार किया है।

रविवार को भरतकूप थाने के दरोगा कन्हैयालाल पाण्डेय की टीम ने एससी-एसटी एक्ट के वारंटी संजय द्विवेदी पुत्र गनेश द्विवेदी निवासी सुदिनपुर को गिरफ्तार किया है। टीम में दरोगा कन्हैयालाल पाण्डेय, सिपाही सौरभ राजपूत शामिल रहे।

इसी क्रम में दरोगा इमरान खान की टीम ने खनिज अधिनियम के वारंटी राधेश्याम पुत्र हीरालाल निवासी

गोण्डा को गिरफ्तार किया है। टीम में दरोगा इमरान खान, सिपाही अजीजुद्दीन शामिल रहे।इसी क्रम में प्रभारी निरीक्षक राजापुर भास्कर मिश्रा की अगुवाई में दरोगा कृष्ण देव मिश्रा की टीम ने चोरी माल बरामद के मामले में सुनील सिंह पुत्र रामसंवारे निवासी नादिन कुर्मियान को गिरफ्तार किया है। टीम में दरोगा कृष्ण देव मिश्रा, सिपाही अंकित शुक्ला शामिल रहे। वहीं प्रभारी निरीक्षक बहिलपुरवा गुलाबचन्द्र सोनकर की अगुवाई में दरोगा रविन्द्र कटियार की टीम ने गैंगस्टर एक्ट के वारंटी बुद्धराज सिंह पुत्र शिवसागर सिंह व सोनू उर्फ महिलु पुत्र भुरैया सविता निवासी ऐंचवारा को गिरफ्तार किया है। टीम में दरोगा रविन्द्र कुमार कटियार, सिपाही एहसान अली शामिल रहे।

वृद्ध दम्पत्ति को राजस्व टीम व पुलिस ने दिलवाया कब्जा

मिजार्मुराद। कछवांरोड क्षेत्र के चित्रसेनपुर गांव निवासी लालचन्द उर्फ मुल्लू ने एसडीएम कोर्ट में वरिष्ठ नागरिक भरण पोषण कल्याण अधिनियम के तहत मुकदमा दर्ज कर बताया की प्रार्थी के 6 पुत्र है सबका शादी विवाह कर दिए है। एक मकान है जिसमे प्रार्थी पत्नी कलावती के साथ रहता है व कमरे भूसा व सामग्री रखा है। 6 पुत्रो में चार तो कभी कभार देखभाल कर देते है लेकिन दो पुत्र कभी कुछ नही बल्कि दो पुत्र तारा शंकर व रमाशंकर ने दोनों कमरो में ताला मार दिया उनकी पत्नियां भी गाली गलौज देती रहती है।

कोर्ट के आदेश पर शुक्रवार को भरण पोषण अधिकारी विनोद विश्वकर्मा, नायब तहसीलदार प्राची केशरवानी, मिजार्मुराद थानाध्यक्ष दीपक कुमार

रनावत, राजस्व निरीक्षक संजय श्रीवास्तव, उमाशंकर सिंह व लेखपाल सुधीर त्रिपाठी व थाने के फोर्स की मौजूदगी में मकान में बन्द ताले को तोड़वाकर उ.प्र.माता पिता वरिष्ठ नागरिक भरण पोषण अधिनयम 2007 की धारा 7 के अंतर्गत वृद्ध दम्पत्ति को मकान के कमरे व खेती की जमीन पर कब्जा दिलवाया कर 6 पुत्रों तारा शंकर, रमाशंकर, उमा शंकर, विजय कुमार, चन्द्रबली, सूर्य बलि को सम्पूर्ण सम्पत्ति से बेदखली की करवाई से गांव में हड़कम्प मचा रहा।गांव में हर तरफ एक चर्चा रही की माता पिता के साथ दुर्व्यहार करना भारी पड़ गया।

जगद्गुरु के शिष्य ने महिला को भगाया, परिजन बोले जादू-टोना से पत्नी को फंसाया

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। छतरपुर में बीते माह कथा में आए जगद्गुरू धीरेंद्र आचार्य के शिष्य को शहर की एक शादीशुदा महिला से प्रेम हो गया। शिष्य इसके बाद महिला को लेकर भाग गया। महिला के एक बच्चा भी है।

रविवार को महिला के परिजनों ने कोतवाली में शिकायत दी है। पुलिस ने महिला को बरामद किया है। परिजनों ने शिष्य पर आरोप लगाया कि उसने महिला पर जादू-टोना करके प्रेम जाल में फंसाया है। दूसरी तरफ महिला ने कहा कि वह खुद से ही आचार्य के शिष्य के साथ गई है। वह पति के साथ नहीं रहना चाहती है।

बीते माह छतरपुर के गौरीशंकर मंदिर में धर्मनगरी चित्रकूट के जगद्गुरू धीरेंद्र आचार्य कथा करने आए थे। उनके शिष्य नरोत्तमदास उर्फ उत्तम दुबे भी साथ था। इस बीच नरोत्तमदास का छतरपुर की 27 साल की महिला से प्रेम-प्रसंग हो गया। नरोत्तम दास महिला को अपने साथ भगा ले गया। महिला की शादी 2014 में अनगौर निवासी राहुल तिवारी के साथ हुई थी। उसका मायका छतरपुर में है।

राहुल तिवारी ने बताया कि छतरपुर में कथा दौरान जगद्गुरू से दम्पति ने दीक्षा ली थी। इसी बीच नरोत्तमदास उसकी पत्नी के संपर्क में आ गया। उसने जादू-टोना कर पत्नी को फंसा लिया। छह अप्रैल को नरोत्तमदास महिला को लेकर भाग गया था। महिला की गुमशुदगी सिटी कोतवाली में दर्ज हुई थी। पुलिस ने पांच मई को महिला को बरामद किया है।

मामले में छतरपुर एसपी अमित सांघी ने बताया कि महिला को ढूंढ लिया गया है। महिला ने कहा है कि पति मारता और परेशान करता था। इसीलिए वह पति के साथ नहीं रहना चाहती। फिलहाल मामले की जांच जारी है।

सांसद का संबंधी होने का लाभ उठा रहा प्रधान, बिना कार्यों के कराया लाखों का भुगतान

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। मानिकपुर ब्लाक के ग्राम पंचायत बसिला में मनरेगा योजना से कराए कार्यों में बडे पैमाने पर धांधली बरती गई है। बिना रेशियो पूरा किये लाखों का भुगतान करा लिया गया है। ग्राम पंचायत में बिना रेशियो पूरा किये 83.43 लाख का भुगतान कराया गया है।

रविवार को शासन के निर्देशों की खुलेआम धज्जियां उड़ाने का समाचार मिला है। बताया गया कि जय मां विध्यवासिनी व जय मां शारदा ट्रेडर्स के नाम पर प्रधान व सचिव की मिलीभगत से मनमानी ढंग से भुगतान हुआ है। सूत्रों ने बताया कि सांसद आरके सिंह पटेल का रिश्तेदार बताते हुए ठेकेदार का भुगतान किया गया है।

उपायुक्त श्रम एवं रोजगार धर्मजीत सिंह सांसद के इशारे पर कार्य कर रहे हैं। इसके चलते सांसद के सगे संबंधी होने के चलते भुगतान हुआ है। सरकार के जिम्मेदार प्रतिनिधि व उनके सगे संबंधी शासन के नियमों की धज्जियां उडा रहे हैं। ग्रामीणों ने जिला प्रशासन से मामले को संज्ञान में लेकर जांच की मांग की है।

जिला निर्वाचन अधिकारी ने स्ट्रांग रूम का किया निरीक्षण

बलिया। जिला निर्वाचन अधिकारी रवीन्द्र कुमार ने ने तीखमपुर स्थित मंडी में बनने वाले सदर तहसील के स्ट्रांग रूमो का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने उप जिलाधिकारी प्रशांत नायक से इस संबंध में जानकारी हासिल की। उप जिलाधिकारी ने बताया कि स्ट्रांग रूम की साफ-सफाई का काम चल रहा है। निर्वाचन अधिकारी ने निर्देश दिया कि जिन कमरों को स्ट्रांग रूम बनाया जाएगा उनमें खिड़की और दरवाजे को ठीक से देख लिया जाए अगर किसी प्रकार की टूट-फूट हो तो उसकी मरम्मत का कार्य कराया जाए। उन्होंने कहा कि नगर निकाय का चुनाव बैलेट पेपर पर होने वाला है अतः इसके मद्देनजर स्ट्रांग रूमों को सुरक्षित रखने की जिम्मेदारी और बढ़ जाती है।

कन्नौज: कलेक्ट्रेट परिसर के समीप छात्रा से छेड़छाड़, बेसुध छात्रा किसी तरह घर पहुंची

कन्नौज। शाम के समय कोचिंग पढ़ कर घर लौट रही छात्रा के साथ बाइक सवार कुछ युवकों ने छेड़छाड़ कर दी। अपने मोबाइल से छात्रा की फोटो खींची और वीडियो बनाए।

छात्रा ने विरोध किया तो गाली-गलौज करने लगे। पीछे से आ रहे क्लासमेट ने शोहदों का विरोध किया तो भीड़ जुटने लगी। ऐसे में तीनों शोहदे बाइक पर सवार होकर भाग गए।

सदर कोतवाली की सरायमीरा चौकी क्षेत्र के शिवाजी नगर मोहल्ले में आसपास गांव की तमाम छात्राएं कोचिंग पढ़ने के लिए आती हैं। इन छात्राओं का पीछा करते हुए अक्सर बाइक सवार शोहदे भी पहुंच जाते हैं, जोकि आते-जाते वक्त हाईस्कूल और इंटर में पढ़ने वाली छात्राओं से छींटाकशी करते हैं।

शुक्रवार की शाम शिवाजी नगर से कोचिंग पढ़कर वापस लौट रही एक छात्रा के साथ बाइक सवार 3 युवकों ने हाई सेक्विरिटी जोन इलाके में छेड़छाड़ कर दी। इन गुंडो से परेशान छात्रा बेहोश होकर गिर पड़ी तभी इन शोहदों ने छात्रा की फोटो अपने मोबाइल में खींच ली। फिर उसका वीडियो बनाने लग गए। जिसको लेकर छात्रा से युवकों की झड़प होने लगी। इस बीच कोचिंग पढ़कर छात्रा का एक क्लासमेट वहां पहुंच गया। उसने शोहदों का विरोध किया तो वे मारपीट और धक्कामुक्की करने पर आमादा हो गए। हंगामा और धक्कामुक्की होती देख छात्रा कलक्ट्रेट परिसर में जज आवास के पास बेसुध होकर गिर पड़ी। वहां से निकल रहे राहगीरों ने देखा तो युवकों का वीडियो बनाने लग गए। ऐसे में भीड़ बढ़ती देख तीनों शोहदे बाइक पर सवार होकर भाग निकले।

डरी-सहमी छात्रा किसी तरह अपने घर पहुंची। राहगीरों ने बताया कि जिस जगह पर छात्रा से छेड़छाड़ हुई, वहां जज आवास बने हुए हैं। कुछ ही दूरी पर एडीएम और एसडीएम के आवास बने हैं। एडीएम आवास के बाहर सुरक्षा कर्मी मौजूद रहते हैं, लेकिन घटना के वक्त कोई भी सुरक्षा कर्मी छात्रा की मदद को नहीं आया। युवकों के भागने के पास डरी-सहमी छात्रा किसी तरह अपने घर पहुंची।

प्रिंटिंग प्रेस संचालकों द्वारा दिशा निदेर्शों का उल्लंघन करने पर होगी कड़ी कार्यवाही : डीएम

एटा। जिला मजिस्ट्रेट/जिला निर्वाचन अधिकारी अंकित कुमार अग्रवाल ने जनपद के समस्त समस्त प्रिन्टिंग प्रेस संचालकों को सूचित किया है कि मा0 आयोग द्वारा नगरीय निकाय सामान्य निर्वाचन-2023 हेतु जनपद में अवस्थित 04-नगर पालिका परिषदों एवं 06-नगर पंचायतों के अध्यक्षों एवं सदस्यों का निर्वाचन द्वितीय चरण में निर्धारित करते हुये कार्यक्रम की घोषणा की गई है, साथ ही आदर्श आचार संहिता प्रभावी है। इस दौरान राजनैतिक दलों के प्रत्याशियों द्वारा भिन्न-भिन्न प्रकार के पोस्टर, पैम्पलेट आदि छपवाये जाते हैं। डीएम ने जिले के समस्त प्रिन्टिंग प्रेस संचालकों को निर्देशित किया है कि किसी भी प्रकार के पोस्टर, पैम्पलेट को मुद्रित किये जाने से पूर्व प्रिन्टिंग प्रेस संचालक द्वारा छपवाने वाले (प्रत्याशी/अन्य) कापूराब्यौरा (नाम, पता, मोबाइल नं0-एवं पहचान) अनिवार्य रूप से अपने से संबंधित अभिलेखों में सुरक्षित रखेंगे। मुद्रित की गयी प्रत्येक सामग्री पर मुद्रक, प्रकाशक का नाम एवं मुद्रित की गयी कुल प्रतियां तथा मुद्रक, प्रकाशक का पूरा पता स्पष्ट रूप से छपा होना अनिवार्य है।

मुद्रित किये जाने के तीन दिवस के अन्दर मुद्रित की गयी सामग्री की चार प्रति के साथ वरिष्ठ कोषाधिकारी, प्रभारी अधिकारी व्यय लेखा नगरीय निकाय सामान्य निर्वाचन-2023 एटा में अनिवार्य रूप से उपलब्ध कराना सुनिश्चित करें।

आतंकी संगठन खालिस्तान कमांडो फोर्स के मुखिया परमजीत सिंह पंजवड़ की हत्या

लाहौर। आतंकी संगठन खालिस्तान कमांडो फोर्स के मुखिया परमजीत सिंह पंजवड़ की लाहौर में हत्या कर दी गयी। वह भारत में भी कई मामलों में वांछित था। जानकारी के मुताबिक आतंकी संगठन खालिस्तान कमांडो फोर्स का मुखिया परमजीत सिंह पंजवड़ लाहौर के नेसपैक कालोनी स्थित अकबर चौक टाउनशिप क्षेत्र में रह रहा था। वह लाहौर के जौहर कस्बे की सनफ्लावर सोसायटी में मौजूद था। शनिवार सुबह छह बजे दो बाइक सवार आए और पंजवड़ पर ताबड़तोड़ गोलियां चलाई। जिससे पंजवड़ की मौके पर ही मौत हो गयी। दोनों हमलावर हत्या कर मौके से फरार हो गए।

पंजवड़ 1990 से पाकिस्तान में रह रहा था। वहां उसने अपना नाम मलिक सरदार सिंह रखा हुआ था। पाकिस्तान में उसने खालिस्तान कमांडो फोर्स के मुखिया की कुर्सी संभाल रखी थी। पंजाब में 57 वर्षीय परमजीत पंजवड़ पर देशद्रोह, हत्या, साजिश, हथियारों की तस्करी व आतंकवाद को पुनर्जीवित करने के मामले दर्ज हैं। पंजवड़ पूर्व सेना प्रमुख जनरल एएस वैद्य की हत्या और लुधियाना में देश की सबसे बड़ी बैंक डकैती के मामले में भी वांछित रह चुका है। 1986 में खालिस्तान कमांडो फोर्स में शामिल होने से पहले उसने केंद्रीय सहकारी बैंक में काम किया। 1990 के दशक में खालिस्तान कमांडो फोर्स का कार्यभार संभालने के तुरंत बाद पंजवड़ पाकिस्तान भाग गया। भारत की खुफिया एजेंसी का मानना है कि उसकी पत्नी और बच्चे जर्मनी में रह रहे थे। परमजीत पंजवड़ के खिलाफ भारत में दस मुकदमे दर्ज हैं, जिनमें हत्या के सात और टाडा के दो मामले शामिल हैं।

आस्ट्रेलियाई मॉडल सिएना वियर का 23 साल की उम्र में निधन, घुड़सवारी के दौरान हुई थीं घायल

मेलबर्न/मुंबई। मिस यूनिवर्स 2022 की फाइनलिस्ट रही आस्ट्रेलियाई मॉडल सिएना वियर का आज निधन हो गया। उन्होंने 23 साल की उम्र में आखिरी सांस ली। पिछले महीने ऑस्ट्रेलिया में घुड़सवारी के दौरान उनका एक्सीडेंट हो गया था। इसके बाद उन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया था, जहां इलाज के दौरान उनकी मौत हो गई। रिपोर्ट्स के मुताबिक 2 अप्रैल को सिएना वियर सिडनी के विंडसर पोलो ग्राउंड्स में घुड़सवारी कर रही थीं। उस समय घोड़े से गिरकर वह गंभीर रूप से घायल हो गई थीं। उसके बाद उन्हें वेस्टमीड अस्पताल ले जाया गया। वहां उन्हें लाइफ सपोर्ट सिस्टम पर रखा गया था। वह पिछले कुछ हफ्तों से लाइफ सपोर्ट सिस्टम पर थीं और आज (6 मई को) उन्होंने दम तोड़ दिया। सिएना को घोड़ों की सवारी करना बहुत पसंद था। घुड़सवारी उनका जुनून था। सिएना मिस यूनिवर्स 2022 की फाइनलिस्ट थीं। उन्होंने सिडनी विश्वविद्यालय से अंग्रेजी साहित्य और मनोविज्ञान में बीए किया है। अब मॉडल आगे की पढ़ाई के लिए यूके जाने की सोच रही थीं। मॉडलिंग के क्षेत्र में वह हमेशा एक्सपेरिमेंट करती दिखीं। सिएना के निधन के बाद से ही फैंस सोशल मीडिया के जरिए अपना शोक व्यक्त कर रहे हैं। सिएना एक बेहतरीन मॉडल के तौर पर जानी जाती थीं। उसने मॉडलिंग क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। उन्होंने अपनी खूबसूरती से अपने प्रशंसकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। सिएना उन मॉडलों में शुमार थीं, जो कम समय में लोकप्रिय हो गए। सिएना बहुत आगे जाना चाहती थीं। उन्होंने यह सफर भी शुरू किया था। सिएना सोशल मीडिया पर सक्रिय थीं और उनके काफी प्रशंसक हैं। सिएना के निधन की खबर के बाद से उनके प्रशंसकों में शोक की लहर है।

मास्को में कार बम विस्फोट में पुतिन समर्थक लेखक जाखड़ प्रिलेपिन घायल, चालक की मौत

मास्को। रूस और यूक्रेन के बीच चल रहे संघर्ष का अंत अभी तक नजर नहीं आ रहा है। यूक्रेन और रूस एक दूसरे पर खूब हमले कर रहे हैं। वहीं एक प्रमुख रूसी राष्ट्रवादी लेखक, जाखड़ प्रिलेपिन शनिवार को एक कार बम विस्फोट में घायल हो गए। हमले में उनके ड्राइवर की मौत हो गई, जाखड़ को पुतिन समर्थक माना जाता है। जांचकर्ताओं ने इस मामले में एक संदिग्ध को हिरासत में लिया है। उसने पूछताछ में बताया कि वह यूक्रेन के लिए काम कर रहा था, इसके बाद रूसी अधिकारियों ने तुरंत यूक्रेन और पश्चिम पर हमले का आरोप लगाया। एक मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक, 47 साल के जाखड़ प्रिलेपिन यूक्रेन में क्रेमलिन की सैन्य कार्रवाई के समर्थक रहे हैं।

रूसी आंतरिक मामलों के मंत्रालय के अनुसार, विस्फोट रूस के पश्चिमी निजनी नोवगोरोड क्षेत्र के एक गाँव में हुआ। द वाशिंगटन पोस्ट ने रूसी मीडिया के हवाले से बताया कि कार के नीचे एक विस्फोटक उपकरण रखा गया था। रूसी आंतरिक मामलों के मंत्रालय ने कहा कि जाखड़ प्रिलेपिन को चोटों के बाद अस्पताल ले जाया गया। जाखड़ प्रिलेपिन के प्रेस सचिव ने जानकारी दी कि वह ठीक हो रहे हैं। उसने कहा कि वास्तव में क्या हुआ यह फिलहाल स्पष्ट नहीं है।

नेपाल में हिमस्खलन, जड़ी-बूटी यार्सागुंबा लेने पहाड़ियों पर गए तीन लोगों की मौत

काठमांडू। नेपाल में हिमस्खलन से 3 लोगों की मौत हो गई है। जुमला जिले के रहने वाले यह तीनों लोग विश्व की बहुमूल्य जड़ी-बूटी यार्सागुंबा लेने के लिए पश्चिम नेपाल के मुगु गए थे। शनिवार को लौटते समय यह लोग हिमस्खलन की चपेट में आ गए।

मुगू के मुख्य जिला अधिकारी मोहन बहादुर थापा ने बताया कि यह स्थान जिला मुख्यालय से तीन दिन की पैदल दूरी पर है। मुगु नेपाल के सबसे कठिन जिलों में से एक है। इस मौसम में बड़ी संख्या में लोग जड़ी-बूटी यार्सागुंबा लेने के लिए हिमालय क्षेत्र में पहुंचते हैं। तीनों लोग भारी बोझ लेकर लौटते समय शनिवार को हिमस्खलन की चपेट में आ गए, जिससे इनकी मौत हो गई।

उन्होंने बताया कि शवों को

लाने का प्रयास किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि जिला मुख्यालय से दूरी होने के कारण शवों को लाना मुश्किल हो रहा है। इसी तरह दार्चुला में पिछले सप्ताह हिमस्खलन के बाद लापता दो लोगों की तलाश अभी भी जारी है। दार्चुला जिला प्रशासन कार्यालय के सूचना अधिकारी प्रदीप सिंह धामी ने बताया कि 3 लोगों के शव उनके परिजनों को सौंप दिये गये हैं और दो लापता लोगों की तलाश की जा रही है। यहां मई के पहले सप्ताह में बारिश और हिमपात हुआ था। नेपाल के विभिन्न जिलों के हिमालयी क्षेत्रों में यार्सागुंबा तलाश करने वाले दुर्घटनाओं के शिकार हुए हैं। नेपाल की पहाड़ियों पर यार्सागुंबा पाई जाती है। पहाड़ों पर ठंड कम होने के बाद पहाड़ी जिले के लोग अपने परिवार के साथ यार्सागुंबा बूटी को बीनने के लिए निकलते हैं और तीन से चार माह तक पहाड़ियों में कड़ी मशक्कत कर उसे एकत्र करते हैं। यह जड़ी-बूटी इस जिले के अधिकांश लोगों के रोजगार का साधन भी है। यहां के निवासी इस जड़ी-बूटी को बेचकर अपना परिवार चलाते हैं।

नेपाल की प्रचंड सरकार में एक और मंत्री की नियुक्ति

काठमांडू। नेपाल में पुष्प कमल दाहाल (प्रचंड) सरकार में एक और मंत्री को शामिल किया गया है। आज राष्ट्रपति रामचंद्र पौडेल ने प्रधानमंत्री की सिफारिश पर सुरेंद्रराज आचार्य को महिला, बाल और वरिष्ठ नागरिक मंत्री नियुक्त किया है। कपिलवस्तु क्षेत्र संख्या 2 से 22 नवंबर 2022 को हुए चुनाव में जीत हासिल करने वाले आचार्य राष्ट्रपति पौडेल से करीब हैं। अब नेपाली कांग्रेस से नौ मंत्री सरकार में हैं। कैबिनेट में प्रधानमंत्री प्रचंड, दो उपपधानमंत्री और दो राज्यमंत्री समेत कुल 23 मंत्री हैं।

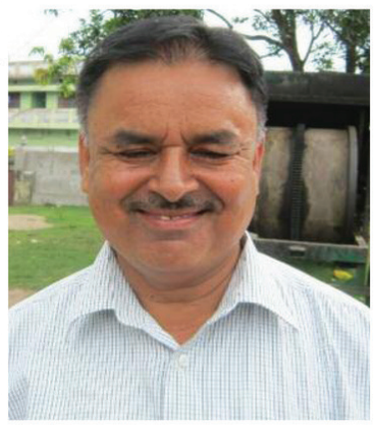

इससे पहले नेपाल समाजवादी पार्टी के नेता महिंद्रा यादव यह मंत्रालय संभाल रहे थे। यादव को जल आपूर्ति मंत्रालय की जिम्मेदारी दी गई है। प्रचंड ने नौवीं बार मंत्रिमंडल का विस्तार और फेरबदल किया है। अब केवल एक मंत्रालय प्रचंड संभाल रहे हैं। जनता समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष उपेंद्र यादव को उनका मंत्रालय दिया जा सकता है।

कांगो में भारी बारिश, कई जगह बाढ़, 200 लोगों की मौत

किंशासा। पूर्वी डीआरसी कांगो के दक्षिण किवु प्रांत में भारी बारिश की वजह से कई जगह बाढ़ आ गई। प्राकृतिक आपदा ने जनजीवन को अस्त-व्यस्त कर दिया है। अब तक 200 से ज्यादा लोगों के मरने की सूचना है।

दक्षिण किवु प्रांत के कालेहे क्षेत्र में हुई बारिश के बाद नदियां उफान पर हैं। इससे बुशुशु और न्यामुकुबी गांव डूब गए हैं। दक्षिण किवु के गवर्नर थियो न्गवाबिद्जे कासी ने मरने वालों की संख्या 176 बताई है। साथ ही यह भी कहा कि बड़ी संख्या में लोग भी लापता हैं।

लोकल सिविल सोसाइटी के मेंबर कसोल मार्टिन ने दावा किया कि कांगो में बाढ़ प्रभावित क्षेत्र से अब तक 227 शव बरामद किए गए हैं। मार्टिन ने कहा कि स्थिति बहुत खराब हैं। स्कूल और

अस्पताल बह गए हैं। रवांडा से सटे दक्षिण किवु प्रांत में बाढ़ और भूस्खलन असामान्य घटना नहीं हैं। इस सप्ताह रवांडा में भारी बारिश से बाढ़ और भूस्खलन हुआ था। इसमें 130 लोगों की मौत हुई थी और 5,000 से अधिक घर नष्ट हो गए थे।

टेक्सस के शॉपिंग माल में खूनखराबा, बंदूकधारी हमलावर भी मारा गया

वाशिंगटन। अमेरिका के टेक्सस के एलन प्रीमियम आउटलेट्स मॉल (शॉपिंग मॉल) में भीषण गोलीबारी हुई है। कुछ मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक इस खूनखराबे में पांच लोगों की मौत हो गई। आधिकारिक तौर पर इस घटना में नौ लोगों के घायल होने की सूचना दी गई है। घायलों में कुछ बच्चे भी शामिल हैं। पुलिस ने हमलावर बंदूकधारी को मारकर मॉल को खाली करा लिया है। यह जानकारी एलन पुलिस विभाग ने दी है।

एलन पुलिस विभाग ने कहा है घायलों को स्थानीय अस्पताल में भर्ती कराया गया है। एलन प्रीमियम आउटलेट मॉल डलास के उत्तर में लगभग 25 मील की दूरी पर है। अमेरिकी सांसद कीथ सेल्फ ने मॉल में हुई गोलीबारी की घटना पर दुख

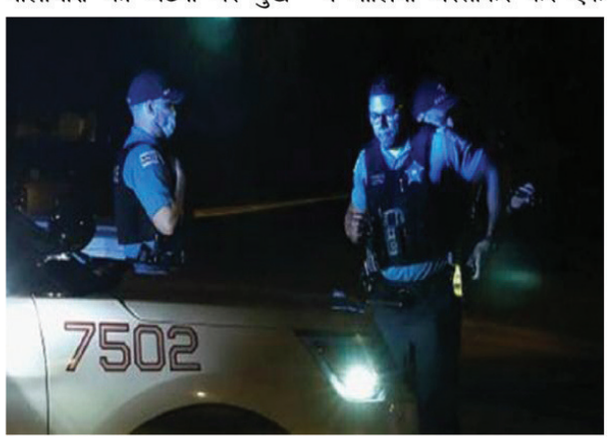

जताया है। सनद रहे, इससे पहले 03 मई को अटलांटा में चिकित्सा केंद्र की 11वीं मंजिल पर प्रतीक्षालय में एक बंदूकधारी ने गोलियां बरसाकर कर एक व्यक्ति को मौत के घाट उतार दिया था। शूटर ने पांच लोगों को गोली मारी थी।

सम्राट चार्ल्स तृतीय का राज्याभिषेक, पहना 360 साल पुराना ताज

लंदन। ब्रिटेन के सम्राट चार्ल्स तृतीय का राज्याभिषेक लंदन स्थित वेस्टमिंस्टर एब्बे में समारोह पूर्वक किया गया। उन्हें सम्राट का और उनकी पत्नी कैमिला को साम्राज्ञी का ताज पहनाया गया। कैंटरबरी के आर्कबिशप जस्टिन वेल्बी ने सम्राट को 360 साल पुराना ताज पहनाया।

पिछले साल सितंबर में ब्रिटेन की महारानी एलिजाबेथ द्वितीय के निधन के बाद ब्रिटिश सिंहासन पर पहुंचे 74 वर्षीय सम्राट चार्ल्स और उनकी पत्नी साम्राज्ञी कैमिला की ताजपोशी शनिवार को वेस्टमिंस्टर एब्बे में आयोजित भव्य धार्मिक समारोह में की गयी। ऐसा आयोजन 70 साल के अंतराल के बाद हुआ है। इससे पहले ऐसी शाही परंपरा आखिरी बार 1953 में महारानी एलिजाबेथ द्वितीय की ताजपोशी के लिए देखी गई थी। ताजपोशी के बाद सम्राट ने ब्रिटेन के लोगों पर %न्याय और दया% के साथ शासन करने और एक ऐसे वातावरण को बढ़ावा देने की शपथ ली, जहां सभी धर्मों और विश्वासों के लोग स्वतंत्र रूप से रह सकें। शपथ के दौरान उन्होंने कहा, मैं राज करने नहीं, सेवा करने के लिए आया हूं।

ताजपोशी के समय सम्राट को सत्रहवीं सदी का ठोस सोने से बना संत एडवर्ड का ताज पहनाया गया। ये बहुत भारी है और इसका इस्तेमाल केवल राज्याभिषेक के समय होता है। यह ताज 1661 में

बनाया गया था। सम्राट चार्ल्स तृतीय की दिवंगत मां महारानी एलिजाबेथ द्वितीय ने जून 1953 में अपनी ताजपोशी के दौरान इसे पहना था। सम्राट चार्ल्स तृतीय के नाना सम्राट जॉर्ज षष्ठम ने मई 1937 में अपनी ताजपोशी के दौरान भी यही ताज पहना था। साम्राज्ञी कैमिला को महारानी मैरी का ताज पहनाया गया। इस ताज को इस विशेष अवसर के लिए टावर ऑफ लंदन से निकालकर महारानी कैमिला के सिर के हिसाब से ढाला गया। राज्याभिषेक के दौरान इस दौरान हिंदू, सिख, मुस्लिम, बौद्ध और यहूदी समुदायों के धार्मिक नेता एवं प्रतिनिधि भी एबे मौजूद रहे।कैंटरबरी के आर्कबिशप द्वारा की गई प्रार्थना के बाद ब्रिटेन के प्रधानमंत्री ऋषि सुनक ने निर्धारित परंपरा के अनुसार 'कुलुस्सियों की बाइबिल' पुस्तक से संदेश पढ़ा।

इस भव्य समारोह में दुनिया भर से दो हजार से अधिक मेहमानों ने हिस्सा लिया। अमेरिका की प्रथम महिला जिल बाइडन ने अमेरिका का प्रतिनिधित्व किया और चीन के उपराष्ट्रपति हान झेंग ने बीजिंग की ओर से भाग लिया। कनाडा के प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो और भारत के उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़, पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शाहबाज शरीफ, फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुअल मैक्रों, ऑस्ट्रेलियाई राष्ट्रपति एंथनी अल्बनीज भी इस दौरान मौजूद रहे।

'पूरी दुनिया में हो रही पाक की बेइज्जती' : भारत दौरे पर घिरे बिलावल तो इमरान खान ने कही ये बात

शंघाई। शंघाई सहयोग सम्मेलन में विदेश मंत्रियों की बैठक में आतंकवाद के मुद्दे पर घिरने के बाद बिलावल भुट्टो को अब पाकिस्तान की विपक्षी पार्टी ने भी नहीं बख्शा है। खासकर पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ (पीटीआई) के प्रमुख इमरान हथियार बनाकर राजनयिक तौर पर एक-दूसरे को घेरने से बचना चाहिए।हालांकि, उनके इस बयान पर भारत के विदेश मंत्री एस जयशंकर ने उनकी क्लास लगा दी थी। जयशंकर ने कहा कि बिलावल का बयान काफी दिलचस्प है, क्योंकि इससे उन्होंने गलती से अपनी मानसिकता का खुलासा कर दिया है। किसी चीज को हथियार कब और कैसे बनाया

जा सकता है? तभी जब कोई इस कार्य को एकदम वैध मान कर इसे कर रहा हो। आज कोई कह रहा है कि आप आतंकवाद को हथियार बना रहे हैं, तो साफ है कि उन्हें लगता है कि आतंकवाद वैध है और उसे हथियार नहीं बनाना चाहिए।

बिलावल का मजाक उड़ने पर क्या बोले इमरान?

पाकिस्तान के विदेश मंत्री का इस तरह से भारत में मजाक बनने पर इमरान खान ने उन पर तंज कसा। लाहौर में सुप्रीम कोर्ट और चीफ जस्टिस उमर बंदियाल के समर्थन में पीटीआई की एक रैली संबोधित करते हुए उन्होंने कहा, ÷पाकिस्तान की पूरी दुनिया में बेइज्जती हो रही है। हम बिलावल से पूछते हैं कि अगर आप पूरी दुनिया का दौरा कर रहे हैं तो हमें भी तो बताइए।' इमरान ने पूछा कि आखिर बिलावल को भारत दौरे से क्या फायदा मिला? उन्होंने इस दौरे पर हुए खर्च पर सवाल उठाते हुए कहा कि क्या आप किसी दौरे पर जाने से पहले पूछते हैं कि आप किस पर यह पैसे खर्च कर रहे हैं। इससे क्या फायदा या नुकसान होगा?

बखमुत में रूसी सेना का नेतृत्व कर रहे वैगनर चीफ पीछे हटे, रमजान कादिरोव को जिम्मेदारी देने को कहा

मास्को। रूस और यूक्रेन युद्ध के बीच पुतिन की सेना में फूट पड़ती दिखाई दे रही है। रूसी अर्धसैनिक समूह वैगनर के प्रमुख येवगेनी प्रिगोजिन ने बखमुत के हॉटस्पॉट शहर में अपने पद को चेचन नेता रमजान कादिरोव को सौंप देने को कहा।

येवगेनी प्रिगोजिन ने रक्षा मंत्री को लिखे पत्र में कहा, 10 मई से पहले बखमुत और उसकी परिधि में वैगनर अर्धसैनिक इकाइयों के पदों के हस्तांतरण के संबंध में एक युद्ध आदेश जारी किया जाए और कादिरोव को उनका पद सौंप दिया जाए। उन्होंने पिछले डेढ़ दशक से रूस के मुस्लिम-बहुसंख्यक गणराज्य चेचन्या पर शासन किया है। उन्होंने रूसी रक्षा मंत्रालय पर अक्टूबर 2022 में आवश्यक गोला-बारूद का केवल 32 प्रतिशत देने का आरोप लगाया था। वैगनर लड़ाके बखमुत की लड़ाई का नेतृत्व कर रहे हैं, जिसके दौरान प्रिगोजिन और पारंपरिक सेना के बीच

धमकी

वैगनर ग्रुप ने धमकी दी थी कि बाखमुत में रूसी सैनिकों को

प्रतिद्वंद्विता सतह पर आ गई है। शुक्रवार को, वैगनर नेता ने शोइगू और जनरल स्टाफ के प्रमुख वालेरी गेरासिमोव पर हमला करने वाले कई डरावने वीडियो को सबके सामने लाने की धमकी दी।

जंग से हटने की दी थी

अकेला छोड़ देंगे। जिसके बाद रूसी सेना की टेंशन बढ़ गई। वैगनर ग्रुप का कहना है कि मॉस्को से पर्याप्त मात्रा में गोला-बारुद की आपूर्ति न होने की वजह से बाखमुत में बड़ी संख्या में सैनिक मारे जा रहे हैं। यूक्रेन के पूर्वी इलाकों में जबरदस्त जंग जारी है। युद्ध के दौरान रूस का यूक्रेन की सेना करारा जवाब दे रही हैं।

जासूसी कानून में चीन ने किया बदलाव, विदेशी कंपनियों के लिए बढ़ा जोखिम

बीजिंग। चीन की रबर-स्टैंप संद ने पिछले हफ्ते देश के जासूसी कानून में बदलाव पारित किया, इस कदम से विदेशी कंपनियों और देश में काम करने वाले व्यक्तियों के लिए कानूनी जोखिम पैदा हो सकता है। कानून राष्ट्रीय सुरक्षा से संबंधित समझी जाने वाली किसी भी जानकारी के हस्तांतरण पर प्रतिबंध लगाता है। डीडब्ल्यू ने सरकारी समाचार एजेंसी शिन्हुआ के हवाले से लिखा है कि संशोधित कानून, जो जुलाई में लागू होगा। यह जासूसी की परिभाषा का विस्तार करता है और राज्य के अंगों या महत्वपूर्ण सूचना बुनियादी ढांचे के खिलाफ साइबर हमलों को शामिल करेगा।

एफएसडीसी की बैठक सोमवार को, अर्थव्यवस्था की स्थिति की समीक्षा करेंगी सीतारमण

नई दिल्ली। केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण वित्तीय स्थिरता एवं विकास परिषद (एफएसडीसी) की सोमवार, 08 मई को आयोजित बैठक में शामिल होंगी। इस दौरान वह वैश्विक और घरेलू चुनौतियों के बीच अर्थव्यवस्था की स्थिति की समीक्षा भी करेंगी। सूत्रों ने रविवार को बताया कि वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण 08 मई को एफएसडीसी की आयोजित 27वीं बैठक की अध्यक्षता करेंगी। इस उच्चस्तरीय बैठक में रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया (आरबीआई) के गवर्नर शक्तिकांत दास समेत वित्तीय क्षेत्र के सभी नियामक हिस्सा लेंगे। एफएसडीसी क्षेत्रीय नियामकों का एक शीर्ष निकाय है, जिसकी अध्यक्षता केंद्रीय वित्त मंत्री करती हैं।इस बैठक में मौजूदा वैश्विक और घरेलू आर्थिक हालात और वित्तीय स्थिरता के मुद्दों की समीक्षा की जाएगी। इस दौरान अमेरिका में सिलिकॉन वैली बैंक और सिग्नेचर बैंक की विफलता और क्रेडिट सुइस के सामने नकदी संकट के मद्देनजर बैंकिंग और एनबीएफसी क्षेत्र पर भी विचार किया जाएगा। इसके साथ एफएसडीसी समावेशी आर्थिक वृद्धि हासिल करने के लिए इससे पहले किए गए उपायों की समीक्षा भी करेगी।

उल्लेखनीय है कि वित्त वर्ष 2023-24 के लिए 45 लाख करोड़ रुपये का बजट पारित होने के बाद एफएसडीसी की यह पहली बैठक होगी। मौजूदा वित्त वर्ष के बजट में 10,00,961 करोड़ रुपये के परिव्यय के साथ पूंजीगत व्यय पर अधिक जोर दिया गया है। वहीं, रिजर्व बैंक ने हाल में द्विमासिक नीतिगत समीक्षा बैठक में चालू वित्त वर्ष के लिए आर्थिक वृद्धि दर के अनुमान को 6.4 फीसदी से बढ़ाकर 6.5 फीसदी कर दिया है।

अखंड भारत संदेश
स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक
स्वामी श्री योगी सत्यम् फॉर
योग सत्संग समिति
द्वारा विपिन इण्टरप्राइजेज
1/6C माधव कुंज
कटरा प्रयागराज से मुद्रित
एवं
क्रियायोग आश्रम एण्ड अनुसंधान संस्थान
झूंसी, प्रयागराज उत्तर प्रदेश
से प्रकाशित।
सम्पादक
स्वामी श्री योगी सत्यम्
RNI No: UPHIN/2001/09025
ऑफिस मो.:
9565333000
Email:-
akhandbharatsandesh1@gmail.com
सभी विवादों का न्याय क्षेत्र
प्रयागराज होगा।